RNI-MPHIN/2005/14721
Po-Malwa Div/244/2023-25
Desp. 02 March, 2023

अंक – 9 (मासिक) वर्ष – 18 मार्च, 2023 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

शक्ति-भक्ति का मङ्गल मास

श्री माहेश्वरी मेलापक

वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2023
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

बात हम सबकी
सुने हर शनिवार

Contemporary Range of Home Essentials, Crafted by Experts

RR

FANS | LIGHTING
APPLIANCES | SWITCHES

Toll Free : 18001032676 | Email : customercare@rrglobal.com | Website: www.rrglobal.com | Follow us

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

▸▸ अंक-09 ▸▸ मार्च 2023 ▸▸ वर्ष-18

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
डॉ. आभा माहेश्वरी, अलीगढ़

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)
गोविन्द मालू (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
- PNB A/c. No. : 0459002100043471
  IFSC- PUNB0045900
- ICICI A/c. No. : 030005001198
  IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 900/- for Three years
Rs. 3500/- for Life Time (12 Years)

विचार क्रान्ति

संवत्सर का संदेश, राजा बने माली

नवसंवत्सर का सम्बन्ध केवल वर्ष परिवर्तन से ही नहीं है, बल्कि सुशासन से भी है। यह अपने समग्र अर्थ में सृजन, सत्ता और सुशासन का प्रतीक है। जिसका अर्थ है राजा और प्रजा अपने-अपने कर्त्तव्यों का राष्ट्रहित में समान और संयुक्त रूप से निर्वहन करें। राजा अपने राज्य में साधुओं का उत्थान करने और दुष्टों का नाश करने के लिए प्रतिबद्ध हो। तभी सुशासन स्थापित होता है।

हिन्दू पञ्चाङ्ग की मान्यता में आकाश स्थित नवग्रहों में से कोई एक प्रत्येक संवत्सर का राजा तो कोई दूसरा मंत्री तक होता है। इसी आधार पर ज्योतिष के विद्वान भावी संवत्सर में शुभ-अशुभ की भविष्यवाणी करते हैं, जो संकेत है कि जैसा राजा होगा, वैसी ही प्रजा होगी।

हिन्दू मान्यताओं में चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से नवसंवत्सर का शुभारम्भ होता है। पौराणिक विश्वास है कि इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी। भगवान श्रीराम और महाभारत युद्ध में विजय के बाद युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। उज्जयिनी के विश्वविख्यात न्यायप्रिय सम्राट विक्रमादित्य ने आततायी शत्रुओं पर विजय के उपलक्ष्य में इसी दिन से विक्रम संवत् का शंखनाद किया था। ये सभी सन्दर्भ सृजन, रामराज, धर्मराज और न्यायराज के प्रतीक है, जो बताते हैं कि हर आने वाले वर्ष में सृजन, धर्म और न्याय की राज व्यवस्था उत्तरोत्तर उन्नत और सुदृढ़ होना चाहिए। तभी नवसंवत्सर का परिवर्तन सार्थक है।

महाभारत के आदिपर्व की कथा कहती है कि देवराज इंद्र ने पूर्वकाल में पृथ्वी पालक राजा उपरिचर को बाँस की एक छड़ी भेंट की थी। राजा ने उसे भूमि पर गाड़ा और एक वर्ष उपरांत नववर्ष प्रतिपदा पर उसे श्रृंगारित कर ऊँचे स्थान पर स्थापित कर उसका पूजन किया। हंस रूप इन्द्र ने इस पूजा को स्वीकारा और तभी से वह छड़ी लोक में धर्मपूर्वक राज्य का पालन करने वाली राजव्यवस्था की प्रतीक बन गई। छड़ी के आभूषणों से अलंकृत होकर उच्च स्थान पर धरने और इन्द्र के पूजन स्वीकारने का प्रतीक है कि जिस देश में राजा सही न्याय करता है और प्रजा देशभक्त होती है, वह समृद्ध होकर ऊँचाई की ओर अग्रसर होता है। तब देवता तक उस देश से उपकृत होने की अपेक्षा करते हैं। इस अर्थ में गुड़ी पड़वा की गुड़ी समृद्ध, सुसंस्कृत, अलंकृत और धर्मसम्मत राज्य की प्रतीक और प्रतिनिधि है।

शांतिपर्व की कथा कहती है कि हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठने के बाद जब युधिष्ठिर शरशय्याशायी पितामह भीष्म से राजधर्म का उपदेश लेने गए, तब भीष्म ने कहा था, 'मालाकारोपमो राजन् भव माऽऽङ्गारिकोपमः। तथायुक्तश्चिरं राज्यं भोक्तं शक्ष्यसि पालयन्।।' अर्थात् हे युधिष्ठिर! तुम माली के समान बनो, कोयला बनाने वाले के समान नहीं। ऐसा करके प्रजापालन में तत्पर रहकर तुम दीर्घकाल तक राज्य का उपभोग कर सकोगे।

साधो! माली वृक्षों को काटता नहीं अपितु सींचकर सहेजता है और फिर फूल-फल आदि की सम्पदा कर के रूप में प्राप्त कर प्रजा को सुख की छाँव और राष्ट्र को समृद्धि और सुरक्षा की सशक्त जड़ देता है। इसके उलट कोयला बनाने वाला वृक्षों को सदा के लिए जलाकर राख कर देता है।

यह नवसंवत्सर विश्व के प्रत्येक देश में राजा को माली बनने की ओर अभिप्रेरित करें, इसी शुभकामना के साथ नववर्ष मङ्गलमय हो।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते....

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" यह वाक्य प्रायः आप सुनते हैं, नारी के सम्मान व महत्व के संदर्भ में। वेद वाक्य का सामान्य अर्थ भी हमारे मानस में अमिट सा अंकित हो गया है। बावजूद यदि हम नारी संवेदना को लेकर अभी-भी कोई स्पंदन महसूस नहीं करते, तो इसके पीछे का एक बड़ा सच समाज में नारी की भूमिका का मौजूदा स्वरूप भी है। पूज्य से भोग्या हो चुकी नारी के स्वरूप को मौजूदा वातावरण में और अधिक धक्का लगा है, जबकि तथाकथित समानता और स्वतंत्रता के नाम पर नारी की स्वच्छंदता आलोचना के घेरे में है। नारी स्वतंत्रता के नारे ने आज की नारी को कोई संबल नहीं दिया बल्कि वह और अधिक शोषण तथा हनन का शिकार हुई है। इस समय को वे महिलाएं भली प्रकार जानती हैं, जो इस छद्म स्वतंत्रता की शिकार हुई हैं। अब उनके सामने जीवन 'संघर्ष' बन कर रह गया है।

जरूरत इस बात की है कि नारी की छवि को पुनः स्थापित करने के लिए हमें उन महिला व्यक्तित्वों को समाज के बीच उभारना होगा, जिन्होंने समाज के सामने अपने व्यक्तित्व से ऐसी मिसाल रखी, जिसे समाज सलाम करता है। श्री माहेश्वरी टाइम्स का यह अंक उन्हीं महिलाओं को समर्पित है। इस अंक में आप समाज की ऐसी महिलाओं से परिचित होंगे, जिनका विराट व्यक्तित्व पुरुष प्रधानता को बौना साबित करने को काफी है। निश्चित तौर से उन्होंने अपने अंदर छिपी इस शक्ति को उभारा जिसे वेद ने पूज्य कहा है। उस क्षमता और सामर्थ्य का सदुपयोग किया है, जो ईश्वर ने उन्हें प्रदान की है। उन्होंने यह साबित किया कि नारी केवल पुरुष के समकक्ष ही नहीं उससे आगे है, तभी वह पूज्य है। वह अनंत और असीम संभावनाओं से भरी हुई है। बशर्ते उन्हें सही दिशा और लक्ष्य मिले। जब यह होगा तो देश व समाज का विकास तो निश्चित ही है जिसे वेद वाक्य में "रमन्ते तत्र देवताः" कहा गया है।

यही कारण है कि नारी को लेकर समाज हमेशा फिक्रमंद रहा। इसी प्रयास में नारी के चारों तरफ लक्ष्मण रेखाएं खींची गईं और यह भी प्रचारित किया गया कि यदि नारी ने इन्हें लांघा तो रावण घात लगाए बैठा है। रावण का डर दिखाकर महिला को जब-जब कैद किया गया, तब-तब उसने लक्ष्मण रेखा लांघी है। जब-जब उसे विश्वास की स्वतंत्रता का संबल दिया गया, तब-तब उसने अपनी ऊर्जा से वह कर दिखाया, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज नए समाज में नारी और समाज के बीच का आपसी विश्वास कायम रखने की सबसे बड़ी चुनौती है। खासकर उन महिलाओं को जो कुछ करना चाहती हैं। जब तक समाज उनके प्रति आश्वस्त नहीं होगा, तब तक अविश्वास का वातावरण नहीं बदलेगा।

भारतीय संस्कृति का प्रतीक हमारा सनातन नववर्ष विक्रम संवत् 2080 आगामी 22 मार्च से प्रारम्भ हो रहा है। अतः नववर्ष-नवसवंत्सर की सभी को हार्दिक शुभकामनाऐं और भगवान महेश से यह कामना है कि यह वर्ष आपके लिये अत्यंत मंगलमय हो। आशा है आप भी नवसंवत का उत्साहपूर्वक अभिनंदन से करेंगे। सभी से विनम्र अपील, आगामी नववर्ष का अभिनंदन अवश्य करें, क्योंकि हम ही हमारी संस्कृति का सम्मान नहीं करेंगे, तो दूसरा कौन करेगा?

श्री माहेश्वरी टाईम्स का यह महिला विशेषांक आपके हाथों में है, समाज की विशिष्ट हलचलों के भी साथ। आशा है, आपको यह अंक अवश्य ही पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य ही अवगत कराऐं।

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

साहित्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान दे रही, डॉ. आभा माहेश्वरी का जन्म बिजनौर जिले के नजीबाबाद में 1 जुलाई 1949 को स्वर्गीय सेठ श्री राजाराम एवं श्रीमती फूलवतीदेवी के यहाँ हुआ। सन् 1967 में बी.ए. में आगरा विश्वविद्यालय में हिन्दी में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर तत्कालीन राज्यपाल श्री राजगोपालाचार्य के कर कमलों से मैडल द्वारा सम्मानित हुई। इसके पश्चात् इन्होंने 1977 में 'आधुनिक कविता में विद्रोह के स्वर' विषय पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उच्च शिक्षित होने के बावजूद डॉ. माहेश्वरी परिवार के प्रति समर्पित रहीं, लेकिन उनकी साहित्य साधन भी साथ-साथ चलती रहीं। वर्ष 1977 में प्रथम कविता 'दहेज का अभिशाप' आगरा की एक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। विधि की विडम्बना से इनके पति कोरोना से अचानक ही अनंत की यात्रा पर चले गये। लेकिन आपने अपनी मन की पीड़ा को काव्य-संग्रह 'जीवन-आभा' का रूप दे डाला। उनकी ना रुकने वाली कलम ने एक और काव्य- संग्रह 'जीवन-अनंत' व एक लघुकथा संग्रह 'जीवन- आह्लादिनि' का लेखन भी किया। आपके काव्य संग्रह 'जीवन-आभा' को उत्तरांचल के 'चन्द्रज्योति सम्मान' से सम्मानित किया गया है। उत्तराखण्ड की 'साहित्यांचल संस्था' के स्वर्ण जयंती वर्ष में 'चन्द्र ज्योति सम्मान' से सम्मानित किया गया है। नजीबाबाद की 'अभिव्यक्ति' संस्था ने भी उन्हें सम्मानित किया। इन्होंने अपना काव्य संग्रह प्रधानमंत्री श्री मोदी को भी भेंट किया।

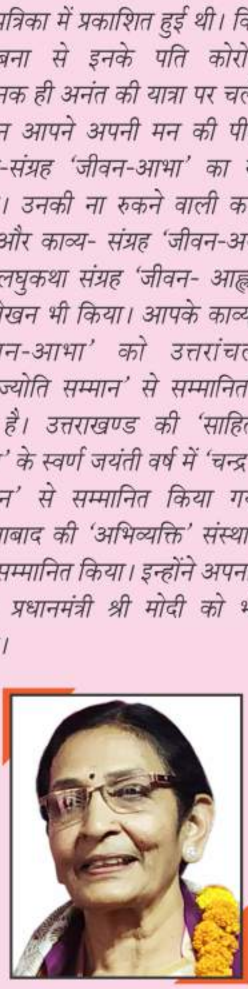

तेरे भाल पर करूं तिलक...

'हिमगिरि के उत्तुंग शिखर से
चहुँ ओर ये ध्वनि गुंजा रही है,
देखो! ये आज की नारी है
जो कहाँ से कहाँ जा रही है।
हे गतिशील! कर्मठनारी- तेरा वंदन-अभिनंदन
तेरे भाल पर करूँ तिलक-नारी हैं सुगंधित चंदन
शतशत बार नमन माननीय नारी को
उसका है अभिनंदन अभिनंदन अभिनंदन
बार बार वंदन, बार बार वंदन?'

उक्त मेरे भाव नारी सशक्तिकरण पर हैं, जो मैंने अपने जीवन साथी को कोरोनाकाल में खोने के पश्चात उकेरे थे।

आज भगवान महेश एवं माँ पार्वती के अखंड आशीर्वाद से नारियाँ जीवन के हर क्षेत्र में अग्रणी हो रही हैं। घर की चार दीवारी से बाहर आकर ऊँचाइयों को छूने में प्रयास रत है, आज की विदूषी नारी। नारी सशक्त है, साथ ही कोमल हृदया भी। बाह्य क्षेत्र में सक्षम होने के साथ अपने घर में भी सामंजस्य बिठाकर रखती है-तभी वह उन्मुक्त गगन में मुखरित हो उड़ पाती है। आज महिला सशक्तिकरण के युग में महिलाओं को उन्नति के पंख लगाकर उड़ान भरने के लिए अपने घर को भी सद्भाव के सद्गुण से सुशोभित करना होगा। नारी को बनाना होगा, अपने को सुदृढ़ निश्चयी, अवसाद के क्षणों में भी संयमित मन। मेरा तो सभी नारियों से यही कहना है कि जीवन में कितनी भी विषमताऐं आयें-कभी अपना मनोबल क्षीण ना करना और उन हर्ष या विषाद के क्षणों में आपके अंदर जो भी प्रतिभा है-उसको विकसित करने की छोटी-सी कोशिश अवश्य करें- ईश्वर आपकी सहायता अवश्य करेंगे आपके सच्चे साथी बनकर।

ये बात तो हुई नारी की उन्नति की। अब बात करते हैं, उसकी चहुंमुखी उन्नति की। कोई भी उन्नति मात्र भौतिक रूप में अधूरी ही है, जब तक उसका सांस्कृतिक विकास भी साथ-साथ न हो। याद रखें हर उन्नति के बावजूद नारी की जो नैसर्गिक विशेषता है, एक बेटी, एक बहन, एक पत्नी और एक नारी आदि रूपों में उन कर्त्तव्यों का श्रेष्ठ निर्वहन ही उसकी पूर्ण उन्नति है। इसके बिना शेष सभी उन्नति अधूरी है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह अपनी उन्नति में अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो जाऐं। अपितु वह असमंजस्य के साथ उन्नति के पथ पर आगे बढ़े। याद रखें प्रकृति ने जो परिवर्तन की क्षमता नारी में दी है, वैसी कहीं अन्यत्र सम्भव ही नहीं। अतः आप अपने परिवार से शिकायत रखने की बजाए उसे नयी परिस्थिति के अनुरूप दायित्व निर्वहन में सहयोगी के रूप में सकारात्मक रूप से तैयार करें। याद रखें नारी में किसी को भी बदल देने की वह प्रकृति प्रदत्त क्षमता है, जो किसी ओर में नहीं होती।

अंत में पुनः यही कहना चाहूँगी कि चाहे पुरूष हो या नारी किसी की भी उन्नति संस्कारों के बिना अधुरी ही है। याद रखें हम भगवान महेश की संतान हैं और हमें भगवान महेश के आशीर्वाद से सेवा, सहयोग व सदाचार के ऐसे अद्भुत संस्कार मिले हैं, जो हमारी चहुंमुखी उन्नति में सहायक रहे हैं। अतः अपने इन सामाजिक संस्कारों को कभी भी प्रभावित न होने दें। यह वह शक्ति है, जो आपको उन्नति के पथ पर संतुलन कायम रखने में सदा सहयोग बनेगी।

डॉ. आभा माहेश्वरी, अलीगढ़
अतिथि सम्पादक

श्री नौसरा माताजी

इस स्तम्भ में आपको हम माहेश्वरी समाज की पूज्य कुलदेवियों के बारे में विस्तृत जानकारी दे रहे हैं। इस अंक में प्रस्तुत है-श्री नौसरा माताजी के स्थान की जानकारी। श्री नौसरा माताजी माहेश्वरी जाति की अजमेरा, पलोड़, चित्रांङ्ग आदि खाँप की कुलदेवी हैं। अन्य कई जातियों वाले भी इन्हें श्रद्धा से पूजते हैं।

■ टीम SMT

नौसरा माताजी का मंदिर पुष्करारण्य नाग पर्वत मालाओं के बीच में अजमेर के समीप स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए मुख्य द्वार में प्रवेश कर सीढ़ी मार्ग से जाना पड़ता है। यहाँ श्री माताजी की प्रतिमा नवदुर्गा रूप में विराजित है। यह मंदिर 1200 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। मान्यता के अनुसार विक्रम संवत् 800 में मराठाओं ने नवदुर्गा मंदिर की स्थापना की थी और मंदिर की व्यवस्था हेतु 2000 बीघा जमीन दान दी थी। यह मंदिर क्षेत्र में एक विशिष्ट सिद्ध स्थान माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार 50-60 वर्ष पूर्व यहाँ दर्शन करने आने वालों के साथ विधर्मी लूटपाट करते थे। भक्तों की पुकार पर माता स्वयं उनकी रक्षा करती थी।

विशेष आयोजन

प्रत्येक रविवार के दिन यहाँ श्रद्धालुओं की अपार भीड़ लगती है। नवरात्रि में पूरे नौ दिन तक कलश स्थापना के साथ विशेष धार्मिक आयोजन होते हैं। नवरात्रि की नवमी को विशाल भण्डारा होता है जिसमें सभी जातियों के श्रद्धालु योगदान देते हैं। प्रतिदिन प्रातः 4 बजे मंगल आरती व रात्रि में शयन आरती होती है। पुजारी सहित दस कर्मचारी सवैतनिक रूप से यहाँ नियुक्त हैं।

कैसे पहुँचें

श्री नौसरा माताजी का मंदिर अजमेर रेलवे स्टेशन से 5 किमी दूर है। अजमेर रेलवे लाईन से जुड़ा होने से यहाँ पहुँचाने के लिए रेल मार्ग व सड़क मार्ग दोनों की ही सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

राजदीदी ने बताऐ सकारात्मकता के सूत्र

पश्चिमी म.प्र. प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन ने किया प्रेरक व्याख्यान का आयोजन

उज्जैन। कोई बुराई करे तो उसे नजरअंदाज करें। उसकी नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदलें। जो दूसरों को देंगे वही आपको वापस मिलेगा। किसी को हर्ट करेंगे तो हर्ट होंगे। जब हर्ट हों तो आत्मचिंतन करें।

मोटिवेशनल स्पीकर राजेश्वरी मोदी जू (राज दीदी) ने झालरिया मठ में आयोजित प्रेरक कार्यक्रम में उक्त विचार व्यक्त किये। वे पश्चिमी मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के आयोजन में जीवन जीने का नया अंदाज सीखा रही थीं। उन्होंने कहा जीवन दो जोन में बंटा है। ए यानी सकारात्मकता और बी यानी नकारात्मकता। ए जोन में पॉजीटिव अच्छा, सुख, पुण्य रहेंगे जबकि बी जोन में निगेटिव, बुरा, दुःख, पाप, अशांति। अब यह आप पर निर्भर है कि आप किस जोन में रहना चाहते हैं। उन्होंने दोनों जोन के बारे में कहानियों के माध्यम से समझाया। उन्होंने घर के सदस्यों, सास-बहू, जेठानी-देवरानी से लेकर दोस्तों के बीच की निगेटिविटी को दूर करने की चर्चा की। स्वयं के बारे में चर्चा करते हुए राजदीदी ने कहा- बचपन में मां नहीं थी। पिताजी ने दादाजी के साथ पालन-पोषण किया। साल में एक बार बोनस मिलने पर नए कपड़े आते थे। सरकारी स्कूल में पढ़ाई की। पिताजी ने हमें गीता प्रेस गोरखपुर का साहित्य ही पढ़ने को दिया। कभी कहीं से फिल्मी पत्रिका लेकर आ जाते तो उसे फाड़ देते थे।

11 हजार लोग प्रतिदिन सुनते हैं दीदी के व्याख्यान

राजेश्वरी दीदी तीन दशक से मोटिवेशनल स्पीकर हैं। वे देश-विदेश में अब तक 500 से ज्यादा व्याख्यान दे चुकी हैं। 25 साल पहले नारायण रेकी संस्थान की स्थापना की। प्रतिदिन 11 हजार लोग उनके लाइव व्याख्यान सुनते हैं। राज दीदी का संगठन अध्यक्ष वीणा सोमानी ने स्वागत किया। कार्यक्रम की संयोजक सरोज सोनी और संगीता भूतड़ा थीं। आभार संगठन सचिव उषा सोडानी ने व्यक्त किया। इस आयोजन के प्रायोजक थे पैकेजिग ग्रुप, उज्जैन। इस अवसर पर विशेष रूप से आनंद बांगड, मंगला बांगड, रेणु गट्टानी, राजेन्द्र गट्टानी (भोपाल), राजेश सोमानी, धनश्री जी, विद्या जी, सुनिता जी, रेखा लड्ढा, सरिता बाहेती तथा श्री माहेश्वरी टाईम्स संपादक पुष्कर बाहेती उपस्थित थे।

बदलाव के लिए यह टिप्स दिए

- विचार, वाणी, व्यवहार में बदलाव लाएं।
- माता-पिता का आदर-सम्मान करें, हो सके तो उनका चरणामृत लें।
- काम करें, कोई प्रशंसा करें तो ठीक, बुराई करे तो भी ठीक।
- कर्म, जो भी किए हैं, वह भोगने हैं। दुःख-सुख केवल कर्मों का फल।
- कोई आपके खिलाफ विष उगले तो उसे विश में बदलें। निगेटिव एनर्जी को पॉजीटिव एनर्जी में बदलें।

टवाणी को लाइफ अचीवमेंट अवार्ड

मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)। कृष्णचंद टवाणी प्रधान संपादक ''अध्यात्म अमृत'' पत्रिका महासचिव ज्ञानमंदिर, किशनगढ़ को हिमालय और हिन्दुस्तान मीडिया नेटवर्क जन जागरणता अभियान वीरभद्र, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड) द्वारा लाईफ अचीवमेंट सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अंतर्गत गत 30 सितम्बर 2022 को आयोजित 19 वें राष्ट्रीय ज्योतिष आयुष-वैकल्पिक चिकित्सा, मीडिया, साहित्य, कला, फिल्म महासम्मेलन एवं सम्मान समारोह में श्री टवाणी को अध्यात्म, लेखन एवं प्रकाशन क्षेत्र में दी गई सेवाओं, उत्कृष्ट कार्यों एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

तुलसी विवाह का हुआ आयोजन

भीलवाड़ा। श्री माहेश्वरी समाज श्री चारभुजा जी मंदिर ट्रस्ट के बड़ा मंदिर के चारभुजा नाथ ने तुलसी संग विवाह रचाया। तुलसी विवाह के उपलक्ष में बड़े मंदिर से चांदी के बेवाण में चारभुजा नाथ विराजमान होकर मंदिर से बारात निकली। ट्रस्ट अध्यक्ष उदयलाल समदानी, मंत्री छीतरमल डाड, संरक्षक चंद्रसिंह तोषनीवाल, रामेश्वर तोषनीवाल, सत्यनारायण सोमानी, बद्री लाल बाग, प्रमोद डाड, रामस्वरूप तोषनीवाल, बालमुकुंद राठी, राजेंद्र नुवाल, अनिल झवर, शिव तोषनीवाल, रमेश जागेटिया कैलाश मारोठिया, संजय जागेटिया, प्रहलाद भदादा, अरविंद चेचाणी आदि सपरिवार उपस्थित थे।

महेश चौक व मार्ग का अनावरण

मालेगाँव। शहर में मनपा से प्राप्त आदेश के अनुसार माहेश्वरी समाज द्वारा महेश मार्ग और महेश चौक का अनावरण दादाभाऊ भूसे (पालक मंत्री-नासिक जिला) के हाथों गत 5 फरवरी को करवाया गया। कार्यक्रम में समाज के सभी बुजुर्ग, महिला, युवा और स्थानीय रहवासी उपस्थित रहे। प्रमुख अतिथि के तौर पर जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश सारड़ा, मंगला परवाल, शमा जाजू और ज्योति भोसले भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन मधु काबरा और आशीष झंवर ने किया।

बायोडाटा अवलोकन कार्यक्रम सम्पन्न

भीलवाड़ा। मेवाड़ माहेश्वरी मंडल मुंबई के तत्वावधान में मेवाड़ माहेश्वरी मंडल भीलवाड़ा द्वारा गत 5 फ़रवरी को 13 वां मासिक परिचय-पत्रक (बायोडाटा) अवलोकन कार्यक्रम माहेश्वरी भवन, नागोरी गार्डन, भीलवाड़ा में आयोजित हुआ। रमेश राठी, रमेश बाहेती, केदार जागेटिया, कैलाश बाहेती, सत्यनारायण बांगड़, कैलाश सामरिया, सुनील मूंदड़ा, रमेश राठी, श्रवण समदानी,ओम प्रकाश मालू व अशोक चांडक ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम प्रारंभ किया। कार्यक्रम में भीलवाड़ा जिला व अन्य जिलों के समाजजन ने भाग लिया और बायोडाटा का अवलोकन किया। श्रवण समदानी ने बताया कि भीलवाड़ा मुख्यालय के अतिरिक्त चित्तौड़, जयपुर, उदयपुर, कोटा, मुंबई, सूरत, अहमदाबाद में भी शाखाएं प्रारंभ की गई हैं जिसमें सभी बायोडाटा भीलवाड़ा मुख्यालय की तर्ज पर ही उपलब्ध हैं।

डाड ने किया रामेश्वर भवन का अवलोकन

भीलवाड़ा। मध्यप्रदेश केडर के सीनियर आईएएस कमिश्नर के रूप में पिछडा एवं अल्पसंख्यक वर्ग कल्याण विभाग मे कार्यरत भीलवाड़ा जिले के मंगरोप ग्राम के निवासी गोपाल डाड ने एक दिवसीय भीलवाड़ा प्रवास के दौरान श्रीनगर माहेश्वरी सभा के हरनी महादेव रोड स्थित नवनिर्मित रामेश्वरम भवन का अवलोकन कर श्री माहेश्वरी समाज श्री चारभुजा जी मंदिर ट्रस्ट के बड़े मंदिर में चारभुजा के दर्शन कर विभिन्न धार्मिक गतिविधियों की जानकारी ली। ट्रस्टियों एवं समाज के वरिष्ठजनों से मुलाकात कर सामाजिक विषयों पर चर्चा भी की। श्री माहेश्वरी समाज बड़ा मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टियो द्वारा स्मृति चिन्ह भेंटकर मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट अध्यक्ष उदयलाल समदानी, मंत्री छितरमल डाड, संरक्षक चंद्रसिंह तोषनीवाल, रामेश्वर तोषनीवाल बद्रीलाल डाड, बालमुकुंद राठी, रामस्वरूप तोषनीवाल, प्रहलाद भदादा सहित सभी ट्रस्टी उपस्थित थे।

कर्म से ही मनुष्य के भविष्य का निर्माण होता है इसलिये प्रतिदिन ऐसा कर्म करें जिससे भविष्य उज्जवल हो।

राठी को गोल्ड ट्रॉफी पुरस्कार

मुम्बई। विद्या वायर्स प्राइवेट लिमिटेड के सीएमडी और अखिल भारतीय महेश्वरी महासभा कार्यसमिति के सदस्य श्याम सुंदर राठी को निर्यात प्रदर्शन के लिए ईईपीसी (पश्चिमी क्षेत्र) से गोल्ड ट्रॉफी पुरस्कार अनुप्रिया पटेल-वाणिज्य राज्य मंत्री द्वारा मुम्बई में आयोजित एक समारोह में दिया गया। विद्या वायर्स गुजरात में पिछले 40 से अधिक वर्षों से तांबे के तारों और पट्टियों का निर्माण करती है और नियमित रूप से दुनिया के सभी हिस्सों में अपने उत्पादों का निर्यात करती है। श्री राठी उद्योगों की बेहतरी के लिए सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। वे विंडिंग वायर्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया और फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन ऑफ स्मॉल इंडस्ट्रीज ऑफ इंडिया के अध्यक्ष भी रहे हैं। उनके बेटे, विद्या वायर्स के एमडी शैलेश राठी हाल ही में विट्ठल उद्योगनगर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, आनंद के सचिव के रूप में चुने गए।

विवाह की सालगिरह पर रक्तदान

सीहोर। माहेश्वरी समाज के सीहोर नगर के पूर्व सचिव नवीन सोनी ने गत 02 फरवरी को सीहोर ब्लड बैंक पर 50 वीं बार रक्तदान कर 23 वीं विवाह वर्षगांठ पर यादगार सेवा दिवस मनाया गया। ब्लड बैंक परिवार द्वारा पुष्पहार से दम्पत्ति का स्वागत किया गया। 23 वीं शादी की वर्षगांठ पर 50 वीं बार रक्तदान उन्होंने अपनी जीवन साथी रुपाली सोनी की उपस्थिति में सीहोर ब्लड बैंक जाकर किया।

वक्त हंसाता है, वक्त रूलाता है, वक्त ही बहुत कुछ सिखाता है वक्त की कीमत जो पहचान ले, वही मंजिल को पाता है। खो देता है जो वक्त को जीवन भर पछताता है क्योंकि... गुजरा हुआ वक्त कभी लौटकर नहीं आता है।

आमजन के कल्याण का बजट

इंदौर। बजट प्रतिक्रिया में आर्थिक मामलों के जानकार पूर्व उपाध्यक्ष खनिज विकास निगम और भाजपा नेता गोविन्द मालू ने कहा कि केंद्र शासन का बजट रोजगार, कामगार, काश्तकार, सेहतकार, कलाकार का बजट होकर गरीब कल्याण, महिला कल्याण, किसान कल्याण की उदघोषणा वाला राहत वाला बजट है। गरीब, मध्यमवर्गीय के लिए वित्त मंत्री ने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष राहत की कई घोषणाएं की है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए महिला सम्मान बचत पत्र योजना और आयकर में बहुप्रतीक्षित छूटें देकर बजट को आम आदमी हितैषी और बहुआयामी बनाया है।

नवीन कार्यकारिणी ने ली पद की शपथ

फरिदाबाद। प्रादेशिक हरियाणा पंजाब जम्मू कश्मीर चंडीगढ़ माहेश्वरी महिला संगठन की वर्ष 2023-25 की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश से 40 सदस्याओं की उपस्थिति रही। मुख्य अतिथि मंजू एवं रंगनाथ झंवर चुनाव मुख्य पर्यवेक्षक उत्तरांचल उपाध्यक्ष किरण लड्ढा उपस्थित थीं। फरीदाबाद संगठन की तरफ से सांस्कृतिक कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुतियां हुई। प्रादेशिक अध्यक्षा सुमन जाजू एवं फरीदाबाद अध्यक्षा पुष्पा झंवर द्वारा सभी का स्वागत किया गया। नवनिर्वाचित टीम का साफे पहनाकर सम्मान किया गया। किरण लड्ढा द्वारा सभी को पद की शपथ दिलवाई गई। किरण लड्ढा द्वारा गत सत्र की सफलता के लिए सुमन जाजू एवं सीमा मूंदड़ा को शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

साबू बने माहेश्वरी सभा अध्यक्ष

राँची। स्थानीय श्री माहेश्वरी सभा के चुनाव में अध्यक्ष सर्वसम्मति से किशन साबू चुने गये। इसके बाद कार्यकारी मंडल का गठन हुआ। इसमें नरेन्द्र लाखोटिया पुनः सचिव चुने गये। उपाध्यक्ष गोवर्धन भाला, कोषाध्यक्ष मनमोहन मोहता, संगठन सह कार्यालय मंत्री प्रभातकुमार साबू एवं बंसत लाखोटिया पुनः सह सचिव चुने गये। महासभा कार्यकरी मंडल के लिए अशोक कुमार साबू, बासुदेव लाल भाला, दीपक कुमार मारु, नरेन्द्र लाखोटिया एवं शिवशंकर साबू तथा प्रदेश कार्यकारी मंडल सदस्य हेतु अनिल कुमार साबू, बंसत लाखोटिया, गौतम राठी, मनोज कल्याणी, मनमोहन मोहता, प्रकाश काबरा, राजकुमार मारु एवं किशोर जाजू (रामगढ़) को सदस्य चुना गया।

जिला सभा के पदाधिकारी निर्वाचित

संदीप धूत

अनिल मूंदड़ा

सूरत। जिला माहेश्वरी सभा के अंतर्गत सभी 12 क्षेत्रीय सभा के सप्तम सत्र हेतु कार्यकारी मंडल, कार्यसमिति, क्षेत्रीय सभा के पदाधिकारी, कार्यकारी मंडल और जिला पदाधिकारियों के चुनाव सम्पन्न हुए। जिला अध्यक्ष संदीप धूत, मंत्री अनिल मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष अतिन बाहेती और संगठन मंत्री पवन बजाज निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष पद पर अशोक कोठारी, विजय भट्टड, मुकेश कोठारी, परसराम मुंदड़ा व संयुक्त मंत्री पद पर रवि राठी, ललित चांडक, महेश खटोड व टीकम असावा निर्वाचित हुये। यह सम्पूर्ण चुनावी प्रक्रिया चुनाव अधिकारी मदनमोहन पेड़ीवाल, प्रदीप तोतला, रामावतार जाजू की देख - रेख में संपन्न हुई।

गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

लखनऊ। माहेश्वरी समाज कार्यकारणी सदस्यों एवं समाज के परिवारों द्वारा गणतंत्र दिवस एवं सरस्वती पूजन का कार्यक्रम 26 जनवरी को माहेश्वरी धर्मशाला अमीनाबाद में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी सदस्यों द्वारा मिलकर धर्मशाला को गणतंत्र दिवस एवं सरस्वती पूजन के रंग में सजाया गया। सर्वप्रथम महेश वंदना सरस्वती पूजन एवं राष्ट्रीय गान द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई एवं सभी सदस्यों द्वारा देशभक्ति के गीत गाए गए। कार्यक्रम के अंत में समाज के अध्यक्ष, मंत्री कार्यकारिणी पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

महिला संगठन के चुनाव सम्पन्न

इन्दू चाण्डक

सुषमा कोठारी

वाराणसी। माहेश्वरी महिला संगठन-वाराणसी के आगामी सत्र के चुनाव गत 3 फरवरी 2023 को स्थानीय माहेश्वरी भवन के सभागार में सम्पन्न हुए। इसमें सत्र 2023 के लिए अध्यक्ष पद पर इन्दू चाण्डक को निर्विरोध निर्वाचित किया गया। नवीन कार्यकारिणी में मंत्री-सुषमा कोठारी, कोषाध्यक्ष-वीणा मूंदड़ा, संगठन मंत्री-मधु मल्ल, उपाध्यक्ष-पूनम सोमानी, उपमंत्री-अनिता डागा, सांस्कृतिक मंत्री-सुधा डागा व भावना लड्ढा तथा प्रचार मंत्री-सुनीता राठी चुनी गयी। कार्यकारिणी सदस्यों का चयन भी हुआ।

शपथ विधि के साथ साधारण सभा संपन्न

सूरत। गत 29 जनवरी को माहेश्वरी सेवा सदन आई माता रोड सूरत में सूरत जिला माहेश्वरी सभा की वार्षिक साधारण सभा एवं नवनिर्वाचित पदाधिकारियो का शपथ विधि समारोह संपन्न हुआ। इसमें सूरत जिला सभा की सभी 12 क्षेत्रीय सभाओं की वार्षिक रिपोर्ट उनके संयुक्त मंत्री द्वारा प्रस्तुत की गई। उसके बाद मुख्य चुनाव अधिकारी मदनमोहन पेड़ीवाल ने शांतिपूर्ण वातावरण में चुनाव कराने के लिए सभी समाज जनों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर क्षेत्रीय सभाओं के चुनाव निर्विरोध हुए। इसी तरह सूरत जिला सभा के चुनाव भी निर्विरोध करवाने के लिए समाज के अग्रणी बंधुओं से आगे आकर चेष्टा करने की अपील की। इसके पश्चात क्षेत्रीय व जिला के नवनिर्वाचित पदाधिकारी अध्यक्ष संदीप धूत मंत्री, अनिल मूंदड़ा कोषाध्यक्ष, अतिन बाहेती संगठन मंत्री, पवन बजाज उपाध्यक्ष पद पर अशोक कोठारी, विजय भट्टड, मुकेश कोठारी, परसराम मुंदड़ा व सयुक्तमंत्री पद पर रवि राठी, ललित चांडक, महेश खटोड व टीकम असावा सहित सभी क्षेत्रीय सभाओं के पदाधिकारियो का दुपट्टे द्वारा स्वागत कर बिना किसी द्वेश भाव से कार्य करने की दिलाई गई। कार्यक्रम का मंच संचालन विक्रम भूतड़ा ने किया व सभी ने मिलकर सहभोज का आनंद लिया।

भूतड़ा समिति ने किया बुजुर्गों का सम्मान

जोधपुर। अखिल भारतीय भूतड़ा समिति की आमसभा, बुजुर्गों का सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह माहेश्वरी जन उपयोगी भवन रातानाडा जोधपुर में आयोजित किया गया। समिति के अध्यक्ष सुरेशचंद्र भूतड़ा ने बताया कि मुख्य अतिथि डॉ. दिनेश भूतड़ा- एसोसिएट प्रोफेसर एमआईटी यूनिवर्सिटी पुणे एवं विशेष अतिथि उद्योगपति एवं समाजसेवी भंवरलाल भूतड़ा थे। अतिथियों का स्वागत माला, शॉल तथा मेमोंटो देकर किया गया। कार्यक्रम में सुबह भोजन के पश्चात पूर्व घोषित प्रतियोगिता महिला प्रमुख श्रीमती आनंद भूतड़ा, कुमुद भूतडा, विजयलक्ष्मी भूतडा व उनकी टीम द्वारा सभी वर्गों में महिला-पुरुष और बच्चों की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। वरिष्ठजनों में श्रीमती एवं श्री कन्हैया लाल भूतड़ा, श्रीमती एवं श्री जगदीश भूतड़ा का सम्मान किया गया। इसी कड़ी में कन्या जन्म पर कन्या व उनके माता-पिता का सम्मान किया गया। शैक्षणिक पुरुस्कार में समाजसेवी भंवरलाल मोहनलाल भूतड़ा की तरफ से विद्यार्थियों को मोमेंटो और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। एम. डी. भूतडा ने सभी सहयोगी एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। मंच का सफल संचालन नीलम भूतड़ा व ओम प्रकाश भूतडा ने किया।

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन के चुनाव संपन्न

नागपुर। जिला माहेश्वरी सभा अंतर्गत विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन के नये सत्र हेतु चुनाव गत 29 जनवरी को अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा कार्यालय में चुन्नीलाल सोमानी सभागृह नागपुर में निर्विरोध संपन्न हुए। इसमें हरेश सोनी-अध्यक्ष, सतीश बियानी-सचिव, किशन लाखोटिया-कोषाध्यक्ष, अनिल मंत्री-संगठन मंत्री, राजेश चांडक-प्रचार प्रसार मंत्री, ओमप्रकाश भैया-उपाध्यक्ष, हरगोविंद भुतडा-उपाध्यक्ष (सावनेर), दिनेश लड्डा, संतोष लाखोटिया-सहसचिव सर्वसम्मति से चुने गये। तहसील संगठनों के चुनाव में हिंगना बुटीबोरी कलमेश्वर तहसील माहेश्वरी संगठन में नरेश बंग-अध्यक्ष व आकाश सारडा-सचिव चुने गये। कोंढाली तहसील माहेश्वरी संगठन में विजय कुमार मुंधडा-अध्यक्ष व गोपाल धीरन -सचिव, काटोल तहसील माहेश्वरी संगठन में ब्रिज किशोर बिसानी-अध्यक्ष व देवेन्द्र डांगरा-सचिव, सावनेर केलोद तहसील माहेश्वरी संगठन में रोशन चांडक-अध्यक्ष व पवन चांडक-सचिव, उमरेड भिवापुर कुही मांढल तहसील माहेश्वरी संगठन गोविन्द मुंदड़ा-अध्यक्ष व विजय सारडा-सचिव, कामठी कन्हान मौदा तहसील माहेश्वरी संगठन में रमनलाल गांधी-अध्यक्ष व विरेन्द्र कलंत्री-सचिव तथा नगर माहेश्वरी सभा नागपुर में कमल तापड़िया-अध्यक्ष व गिरधर चांडक-सचिव चुने गये। नगर माहेश्वरी सभा के अंतर्गत सभी 6 जोन को तहसील सभा का दर्जा दिया गया है। जोन 1 के चुनाव में महेश बजाज-अध्यक्ष व आनंद राठी-सचिव, जोन 2 में ओमप्रकाश बंग-अध्यक्ष व नंदकिशोर काबरा-सचिव, जोन 3 में डॉ. जगमोहन राठी-अध्यक्ष व पवन बजाज-सचिव, जोन 4 में प्रकाश हेड़ा-अध्यक्ष व रुपेश पनपालीया सचिव, जोन 5 में हरीश राठी- अध्यक्ष व आनंद डागा-सचिव, जोन 6 में प्रकाश पनपालीया-अध्यक्ष व अजय नबीरा-सचिव चुने गये। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन हेतु भी सदस्यों का चयन व मनोनयन हुआ।

प्राची मंत्री आरबीआई गवर्नर से सम्मानित

कोटा। श्रीमति संगीता एवम राजेश मंत्री की सुपुत्री तथा भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई में प्रबंधक- विदेशी मुद्रा विनिमय प्राची मंत्री को गत 26 जनवरी को मुंबई में भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शतीकांतदास द्वारा गोल्ड मेडल 24 कैरेट एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

युवक-युवती परिचय सम्मेलन का होगा आयोजन

इंदौर। श्री महेश सामाजिक-पारमार्थिक संस्था द्वारा विवाह योग्य माहेश्वरी युवक-युवतियों के लिए त्रिदिवसीय परिचय सम्मेलन का आयोजन इंदौर के दस्तूर गार्डन पर किया जा रहा है। यह आयोजन 30 सितंबर से 2 अक्टूबर तक शनिवार, रविवार एवं सोमवार को होगा। तीनों दिन सरकारी छुट्टियां रहेंगी। अतः निश्चित ही अभिभावक के साथ बड़ी संख्या में प्रत्याशी भी कार्यक्रम स्थल पर मौजूद हो सकेंगे। श्री महेश सामाजिक पारमार्थिक संस्था के संस्थापक डॉ रविंद्र राठी ने उक्त जानकारी दी।

कविता

शक्ति का स्त्रोत है तू

दुर्ग की दीवारों पर
जरा जोर से प्रहार कर,

अभेद्य दुर्ग भेद तू
अन्याय का प्रतिकार कर।

शक्ति का स्त्रोत है तू
खुद की भी पहचान कर,

जोश और जुनून का
रग-रग में तू संचार कर।

ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश से
अज्ञान का अंधकार हर,

तोड़ जंजीरे रूढ़िवादिता की
स्वप्न सब साकार कर।

लगा हौसलो के पंख
नीलगगन में तू उड़ान भर,

संघर्ष कर हक़ के लिये
न बैठ जा यूँ हारकर।

न मार कन्या भ्रूण को
न मन ही मन चीत्कार कर,

ढाल बन जा बेटियों की
ममत्व उन पर वार कर।

रौंदने को अस्मिता
बढ़े हाथ पर प्रहार कर,

छिपाना ना दरिंदगी
खिलाफ तू ललकार भर।

हर वक्त क्यों सहना तुझे
जरा खुद का भी सम्मान कर,

स्त्रैण गुण न त्याग, किन्तु
स्व-अस्तित्व से भी प्यार कर।

किरण आगाल
सी-78, कमला क्रिस्टल सुखाड़िया स्टेडियम के पास
आटून रोड भीलवाड़ा (राजस्थान) पिन-311802

जिंदगी में चमकाने के लिये किसी तमगे की जरूरत नहीं होती। अच्छा व्यवहार नेक नीयत और मीठे बोल ही इंसान को फरिश्ता बना देते हैं।

प्रकाश को मुट्ठी में कैद नहीं किया जा सकता

जोधपुर। गत 12 फरवरी को जोधपुर मे 'परिवार परिवेदना निवारण समिति' की बैठक आयोजित हुई। इसमें साहित्यकार हरिप्रकाश राठी ने एक अहम मुद्दा उठाते हुए कहा कि आज हर समाज के मुखपत्र / पत्रिकाएं पदाधिकारियों की भाषा बोलने लगे हैं, ये पत्रिकाएं उनके आकाओं के मन्तव्य की गुलाम बन गई हैं। ऐसे में स्वतंत्र पत्रकारिता लुप्त हो गई है एवं इसी के चलते अहम सामाजिक मुद्दे नेपथ्य में चले गए हैं। ऐसे में अच्छी पत्रिकाओं के संपादक विचित्र असमंजस में हैं। वे जस-तस अपनी पत्रिकाओं को धकिया रहे हैं। श्री राठी ने स्वतंत्र पत्रिकाओं को समाज का चिराग बताते हुए इन पत्रिकाओं के संपादकों को विज्ञापन आदि द्वारा अधिकाधिक सहयोग देने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रकाश को मुट्ठी में कैद नहीं किया जा सकता। वे 'माहेश्वरी एकता' पत्रिका के संपादक राजेश गिल्डा के निधन पर हुई शोक-सभा में अपने विचार रख रहे थे। उन्होंने कहा कि माहेश्वरी समाज में स्वतंत्र पत्रकारिता आज 'जो घर फूंके आपणो चले हमारे साथ' जैसी बात बन गई है। यह तथ्य समाज को अंधकूप में धकेलने जैसी बात होगी। सभा में सुनीता हेड़ा ने सगाई-विवाह होने के अत्यंत अल्प समय में सम्बन्धों के टूटने पर चिंता व्यक्त की।

बजट पर परिचर्चा का आयोजन

फरीदाबाद। माहेश्वरी मण्डल फरीदाबाद द्वारा गत 5 फरवरी को माहेश्वरी भवन में बजट- 2023 पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। माहेश्वरी मण्डल अध्यक्ष रामकुमार राठी ने मुख्य अतिथि सीए केसी सोमानी नईदिल्ली, सीए सुनील गर्ग, सीए राजेश खण्डेलवाल सहित उपस्थित समाज बन्धुओं का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम संयोजक सीए प्रमोद माहेश्वरी ने बजट परिचर्चा के दौरान वक्ताओं एवम उपस्थित सभी महानुभावों से समन्वय करते हुये प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर सम्बन्धित बजट प्रस्तावों का बारीकी से विश्लेषण किया। इस परिचर्या में बृजमोहन कँवर, मांगीलाल मूंधड़ा, उमेश धूत, नीरज माहेश्वरी, आनन्द गट्टानी, कमलेश जाजू, हितेश पेड़िवाल, नन्दकमल आगीवाल, राजकुमार लढा आदि बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

''चर्चा'' और ''निन्दा'' यह केवल सफल व्यक्तियों के भाग्य में होती है इसलिये सफर जारी रखें।

सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

काठमांडू (नेपाल)। गत 26 जनवरी बसंत पंचमी के दिन मारवाड़ी सेवा समिति, नेपाल के 70वें वार्षिकोत्सव के शुभअवसर पर सम्मान समारोह व कवि सम्मेलन का आयोजन माहेश्वरी महासभा पूर्वांचल के पूर्व उपाध्यक्ष रमेश तापड़िया, काठमांडू के संयोजकत्व में हुआ। उक्त जानकारी देते हुए झारखंड बिहार प्रदेश सह मीडिया प्रभारी राजकुमार लढ़ा ने बताया कि इस आयोजन के मुख्य अतिथि नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहाल प्रचंड का रमेश तापड़िया ने राजस्थानी टोपी पहना व दुशाला ओढ़ा कर अभिनन्दन किया। 28 जनवरी को पशुपति गौशाला धर्मशाला काठमांडू में कृत्रिम अंग के निःशुल्क वितरण के अवसर पर ऊर्जा राज्य मंत्री दीपकबहादुर सिंह को दुशाला ओढ़ा कर सम्मानित किया गया।

बिड़ला ने किया सिक्किम भ्रमण

सिक्किम। लोकसभा सभापति ओम बिड़ला ने सिक्किम में राजनीतिक दौरा किया। इसमें अपने बहुत ही व्यस्त समय से समय निकाल कर उन्होंने मारवाड़ समाज से मुलाकात की। इसमें सिक्किम माहेश्वरी महिला संगठन एवं परिवार की सामाजिक भागदारी भी रही। सभी ने उनका स्वागत करते हुए उनके विनम्र स्वभाव की प्रशंसा की।

प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार

वारंगल। श्री जगदीश मंदिर हनमकोंडा में प्रगतिशील मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित मंदिर जो करीब 150 वर्षो से भी पुराना है, का जीर्णोद्धार कार्यक्रम गत 21-24 फरवरी तक नूतन विग्रहो की स्थापना व द्वज स्तंभ की प्रतिष्ठा के साथ आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य यजमान मूर्तियों के दाता रामप्रसाद व ओमप्रकाश लोया परिवार एवं समस्त समाज के सदस्यों के सहयोग से कार्यक्रम पूर्ण हुआ। कार्यक्रम में वारंगल के हनमाकोंडा के एमएलए तथा अन्य राजकीय सदस्यों ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

गणतंत्र दिवस पर खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

फरीदाबाद। माहेश्वरी मण्डल फरीदाबाद द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में 26 जनवरी को सुबह 9:30 बजे माहेश्वरी सेवा सदन में झण्डारोहण किया गया। इस अवसर पर समाज के विभिन्न वर्ग के बच्चों हेतु विभिन्न खेलकूद एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन युवा संगठन द्वारा किया गया। माहेश्वरी मण्डल सचिव श्री गट्टानी ने बताया कि इस अवसर पर माहेश्वरी मण्डल अध्यक्ष रामकुमार राठी, सेवा सदन अध्यक्ष कमल आगीवाल, महिला मण्डल अध्यक्ष पुष्पा झँवर, युवा संगठन अध्यक्ष मोहित झंवर, मार्गदर्शक सुशील नेवर, परशुराम साबू आदि उपस्थित थे।

आजादी की 75वीं वर्षगाँठ पर 75 मानवीय सेवाएँ

बेंगलोर। मैसूर जिला माहेश्वरी सभा एवं माहेश्वरी सभा बेंगलोर, माहेश्वरी सभा मैसूर के संयुक्त तत्वावधान में माहेश्वरी समाज की अनूठी पहल के अंतर्गत स्वतंत्रता दिवस की 75 वीं वर्षगाँठ पर अमृत महोत्सव के तहत 75 मानवीय एवं गो सेवा कार्यों को बेंगलोर मैसूर से समाज के 75 परिवारों के सहयोग से गत 13 मार्च 2022 से प्रारंभ किया गया था। इन 75 मानवीय सेवा कार्यों के समापन समारोह को गत 29 जनवरी 2023 को एलुमनि बिल्डिंग में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय दिग्गज संगठन के कैप्टन जोगेन्द्र सिंह सेंगर एवं सम्माननीय अतिथि कर्नाटक गोवा प्रदेश माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष ब्रजमोहन भूतड़ा थे। इस दिन 75वीं सेवा अंतर्गत मारुति वेन दानदाता रघुनाथ तोषनीवाल परिवार द्वारा नरचर फाउंडेशन को दी गई। श्री जनार्दन जो 'सोकेयर एनजीओ की देख-रेख करते हैं उनके एनजीओ को इन सेवाओं में से वाशिंग मशीन दी गई थी। बेंगलोर समाज ने मानवीय सेवा द्वारा अनाथ आश्रम, वृद्धा आश्रम, मंद बुद्धि बालकों, गो सेवा में एक-दो नहीं पुरी 75 सेवाएँ दी। ज़रूरतों के अनुसार गौ शाला में गायों के लिए चारा, कुर्सी टेबल, आलमारी, वाशिंग मशीन, सोलर हीटर, सिलिंग पंखे, कृत्रिम पैर, आरोवाटल फ़िल्टर, फ्रिज, सिलाई मशीनें, टीवी, ऊनी कपड़े, बर्तन, इनवर्टर, कम्प्यूटर, पढ़ाई की जरूरत के सामान एवं बीमार के लिए बेड व आज मारूती वेन भी प्रदान की गई है। इनमें 75 परिवारों ने सहयोग दिया।

एडवोकेट गुप्ता का सम्मान

निज़ामाबाद। तेलंगाना राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण ने मदनलाल गुप्ता को एडवोकेट के रूप में उनके सराहनीय कार्य और 65 से अधिक वर्षों तक समाज को उनकी कानूनी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

यश को शतरंज में कांस्य

जयपुर। डॉ. वंदना व डॉ. ललित भराडिया के सुपुत्र यश भराडिया ने हाल ही में पुडुचेरी में आयोजित अंडर 13 वर्ष राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त करके राजस्थान का नाम गौरवान्वित किया। इस प्रतियोगिता में यश ने कुल 11 मैचों में आठ विजय, दो ड्रा व एक पराजय के साथ 9 अंक प्राप्त करके कुल 333 बालकों में तीसरा स्थान प्राप्त किया। यश को कांस्य पदक के साथ 48000 रुपये की इनामी राशि भी प्रदान की गई। प्रथम आए तीन खिलाड़ी अब अगले साल एशियन तथा वर्ल्ड अंडर 14 प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

माहेश्वरी पुनः बनी उपाध्यक्ष

धार। समाजसेवी श्याम सुंदर माहेश्वरी की पुत्रवधू रेखा-गोपाल माहेश्वरी दूसरी बार नगर परिषद में पुनः उपाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुई। समस्त समाजजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के चुनाव सम्पन्न

पुष्कर। मध्य राजस्थान प्रादेशिक सभा (अजमेर जिला, नागौर जिला, टोंक जिला सवाई माधोपुर जिला) के चुनाव गत 12 फरवरी को श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर परिसर में मुख्य चुनाव अधिकारी ताराचन्द माहेश्वरी, सहायक चुनाव अधिकारी गोपाल मालू, छीतरमल जाजू, शशिभूषण मून्दड़ा एवं श्याम मोदानी तथा अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के पर्यवेक्षक रमेश भराड़िया की उपस्थिति में सर्वसम्मति से हुए। इसमें गोपीकिशन बंग मेड़तासिटी-प्रदेश अध्यक्ष, मदनगोपाल बाल्दी विजयनगर-वरिष्ठ उपाध्यक्ष, महावीरप्रसाद बिदादा मकराना उपाध्यक्ष, ओमप्रकाश सारडा किशनगढ़-उपाध्यक्ष, शिवदास बाहेती (एस.डी. बहेती) अजमेर-प्रदेश मंत्री, राजेन्द्रकुमार चौधरी सरवाड़ कोषाध्यक्ष, सुरेशचन्द झंवर कुचामनसिटी- संगठन मंत्री, राजेन्द्रकुमार न्याती केकड़ी - संयुक्त मंत्री, अरविन्दकुमार मूंदड़ा व कमलकिशोर मून्दड़ा परबतसर संयुक्त मंत्री निर्वाचित हुए।

महाशिवरात्रि पर्व का किया आयोजन

उदयपुर। माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा महाशिवरात्री पर्व का आयोजन ओरियन्ट पैलेस रिसोर्ट में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संरक्षक कौशल्या ने की। अध्यक्ष आशा नरानीवाल ने सभी का स्वागत किया। बाजे गाजे के साथ शिव बरात निकाली। सचिव सीमा लाहोटी ने बताया कि हल्दी, कुंकुम, मेहंदी की रस्मों के बाद शिव-पार्वती विवाह सम्पन्न हुआ। मौके पर सरिता न्याती, बीना मोहता, श्रीमती असावा, राजकुमारी सहित सभी सदस्यायें मोजूद थीं। फाल्गुन के महिने के हिसाब से फूलों की होली भी खेली गयी। उक्त जानकारी अध्यक्ष आशा नरानीवाल व सचिव सीमा लाहोटी ने दी।

सेवा सदन की बैठक का आयोजन

पुष्कर। श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर की प्रबंधकारिणी समिति के वर्तमान सत्र की पांचवी बैठक अध्यक्ष रामकुमार भूतड़ा की अध्यक्षता में 11 मार्च को दोपहर 3 बजे प्रधान कार्यालय पुष्कर में आयोजित होगी। इसमें प्रमुख रूप से गत प्रबंधकारिणी समिति की बैठक 24 जनवरी की कार्यवाही - रिपोर्ट की पुष्टि होगी। सभी भवनों के संयोजकों एवं प्रभारी द्वारा अपने-अपने भवन की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की जाऐगी। आय व्यय 2021-2022 का अवलोकन एवं अनुमोदन तथा प्रस्तावित बजट 2023-2024 पर चर्चा एवं स्वीकृति प्रदान की जाएगी। उक्त जानकारी महामंत्री रमेशचंद्र छापरवाल ने प्रदान की।

निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का हुआ आयोजन

रतनगढ़। स्थानीय रामचंद्र पार्क के माहेश्वरी भवन प्रांगण में रतनगढ़ माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, संकरा आई हॉस्पिटल जयपुर व स्व.श्री नारायणप्रसाद मुरलीधर झंवर के सौजन्य से निःशुल्क मोतियाबिंद जांच एवं लैन्स प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन हुआ। इसमें 185 रोगियों की जांच करके 55 रोगियों को लेंस प्रत्यारोपण के लिए चयनित किया गया। शिविर प्रभारी एडवोकेट रजनीकांत सोनी ने बताया कि चयनित रोगियों को चिकित्सालय के वाहन से जयपुर ले जाया जाएगा। वहां उनका लेंस प्रत्यारोपण होगा। रोगियों के लिए सभी सुविधाएं निःशुल्क रहेगी। शिविर का शुभारंभ भगवान शिव की प्रतिमा के आगे अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कन्हैया लाल पारीक, पूर्व पालिकाध्यक्ष संतोषबाबू इंदौरिया, गौड़ समाज के कार्यकारी अध्यक्ष गौतम महर्षि, दीनदयाल खेतान, महावीर रामगढ़िया, नरेंद्र झवर, कमल सोनी एडवोकेट, रजनीकांत सोनी एडवोकेट, रामकिशन चांडक, रामअवतार चांडक, योगेश लड्डा, राकेश जाजू, महेश जाजू ने दीप प्रज्वलित करके किया। कार्यक्रम में अतिथियों का सम्मान भी किया गया। कैंप में प्रताप बोथरा, सुभाष महर्षि, रामचंद्र खटीक, राजेंद्र मारोठिया, बाबूलाल बारवाल, लिखमीचंद जांगिड़, प्रभात बिल, वासुदेव चाकलान, श्रीमती सरिता चांडक, चंदा देवी सोनी आदि ने भी अपनी सेवाएं दी।

महिला मंडल की कार्यकारिणी गठित

राजनांदगांव। माहेश्वरी महिला मंडल की कार्यकारिणी की बैठक गत 10 फरवरी को माहेश्वरी भवन में सम्पन्न हुई। इसमें सर्वसम्मति से दीपा बागड़ी को सत्र 2023-25 के लिए अध्यक्ष का कार्यभार सौंपा गया। साथ ही सचिव अनीता चितलांगिया, कोषाध्यक्ष सीमा डागा, संगठन मंत्री माया राठी, सह सचिव सरिता डागा, उपाध्यक्ष विमला लड्डा एवं सुषमा राठी तथा पीआरओ का दायित्व पिंकी धूत को सौंपा गया।

उम्र बिना रुके सफर कर रही है
और हम ख्वाईशों को लेकर वहीं खड़े हैं।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज जयपुर एवं मालपानी मल्टी स्पेश्यलिटी हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में 12 फरवरी को प्रातः 9 से 3 बजे तक मालपानी मल्टी स्पेश्यलिटी हॉस्पिटल जयपुर में निःशुल्क पाइल्स बीमारी के इलाज हेतु शिविर आयोजित किया गया। इसमें लगभग 70 मरीज को वरिष्ठ सर्जन डॉ.एन.के. मालपाणी एवं उनकी टीम द्वारा प्रशिक्षण परामर्श दिया गया। इनमें से 13 मरीजों का निःशुल्क ऑपरेशन 7 दिवस के अन्दर करना सुनिश्चित किया गया। अन्य मरीजों को तीन दिन की दवाईयों निःशुल्क प्रदान की गई। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष केदार मल भाला, महामंत्री मनोज मूंदड़ा, उपाध्यक्ष शिक्षा बजरंग लाल बाहेती, महासचिव शिक्षा मधुसूदन बिहाणी, प्रचार मंत्री अरूण बाहेती, समाज के पूर्व अध्यक्ष बजरंग जाखोटिया, समाजसेवी राजेश बिहाणी, अरविन्द मांधनिया और समाज के अन्य गणमान्यजन मौजूद रहे। इस शिविर को सफल बनाने में कार्यक्रम संयोजक अनिल मालपानी (हरमाड़ा) का विशेष योगदान रहा।

नेत्र चिकित्सा शिविर का हुआ आयोजन

नागपुर। राजस्थानी महिला मंडल द्वारा नेत्र चिकित्सा कैंप का आयोजन हुआ जिससे 125 लोग लाभान्वित हुए। सभी की जांच की गई। मुकुंद पारेख हेल्थ केयर एंड एजुकेशन सोसायटी द्वारा डॉक्टर ध्रुवल पारेख ने मोतिया बिंद, चश्मे का नंबर, काले मोतियाबिंद, तिरछापन की जांच की तथा बहुत ही किफायती दाम पर चश्मा उपलब्ध कराया। अध्यक्ष शोभा धीरन ने डॉक्टर ध्रुवल पारेख का तुलसी का गमला देकर स्वागत किया। इस उपयोगी कैंप में आरती पारेख, संदीप पारेख, रुचिका निंबालकर, विवेक कीनेकर के साथ-साथ मंडल की सभी सदस्याओं का पूरा साथ रहा। इस अवसर पर सभी को कोलगेट पेस्ट और ब्रश का निःशुल्क वितरण किया गया। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष ललिता मंत्री, पद्मश्री सारडा की विशेष उपस्थिति रही। कार्यकारिणी सदस्य निर्मला राठी, सुषमा डांगरा, पूनम राठी, अंजू मंत्री, शोभा नबिरा, विद्या लद्धड़ ने अपना योगदान दिया और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम संयोजिका, पूर्व अध्यक्ष रंजू चांडक, शोभा हेड़ा, रजनी शहलोत, अनीता पारेख आदि ने अपना विशेष योगदान दिया।

लढ़ा बने तहसील सभा अध्यक्ष

नावांसिटी। समाजसेवी व व्यवसायी सत्यनारायण लढ़ा को नावा कुचामन तहसील माहेश्वरी सभा का अध्यक्ष चुना गया। इसी प्रकार सर्वसम्मति से कुचामन निवासी रविकांत काबरा को उपाध्यक्ष, वेनीगोपाल मालपानी को सचिव, कन्हैयालाल मुंदड़ा को उपसचिव, रामावतार तापड़िया को कोषाध्यक्ष व सुशील काबरा को संगठन मंत्री निर्वाचित घोषित किया गया।

फ्रेण्डस ग्रुप की नवीन कार्यकारिणी गठित

इंदौर। माहेश्वरी फ्रेण्डस ग्रुप के सदस्यों की छठी साधारण सभा नखराली ढाणी में आयोजित हुई। इसमें ग्रुप के रमेशचंद्र सावित्री राठी व सुरेश जमना राठी ने वर्ष 2023 के लिए नवीन पदाधिकारियों की घोषणा निर्विरोध की। इसमें अध्यक्ष कृष्णदास कमल बाहेती, उपाध्यक्ष गोपाल वीणा बियाणी, गोपाल सुधा मालपानी, प्रचार मंत्री सम्पत कुमार राधा साबू, सचिव गोपाल मंजुला अजमेरा, सहसचिव बद्रीप्रसाद कृष्णकांता झंवर, कोषाध्यक्ष कैलाश गीता सोमानी, संगठन मंत्री सतीश ब्रजलता मंत्री चुने गये।

माहेश्वरी सभा के चुनाव सम्पन्न

कोलकाता। मध्य कोलकाता माहेश्वरी सभा का नवीन सत्र हेतु चुनाव सर्वसम्मति से 20 फरवरी को माहेश्वरी भवन में संपन्न हुआ। इसमें श्याम बागड़ी पुणे अध्यक्ष निर्वाचित हुए। बजरंग मूंदड़ा सचिव एवं संजय झंवर कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। मध्य कोलकाता में पहली बार 90 प्रतिशत युवाओं को स्थान दिया गया है। प्रदेश एवं अंचल के चुनाव अधिकारियों ने अपनी देखरेख में चुनाव संपन्न कराया।

दुनिया का उसूल है जब तक काम है
तब तक नाम है बाकी दूर से ही सलाम है।

उषा सोडानी बनी पश्चिमी म.प्र. अध्यक्ष

उषा सोडानी

शोभा माहेश्वरी

साधना बियानी

उज्जैन। पश्चिमी म.प्र. माहेश्वरी महिला संगठन की नवीन कार्यकारिणी का गठन गत दिनों आगर-शाजापुर जिले के नलखेड़ा में सर्वसम्मति से हुआ। पर्यवेक्षक शशि नेवर तथा चुनाव अधिकारी अनुपमा बाहेती थी। इसमें सर्वसम्मति से उज्जैन निवासी उषा सोडानी प्रदेश अध्यक्ष चुनी गईं। कार्यकारिणी में मंत्री-शोभा माहेश्वरी इंदौर, कोषाध्यक्ष - साधना बियानी काँटाफोड़ तथा संगठन मंत्री-प्रमिला भूतड़ा इंदौर सर्वसम्मति से चुनी गई। इसी प्रकार आंचलिक उपाध्यक्ष अहिल्या अंचल, उपाध्यक्ष सुमन सारड़ा, संयुक्त मंत्री -किरण लखोटिया, माया डांगरा, अनीता मंत्री, भावना सोमानी, उपाध्यक्ष- साधना लड्ढा, संयुक्त मंत्री- ममता आगाल, मालवा अंचल, हेमा मोहता, अपर्णा झंवर, स्नेहलता मूंदड़ा आदि चुनी गयीं।

लाइफलाइन अस्पताल ने मनाई रजत जयंती

लुधियाना। लाइफलाइन अस्पताल गिल रोड लुधियाना के 25 वर्ष पूरे होने पर गत 11 फरवरी को एक भव्य रजत जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में शहर के प्रतिष्ठित गणमान्य नागरिकों, डॉक्टरों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भाग लिया। लाइफलाइन अस्पताल के सीईओ वैभव माहेश्वरी ने बताया कि हॉस्पिटल पिछले 25 वर्षों से लगातार मानवता की सेवा में कार्यरत है। इन 25 सालों में इस अस्पताल ने चेरिटी मेडिकल ट्रस्ट एवं अन्य कई स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर करीब 600 से ज्यादा निशुल्क चिकित्सक शिविरों का आयोजन भी किया गया तथा मुफ्त दवाइयां वितरित की। इस अवसर पर डॉ शिखा माहेश्वरी ने लाईफलाईन पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट एवं प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना के तहत विद्यार्थियों की मुफ्त ट्रेनिंग के बारे में भी जानकारी दी। पद्मश्री रजनी वेक्टर मुख्य अतिथि व शशिप्रभा द्विवेदी डीजीपी रेलवे पंजाब सरकार विशिष्ट अतिथि के तौर पर आमंत्रित थीं। बीसीएम स्कूल के डायरेक्टर डॉक्टर परमजीत कौर तथा डाक्टर कौस्तुभ शर्मा डीआईजी मुख्य रूप से आमंत्रित थे। स्वास्थ्य के क्षेत्र से जुड़ी हुई स्वयंसेवी संस्थाओं को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एक पुस्तक, मां एक ग्रहणी की जीवन यात्रा का लोकार्पण भी किया गया जिसकी लेखिका प्रेमलता माहेश्वरी हैं।

नारी ही शक्ति है नर की, नारी ही शोभा है घर की, जो उसे उचित सम्मान मिले, तो उस घर में खुशियों के फूल खिले।

उपलब्धि

श्रुति सोनी को पीएच.डी. उपाधि

रायपुर। बचपन से ही प्रतिभावान रही श्रुति का विवाह राजनांदगांव निवासी स्व. श्री गोविंद गोपाल सोनी के सुपुत्र सीए आदित्य सोनी से हुआ। दो बच्चों के साथ पारिवारिक जिम्मेदारी को निभाते हुए उन्होंने रायपुर के पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से गत 16 जनवरी 2023 को पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। "समूह संचार के प्रमुख स्थापना प्रोटोकॉल" विषय पर उन्होंने शोध कार्य साइंस कॉलेज के गणित विभाग के प्रोफेसर डॉ. त्रिपाठी के मार्गदर्शन में पूर्ण किया। उक्त जानकारी अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की विवाह संबंध सहयोग समिति की राष्ट्रीय प्रभारी शर्मिला राठी दिल्ली ने दी।

हेमिश अबेकस में देश में अव्वल

इन्दौर। सीए निधि-पियुष कोठारी के मात्र 8 वर्ष के सुपुत्र हेमिश ने अखिल भारतीय स्तर पर US MAS COURSE के ABACUS गणित (MATHEMATICS) विषय में प्रथम स्थान प्राप्त कर अहमदाबाद में गत 12 फरवरी 2023 को ट्रॉफी प्राप्त की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

खुशबू सीए इन्टर में अव्वल

अहमदाबाद। सीए चितरंजन भारड़िया की बेटी खुशबू माहेश्वरी ने हाल ही में अपनी सीए इंटरमीडिएट परीक्षा पास की है और इसमें 42वीं एआईआर प्राप्त की। खुशबू के पिता अहमदाबाद में चार्टर्ड एकाउंटेंट की प्रैक्टिस कर रहे हैं और भारदिया माहेश्वरी एंड एसोसिएट में मैनेजिंग पार्टनर हैं। खुशबू बहन भाव्या माहेश्वरी भी चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं।

आरोग्य जांच शिविर का हुआ आयोजन

नांदेड़ (महाराष्ट्र)। राजस्थानी समाज नांदेड़ के पूर्व अध्यक्ष, कर सलाहकार, नांदेड़ जिला माहेश्वरी सभा के पूर्व उपाध्यक्ष, राजस्थानी सेवा समिति के अध्यक्ष, केशरबाई गणेशलाल बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट नांदेड़ के प्रेरणास्त्रोत, नांदेड़ जिला माहेश्वरी सभा द्वारा जीवन गौरव एवं अखिल भारतीय मारवाडी युवा मंच द्वारा 'मारवाडी रत्न' पुरस्कार से सम्मानित, समाजसेवी स्व. श्री रामलाल बाहेती के प्रथम स्मृति दिवस पर केशरबाई गणेशलालजी बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट नांदेड़ द्वारा हैल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। इसके पहले सत्र में 5 फरवरी को ब्लड एवं यूरीन परीक्षण के साथ ही 127 स्त्री-पुरुषों की ईसीजी जाँच राधेगोविंद हॉस्पिटल में की गई। परीक्षणों के निष्कर्षों के आधार पर 12 फरवरी को स्थानीय अश्विनी हॉस्पिटल में सभी लोगों के स्वास्थ्य की विस्तृत जांच की गई। प्रकल्प प्रमुख अशोक भूतड़ा, समिति सदस्य गोविंदप्रसाद मूंदड़ा, कैलाश बाहेती, संतोष मनियार, संस्थाध्यक्ष निखिल बाहेती, कार्याध्यक्ष गोपाल लाल लोया, सचिव प्रो. किशनप्रसाद दरक, उपाध्यक्ष पुरुषोत्तम भक्कड, प्रबंध न्यासी जगदीश बियानी, चिरंजीलाल दागडिया आदि का विशेष योगदान रहा।

महाशिवरात्रि पर की शिवार्चना

वाराणसी। महाशिवरात्रि पर माहेश्वरी परिषद वाराणसी द्वारा पांच, सात, और तेरह पत्तियों वाले बिल्वपत्र से शिवार्चन हुआ। इस अवसर पर 5 पंडित द्वारा किए जा रहे रुद्री पाठ के साथ भगवान शंकर का परिषद के मंत्री जगदीश राठी ने सपत्नीक रुद्राभिषेक किया गया। उपस्थित सभी महिलाओं और पुरुषों ने रूद्राभिषेक में भागीदारी की। इसके पश्चात समाज बंधुओं द्वारा सुमधुर भजन का आयोजन किया गया। सभी ने फलाहार, ठंडाई का प्रसाद ग्रहण किया। हनुमान पेड़ीवाल, गोविन्द भरानी, मुक्ति मुंदड़ा, सरोज भरानी व राखी काबरा ने भजन से सभी का मन मोह लिया। विरेन्द्र भुराड़िया, राम चितलांगिया, राजकुमार कोठारी, मांगीलाल सारडा, गौरीशंकर नेवर, अनिल सारडा आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम संयोजक नवनीत कोठारी, गोविन्द भरानी, श्रवण करवा, धीरज मल्ल, गौरव कोठारी, अनूप कोठारी आदि ने आभार व्यक्त किया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर माहेश्वरी समाज की सभी नारी शक्ति का

अभिनंदन एवं बधाई

श्रीमती मंजू बांगड़

श्रीमती उषा जी सोडाणी

श्रीमती मंजू जी बांगड़

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा

तथा

श्रीमती उषा जी सोडाणी

म.प्र. पश्चिमांचल माहेश्वरी महिला संगठन की

अध्यक्षा निर्वाचित होने पर

हार्दिक बधाई आप दोनों के नेतृत्व में माहेश्वरी महिला संगठन

एक नया आयाम स्थापित करेगा ऐसी बाबा श्री महाकाल से प्रार्थना करते हैं

आपके सफल कार्यकाल के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

सेवा त्याग सदाचार

गीता तोतला

कार्य समिति सदस्य, अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन

संत नगर, उज्जैन, फोन-94250 94706

फाग उत्सव का हुआ आयोजन

डीडवाना। भजनों के साथ माहेश्वरी डीडवाना महिला मंडल (140घर) थोक एवम् माहेश्वरी महिला संगठन हाईवे क्षेत्र ने संयुक्त रूप से फाग उत्सव मनाया। संस्था अध्यक्ष सुषमा मालू ने बताया कि राधा कृष्ण पर गुलाल, फूल और पिचकारी से केसरिया रंग की बरसात कर भजनों के साथ फाग उत्सव का आगाज हुआ। लता गट्टानी एवं सुधा मालू सहित सभी उपस्थित साथियों को हर्बल गुलाल लगाकर पर्यावरण हितैषी होली का संकल्प दिलाया गया। आशा सिंगी, निर्मला मंत्री, मीना मानधन्या, प्रियंका भालिका, नेहा भलिका, सुनीता भांगड़िया, कविता लाहोटी, दीपिका बाहेती, कविता बाहेती आदि सभी सदस्याओं का सहयोग मिला।

विद्यार्थियों की कार्यशाला संपन्न

राजनांदगांव। माहेश्वरी भवन में 19 फरवरी को माहेश्वरी संस्कार पाठशाला द्वारा आगामी परीक्षा पर विद्यार्थियों की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें विशेषज्ञ रजनी राठी द्वारा विद्यार्थियों को परीक्षा हेतु टाइम मैनेजमेंट, पढ़ाई के साथ म्यूजिक एवं योगा, कठिन शब्द को याद करने का तरीका, लिखने का महत्व और एग्जाम फोबिया जैसे विषय पर मोटिवेट किया गया। साथ ही विशेष आमंत्रित स्कूल शिक्षिकाओं द्वारा परीक्षा के लिये मार्गदर्शन भी दिया गया। दीपा बागड़ी द्वारा माहेश्वरी संस्कार पाठशाला के मेंटर्स राधा लड्ढा, सरोज मूंदड़ा, वसुधा लड्ढा एवं स्वाति डागा का आभार व्यक्त किया गया। कार्यशाला में बच्चों के साथ उनके अभिभावकों की भी उपस्थिति रही। उक्त जानकारी पिंकी धूत ने दी।

कबीरा तेरी दुनिया में पैसा सबका पीर
नोटों की खातिर फिर रहे बनके सब फकीर
भूल गये रिश्ते नाते भूल गये जमीर
रांझा मांगे पल्सर और एक्टिवा मांगे हीर।

विमेन्स बॉक्स क्रिकेट लीग का आयोजन

अहमदाबाद। माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा विमेन्स बॉक्स क्रिकेट लीग का आयोजन बेंटल फील्ड सिंधुभवन रोड में रखा गया। इसमें 40 से ज्यादा लोगों की उपस्थिति रही। सभी उपस्थित सदस्यों ने वुमन बॉक्स क्रिकेट का मजा लिया। उक्त जानकारी अहमदाबाद माहेश्वरी युवा संगठन के संगठन मंत्री अर्पित बाहेती ने दी।

श्रद्धांजलि

नेत्रदानी श्री किशनगोपाल काबरा

ब्यावर। समाज के वरिष्ठ श्री किशन गोपाल काबरा 71 वर्ष निवासी अजमेर रोड का अचानक हृदयाघात से निधन हो गया। उनके निधन के बाद माहेश्वरी समाज के सेवाभावी राजेन्द्र काबरा ने मृत्यु सूचना दृष्टी सेवा संस्थान के अध्यक्ष एस. एन. शर्मा को दी। सूचना पाते ही राजेन्द्र काबरा, एस. एन. शर्मा व श्री माहेश्वरी पंचायत बोर्ड के मंत्री दिलीप कुमार जाजू के सहयोग से स्व. श्री काबरा के परिजनों को नेत्र दान के लिए प्रेरित किया गया। अंततः उनकी धर्मपत्नी मुन्नी देवी एवं पुत्र मुकेश की सहमति के बाद नेत्रदान किए गए।

श्री मुकेश सोमानी

भीलवाड़ा। गत 5 जनवरी 2023 को युवा उद्योगपति मुकेश कुमार सोमानी का हृदयाघात से असामयिक निधन हो गया। वस्त्र व्यवसायी स्व. श्री इंद्रमल सोमानी के सुपुत्र चार भाइयों में वे सबसे छोटे थे। अल्पायु में ही वे प्रॉपर्टी व्यवसाय से जुड़ गए थे। उनके अग्रज भ्राता जगदीश सोमानी व बद्रीलाल सोमानी (प्रान्त प्रमुख-विश्व हिन्दू परिषद्, सामाजिक समरसता अभियान-राजस्थान) तथा राजेश सोमानी (भारत विकास परिषद्-क्रीड़ा भारती) कई सामाजिक संगठनों से सक्रिय जिम्मेदारी से जुड़े हैं। स्व. श्री सोमानी भी कई संगठनों से जुड़े थे और माहेश्वरी समाज के सभी कार्यो में मुक्त हाथों से सहयोग करने में अग्रणी थे।

नारी की सबसे बड़ी विशेषता ही उसकी बहुमुखी प्रतिभा है। उसकी यही विशेषता उसे खास बनाती है। आर.आर. ग्लोबल की डायरेक्टर कीर्ति काबरा इन्हीं विशेषताओं के साथ न सिर्फ विशाल व्यावसायिक साम्राज्य के संचालन में अपना योगदान दे रही हैं, बल्कि शिक्षा व समाजसेवा में भी अपना अद्वितीय योगदान दे रही हैं।

टीम प्रबंधन की प्रतिभा संपन्न

कीर्ति काबरा

परोपकारी एवं बिजनेस लीडर, कीर्ति काबरा आरआर ग्लोबल की निदेशिका हैं, जो आरआर ग्लोबल के लिए ब्रांड एवं कम्युनिकेशंस टीम का नेतृत्व भी करती हैं। अपनी दूरगामी सोच व जोशीली नेतृत्व शैली के कारण वे ब्रांडों के लिए तकनीकी एवं कॉर्पोरेट विशेषज्ञता में एक अनूठा मिश्रण लाती हैं। अपनी असाधारण रणनीति एवं दूरदर्शिता के कारण उन्होंने वैश्विक बाजारों में लगातार परिणाम लाकर समूह के ब्रांडों का सफल नेतृत्व प्रदान करते हुए अमिट छाप छोड़ने में कामयाब रही हैं। वे आरआर काबेल को घरेलू पहचान बनाने में न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर के 90 देशों में सर्वाधिक विश्वसनीय व अग्रणी ब्रांड के रूप में स्थापित करने में सफल रही हैं। आपकी लगन, समर्पण एवं उल्लेखनीय कार्य के बदौलत उन्हें दो बार सैवी 'वुमन ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया है। पुरुष प्रधान उद्योग जगत में एक महिला लीडर का शीर्ष स्थान पर नेतृत्व व उत्थान कभी आसान नहीं रहा। इस चुनौती के बावजूद भी आप भारतीय विद्युत उद्योग में सर्वाधिक सफल महिला लीडर के रूप में उत्कृष्टता प्राप्त करने में कामयाब रही हैं।

जरूरतमंदों के लिए शिक्षा की रोशनी

अपनी कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के साथ-साथ श्रीमती काबरा आरआर ग्लोबल के 'मिशन रोशनी' की संस्थापक मार्गदर्शक रही हैं। यह सीएसआर पहल के अन्तर्गत शैक्षणिक कार्यक्रमों को विकसित करने तथा स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ाकर देश के दूरदराज के महिलाओं व बच्चों को सशक्त बनाना है। आपके मार्गदर्शन में सीएसआर पहल के अन्तर्गत 7500 एकल विद्यालय में 250000 बच्चों को शिक्षित किया गया है। श्रीमती काबरा ने स्कूली बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए स्वयं अनेक राज्यों में प्रवास कर छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की हैं। काबेल स्टार स्कॉलरशीप प्रोग्राम के अन्तर्गत अब तक 1015 स्कूली बच्चों को एक करोड़ रूपये अधिक की छात्रवृत्ति दी गई है। आपका दृढ़ मत है कि शिक्षा से जीवन-स्तर का विकास होता है और इसी विश्वास के साथ आप 'मिशन रोशनी' को एक नई दिशा देने के लिए कर्मठता पूर्वक कार्य कर रही हैं।

कई समाजसेवी संस्थाओं को योगदान

आपके कुशल प्रबंधन शैली में राम रत्ना विद्या मंदिर का संचालन हुआ और कई कीर्तिमान स्थापित हुए। साथ ही माहेश्वरी प्रगति मंडल-मुम्बई, माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल- पुणे तथा वनबन्धु परिषद –मुम्बई आदि संस्थाओं में भी आप सक्रिय रूप से जुड़ी रहीं। आपके प्रेरक मार्गदर्शन में इन संस्थाओं में नये-नये आयाम स्थापित हुए हैं। आप एक प्रखर वक्ता भी हैं, यही कारण है कि कई संस्थाएं आपको समसामयिक एवं ज्वलंत विषय पर उद्बोधन के लिए आमंत्रित करती हैं।

शिक्षा के प्रति विशेष लगाव/उत्कंठा

शिक्षा में आपकी विशेष रुचि है। आप INSEAD Business School, Singapore से शॉर्ट कोर्स की हैं, जहां नेतृत्व निर्माण विषय पर सफलतापूर्वक अध्ययन किया तथा IIM अहमदाबाद से ब्राडिंग के लिए शॉर्ट कोर्स कर आरआर ग्लोबल के ब्रांडों को नई दिशा प्रदान कीं। आपकी ओजस्वी ऊर्जा, उत्साह एवं कार्य-कुशलता आपके आसपास के लोगों को प्रेरित करता है और जिसका उल्लेखनीय योगदान उद्योग में मिल रहा है।

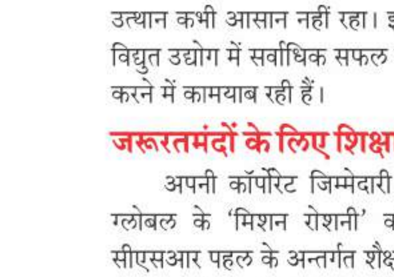

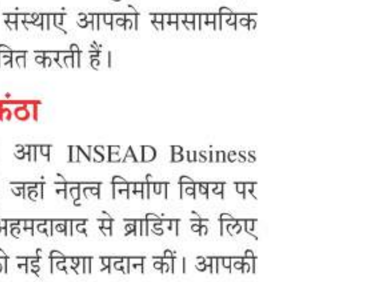

नारी वैसे ही भावना का सागर होती हैं और जब ये भावनाऐं कविता की सूर-लहरी में स्थापित हो जाती हैं तो फिर वे माधुर्य की खुशबू फैलाने में पीछे नहीं रहतीं। कोलकाता निवासी शशि लाहोटी एक ऐसी ही कवयित्री हैं, जिनकी कविताऐं श्रोताओं और पाठकों के सिर चढ़कर बोलती हैं।

साहित्य जगत की 'कुमुद' शशि लाहोटी

कोलकाता निवासी शशि लाहोटी की पहचान एक ऐसी समाजसेवी कवयित्री के रूप में है, जो अपनी कलम से न सिर्फ कविताओं का माधुर्य प्रसारित करती हैं, बल्कि समाजसुधार का अलख भी जगाती है। वैसे तो उनकी लेखनी हमेशा ही चलती रहीं लेकिन अगस्त 2022 में उनका प्रथम काव्य संकलन 'क्या छिपा सन्दूकची में' प्रकाशित हुआ। इसमें जीवन के रंगों बचपन, युवावस्था, शादी, रिश्ते, मौसम और उत्सव, यादें जीवन की, अध्यात्म और ज्ञान, सात खण्डो में विभाजित करके कविताओं के माध्यम से जीवन यात्रा को दर्शाया है। इस पुस्तक को अपने ही 50वें जन्मदिन पर स्वयं को ही उपहार देकर उन्होंने समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन केराष्ट्रीय महिला अधिवेशन 'शंखनाद 2022' कोटा में साहित्य चिन्तन मनन समिति के अंतर्गत 'जागृति कवयित्री सम्मेलन' में अपनी लिखी कविता 'शादियों में दिखावा' प्रस्तुत की, जिसे श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट से भरपूर प्यार मिला।

कई साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध

इन सबके साथ ही कई साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ने का अवसर मिला। अभ्युदय अंतर्राष्ट्रीय संस्था की सह अध्यक्ष बनी, वहाँ संयोजक और मुख्य संयोजक का कार्यभार भी संभाला। वहाँ से 'गुल्की बन्नो' की समीक्षा के लिए प्रथम पुरस्कार मिला। पश्चिमी बंगाल साहित्य संगम संस्थान की सचिव का पदभार सम्भाल रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय महिला काव्य मंच दक्षिण कोलकाता इकाई की उपाध्यक्ष हैं। कई साझा संकलन जैसे 'मीमांसा-2', 'यह उन दिनों की बात है', 'चेतना साझा काव्य संग्रह', 'शब्ददीप', 'कबीर शाश्वत चिन्तन यात्रा', 'प्रेमचन्द कथन और संदर्भ', 'वह जो गुमनाम रहे' आदि में रचनाएँ प्रकाशित हुई। ई उत्कंठा, काव्यरंगोली, लायंस क्लब की पत्रिका 'जुनून', आदि कई पत्रिकाओं और सन्मार्ग, प्रभात खबर, दैनिक विश्वामित्र आदि समाचार पत्रों में भी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। कई बार मंच संचालन भी किया है। 'कविता दिल की' नाम से फेसबुक पेज बनाया है, जहाँ अपने भाव कविता के रूप में अभिव्यक्त करती रहती हैं, जिसे पाठकों द्वारा बहुत पसन्द किया जा रहा है।

साहित्य सेवा ने दिलाया सम्मान

श्रीमती हालोटी ने नवम्बर 2022 में 'अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था' और 'बौद्धायन सोसाइटी वाराणसी' के तत्वावधान में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय कवयित्री सम्मेलन' में काव्य पाठ किया। उन्हें 'कलम के जादूगर' मंच द्वारा जनवरी 2022 के 'केकेजे साहित्य रत्न' सम्मान से सम्मानित किया गया। जनवरी 2023 में श्रीनाथद्वारा में आयोजित भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति समारोह 2023 में 'साहित्य मण्डल नाथद्वारा' द्वारा साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'काव्य कुसुम मानद उपाधि' से सम्मानित किया गया। यहाँ माहेश्वरी साहित्यकार मंच से कलावती करवा, स्वाति जैसलमेरिया, मधु भूतड़ा, स्वाति मानधना के साथ मंच साझा करने का अवसर मिला। लायंस क्लब 322 बी2 द्वारा 'एक्सीलेंट क्लब सेक्रेट्री अवार्ड' 2020-21 दिया गया। इसके साथ ही अनेक मंचों से सम्मान प्राप्त हुआ। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के लिए दो पेज से भी अधिक बड़ी एक कविता लिखी 'मेरे मन की-मोदी मेरी कलम से' और उसके लिए उनको प्रधानमन्त्री कार्यालय से धन्यवाद पत्र भी मिला और लेखनी को एक पहचान मिली।

यथार्थ को किया चित्रण

जो भी जीवन में आसपास घटित होता था उसी विषय को लेकर कविता लिखती और उसे लोगों तक पहुँचाती, कभी समाचार पत्र के माध्यम से तो कभी सोशल मीडिया के माध्यम से। इस क्रम को कभी बीच में छोड़ा नहीं और यात्रा अनवरत चलती रही। धीरे-धीरे लेखनी और प्रखर होती गई। कोरोना काल में लिखी गई कविताएँ जैसे 'शुक्रिया कोरोना', 'मुझे अपने गाँव जाना है', 'जान है तो जहान है' आदि कई रचनाएँ समाचार पत्र में प्रकाशित होती रही। सोशल मीडिया के माध्यम से कई मंचों से जुड़ी और बहुत बार विजेता भी रही। इसी क्रम में एक कविता 'जी बिजनेस' के पैनलिस्ट पर लिखी और उसे जी बिजनेस के एडिटिंग मैनेजर अनिल सिंघवी द्वारा 'वर्ल्ड वुमन्स डे 2022' को जी बिजनेस चैनल पर दिखाया गया और बहुत सराहा गया। 'कश्मीर फाइल्स' फिल्म के निर्देशक विवेक अग्निहोत्री द्वारा इनकी कविता 'मूवी हॉल का आँखों देखा हाल' को ट्वीट किया जिसे हजारों लोगों ने देखा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की साहित्य चिन्तन मनन समिति द्वारा आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया जिसमें 'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन', 'कोरोना पर मुकदमा', 'क्षणिकाएँ' जैसी प्रतियोगिताओं में राष्ट्रीय स्तर पर स्थान बनाया।

बचपन से रही साहित्यिक रुचि

श्रीमती कृष्णा देवी और मदन गोपाल बियानी की सुपुत्री शशि लाहोटी का बचपन राजस्थान के एक छोटे से गाँव में बीता और सीकर जिले से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूर्ण की। छापर निवासी सुशील लाहोटी से शादी हुई और कोलकाता बस गई। शुरू से ही कुछ नया सीखने का और करने का जुनून था। बंगाली भाषा लिखना और पढ़ना सीखा। कोलकाता में रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ज्वाइन करके इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स किया। लेकिन अधिकतम समय अपने बच्चे और परिवार में ही बिताया। कभी-कभी बच्चों की स्कूल पत्रिका के लिए छोटी-छोटी रचनाएँ लिखती थीं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते गए, बच्चे ही उनके लिए प्रेरणा बने और कुछ नया करने के लिए हमेशा उत्साहित करते रहे। किसी के जन्मदिन या सालगिरह पर छोटी-छोटी तुकबंदी से शुरू की गई लेखनी अब दोहा, मुक्तक, गीत, छंद हर विधा में चलने लगी है। हमेशा कुछ नया करने की इच्छा रखना, हर काम को एक जुनून के साथ करने की आदत शुरू से ही थी। बच्चों के साथ कई बार मैराथन में भाग लिया, बास्केटबॉल खेला और ट्रॉफी भी जीती। 30 सेकंड में 8 बास्केट करके हजारों लोगों के सामने तालियाँ भी बटोरी।

होटल व्यवसाय को भी आमतौर पर पुरूष प्रधान व्यवसाय माना जाता है, लेकिन इस क्षेत्र में अपनी विलक्षण प्रतिभाा से अपनी अलग पहचान बना रही हैं, जोधपुर निवासी चंद्रा बूब। वे न सिर्फ शहर के तीन प्रतिष्ठित होटलों का संचालन सफलता पूर्वक कर रही हैं, बल्कि समाजसेवा में भी उनका योगदान अपने आपमें एक मिसाल है।

होटल व्यवसाय में अनूठा नाम

चंद्रा बूब

स्व. श्री लक्ष्मीनारायण चितलांग्या के यहाँ 27 अगस्त 1964 में जन्मी चंद्रा बूब का विवाह जोधपुर निवासी जे.एम. बूब के साथ हुआ। इसके साथ ही उनकी कर्मभूमि जोधपुर बन गई। जोधपुर वि.वि. से युनिवर्सिटी में द्वितीय स्थान के साथ एम.कॉम. की उपाधि प्राप्त की और अपने पारिवारिक व्यवसायों के प्रबंधन से सम्बद्ध होती चली गईं। वर्तमान में श्रीमती बूब कम्पनी "बूब होटल्स एण्ड रिसॉर्ट्स प्रा.लि." की डायरेक्टर हैं। यह कम्पनी चंद्रा इन, चंद्रा इंपीरियल तथा चंद्रा ग्रांड जैसे प्रतिष्ठित होटलों का संचालन कर रही हैं।

समाजसेवा ने भी दिलाया सम्मान

अपनी व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद श्रीमती बूब समाजसेवा में अपना योगदान देने में पीछे नहीं हैं। आप श्रीहनुमान कृपा चेरिटेबल ट्रस्ट की ट्रस्टी के रूप में विभिन्न समाजसेवी गतिविधियों में योगदान दे रही हैं। इसके साथ ही आप जोधपुर में कई स्थानों पर प्याऊ का संचालन करते हुए गरीब व जरूरतमंदों को चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध करवा रही हैं। सेवा सदन में भी कमरों का निर्माण करवाया। लायंस क्लब जोधपुर द्वारा नेत्र व स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन भी किया जाता रहा है। इस क्लब की आप सचिव व अध्यक्ष रही हैं। विभिन्न धार्मिक आयोजनों में भी अहम भूमिका निभाई। माहेश्वरी समाज के जनवरी 2019 में आयोजित महाधिवेशन के 'नीलकंठ' कार्यक्रम में अहम भूमिका निभाई। विभिन्न कार्यक्रमों में वक्ता तथा संचालक की भूमिका भी निभाती रही हैं।

"हमेशा रहें सकारात्मक"

श्रीमती बूब जीवन की सफलता का सूत्र बताती हुई कहती हैं, जो हमारे पास है उसका आनंद न उठाना और जो नहीं है उसके लिए गिला-शिकवा करना या अतीत के दुःख के क्षणों को याद कर विचलित रहना और भविष्य की महत्वाकांक्षाओं के स्वप्न लेना दोनों गलत है। इन दोनों मन की अवधारणा के बीच सुन्दर वर्तमान को नजर अंदाज करने के नजरियें को विराम देने का प्रयास करना चाहिये। यदि हम सकारात्मक हैं, तो खुद से जीत लेगें, क्योंकि इंसान हारता स्वयं से ही है। खुद से 'ऑल इज वैल' कहना सिखने का प्रयास करना होगा। स्थितियां हमारे बस में नहीं होती। चीजों और लोगों के साथ तालमेल यानि एडजस्ट करने की आदत डालने पर जीना आसान हो जाता है। जिन्दगी ईश्वर और कुदरत का अमूल्य तोहफा है। संवर गई तो दुल्हन और बिगड़ गई तो तमाशा है। अतः जिन्दगी के हर लम्हें, हर दिशा को शत प्रतिशत देने का प्रयत्न करना चाहिए। भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में योगदान दे रही संस्था "स्वर सुधा" की भी आप अध्यक्षा हैं। श्रीमती बूब को उनके योगदानों के लिये 15 अगस्त 2016 को जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया। लायंस इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3233 ई-2 द्वारा भी कई बार सम्मानित किया गया।

हमारे जीवन से सम्बंधित अंक सिर्फ अंक नहीं होते, बल्कि इनमें हमारे जीवन के भूत-भविष्य के कई राज छुपे होते हैं। इन्हीं अंकों से अंक ज्योतिष में होते हैं, वह भविष्य कथन जो जीवन की राह दिखाते हैं। इन्हीं अंकों से सुखी जीवन की राह दिखा रही हैं, सिलवासा निवासी गौरी भूतड़ा।

अंकों से उज्जवल भविष्य के पन्ने खोलतीं गौरी भूतड़ा

सिलवासा में अंक ज्योतिष के क्षेत्र में गौरी भूतड़ा एक ऐसा जाना माना नाम है, जो अंकों से आमजन की समस्याओं का समाधान कर रही हैं। वे नवजात शिशु के नाम, जातक का स्वास्थ्य, कैरियर, व्यवसाय के नाम, व्यक्तिगत नाम, भाग्यशाली हस्ताक्षर सिफारिशें, जीवन साथी मैच, जीवन में घटनापूर्ण अवधि, सीजेरियन समय और तारीख, भाग्यशाली (लकी) फोन नंबर, भाग्यशाली वाहन नंबर, भाग्यशाली फ्लॅट नंबर, व्यापार के लिए लकी उद्घाटन तिथियां, वास्तु मुहूर्त तिथियां और समय आदि के सम्बंध में सटिक परामर्श दे रही हैं।

बचपन से ही रहा ज्योतिष की ओर रुझान

श्रीमती गौरी भूतड़ा का जन्म महाराष्ट्र के एक छोटे से गॉव तेल्हारा में हुआ था। उनके पिता कृषि व्यवसाय करते हैं। जब वे 12 वीं कक्षा में थीं, तभी अपने पड़ोसी के पास ज्योतिष की एक किताब देखी, तो यह जानने की बहुत उत्सुक थी कि ग्रहों का मानव जाति पर कैसे प्रभाव होता है? धीरे-धीरे उनकी दिलचस्पी बढ़ने लगी और लकी डेट्स, लकी कलर्स आदि जैसी बुनियादी चीजों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। इससे उन्हें लाभ मिला और फिर उन्होंने अपने रिश्तेदारों को सलाह देना शुरू कर दिया। लेकिन पढ़ाई के दौरान उनके पास इतना समय नहीं था कि इसे पूरी तरह जान सकें। उस समय वह इस बात से पूरी तरह अनजान थीं कि इसे व्यवसाय के रूप में भी चुन सकती हैं। उन्होंने अपनी इंजीनियरिंग पूरी की और फिर शेगाँव में लेक्चरर के रूप में अपनी नौकरी शुरू की। लेकिन जब भी उन्हें समय मिलता अंको और ग्रहों के बारे में किताबें पढ़ती रहती थीं।

विवाह के बाद फिर बदला जीवन

शादी के बाद नागपुर में न्युमेरोलॉजी कोर्स करने का मौका मिला। पति की ट्रॉन्सफरेबल जॉब के कारण, श्रीमती भूतड़ा का कई नए लोगों से मिलने और अंक ज्योतिष के अनुसार उनकी समस्याओं को हल करने का अवसर मिला। जब रिजल्ट आने लगे तो विश्वास और बढ़ गया। आखिरकार उन्हें अंक ज्योतिष में कॅरियर शुरू करने का फैसला किया। जिन्हें रिजल्ट मिलते वे तुरंत अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को उनका नाम सुझाते और इस तरह ये यात्रा शुरू हो गयी।

न्यूमरोलॉजी क्या है?

न्यूमरोलॉजी (अंकशास्त्र) में नाम की स्पेलिंग का बहुत महत्व है। अंक शास्त्र के अनुसार यदि स्पेलिंग रखी जाती है, तो उसकी सफलता अधिक मानी जा सकती है। सभी वॉलीवूड स्टार और मूव्हीज में लकी नाम के लिए इस विधा का उपयोग किया जाता है। जैसे बिग बॉस में GG अजय देवगन के नाम में Devgn 'A' को कम किया, इसी प्रकार पद्मावती तथा टीवी प्रोड्यूसर एकता कपूर भी अपने सिरियल के टाइटल में न्यूमरोलॉजी का उपयोग करती है।

उनका कहना उनकी जुबानी

श्रीमती गौरी भूतड़ा कहती हैं यह संख्या भाषा समझने में आसान है और हम इससे एक आनंदमय जीवन का आनंद ले सकते हैं, यदि हम जान सकें कि अपने लकी नंबर्स को कैसे यूज करें। पिछले 3 साल से मैं अनुमान लगा रही हूँ कि आने वाला साल कैसा रहेगा और मेरी सफलता का अनुपात ८० से ९० प्रतिशत है। बहुत से लोग लाभान्वित हो रहे हैं और एक सुखी जीवन जी रहे हैं। यही मेरी सच्ची उपलब्धि है। संपर्क- gouribhutada@gmail.com

महिला दिवस के अवसर पर समाज के सभी नारी शक्ति का अभिनंदन

श्रीमती उषा जी सोडाणी

के मध्यप्रदेश पश्चिमांचल माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई

आपके नेतृत्व में प्रदेश का नाम उच्च शिखर पर हो ऐसी कामना करते हैं।

आपके सफल कार्यकाल के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कपिल ट्रेडिंग कंपनी

उज्जैन

पुरुष आधिपत्य वाले क्षेत्र में महिलाओं को अपना स्थान बनाने में कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। यह संघर्ष और भी कड़ा हो जाता है, जब इसमें उम्र भी बाधक बन जाती है। लेकिन ऐसी सभी बाधाओं को परास्त कर ज्योतिष-वास्तु के क्षेत्र में उम्र के 45वें पड़ाव पर अपनी ज्योतिर्विद के रूप में यात्रा प्रारम्भ करने वाली जयसिंहपुर जिला-कोल्हापुर (महा.) निवासी अनुसूया मालू वास्तव में सिर्फ ज्योतिष की ही नहीं बल्कि प्रेरणा की ज्योति से भी कम नहीं हैं।

ज्योतिष ज्ञान की ज्योति

अनुसूया मालू

समाजसेवा का क्षेत्र हो या ज्योतिष - वास्तु आदि की बात, जयसिंहपुर जिला-कोल्हापुर (महा.) में जब भी इन क्षेत्रों के अग्रगण्य लोगों की चर्चा होती है, तो उसमें समाज सदस्य संजय मालू की धर्मपत्नी 56 वर्षीय अनुसूया मालू का नाम अत्यंत सम्मान से लिया जाता है। ज्योतिर्विद, वास्तुविद् व हस्तरेखा विशेषज्ञ के रूप में उनकी पहचान सम्पूर्ण महाराष्ट्र में एक ऐसी ज्योतिष व वास्तुविद् के रूप में है, जो इस क्षेत्र में अपने गहन अध्ययन से विश्वास का दूसरा नाम बन गई हैं। उनके प्रति विश्वास का अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि उनका प्रधान कार्यालय तो जयसिंगपुर जिला-कोल्हापूर में कार्यरत हैं ही, इसके साथ इचलकरंजी, सांगली, कोल्हापुर व पुणे में भी उनके परामर्श कार्यालय 'महालक्ष्मी ज्योतिष' सफलतापूर्वक कार्यरत हैं। अपने इन सभी कार्यालयों द्वारा उन्होंने अपने इस परामर्श को 'कार्पोरेट लूक' तो दिया है, लेकिन अपनी इस सेवा को विशुद्ध व्यवसाय कभी नहीं बनने दिया।

उम्र के 45वें पड़ाव पर शुरूआत

ज्योतिष में भास्कराचार्य जैसी उच्च उपाधि प्राप्त स्व.श्री मिठुलालजी दाड के यहाँ 18 सितम्बर 1966 को जालना में जन्मीं श्रीमती मालू की इस गूढ़ ज्ञान की ओर बढ़ने की यात्रा अत्यंत रोचक है। श्रीमती मालू को बचपन से पढ़ाई का शौक था लेकिन 24 नवम्बर 1986 को जल्दी विवाह होने के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर सकी। फिर पारिवारिक जिम्मेदारियों में ऐसी व्यस्त हुई कि कुछ करने का अवसर ही नहीं मिला। लेकिन उनके अन्तर्मन में उच्च शिक्षा ग्रहण करने की कसक बराबर बनी हुई थी। इसी के चलते पति की प्रेरणा से आखिरकार 45 साल की उम्र मे पढ़ाई पुनः शुरू की और अपना ग्रेजुएशन कंप्लीट किया। इसके बाद जीवन ने नया मोड़ लिया। उनकी रूचि ज्योतिष - वास्तु आदि के क्षेत्र में थी। अतः वर्ष 2009 में हस्तरेखा शास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर वर्ष 2011 में वास्तुविशारद तथा वर्ष 2012 में ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने भास्कराचार्य तक शिक्षा प्राप्त की।

उनकी जुबानी उनकी कहानी

श्रीमती मालू बताती हैं कि गुरुजी को शंका थी, मैं एक माहेश्वरी नारी भास्कराचार्य नहीं बन पाऊंगी। पर मेरी कठोर मेहनत और समर्पित लगन को देखकर वे भी हतप्रद रह गये। मैं अव्वल नंबर सें पास होकर अपनी लगन से पढ़ाई पूरी करती हुई आगे बढ़ती ही रही। 8 साल की पूरी पढ़ाई की और आचार्य तथा भास्करचार्य पद लेने के बाद 'आर्ट ऑफ लिविंग' बैंगलोर आश्रम में मंत्र शास्त्र दीक्षा लेते हुए, ध्यान, प्राणायाम एवं ब्लेसिंग कोर्स को पूरा किया। वर्तमान में वैदिक धर्म संस्था से जुड़कर भी कार्यरत हूँ। अभी तक ज्योतिष शास्त्र में मंत्रों का महत्व, सुखी जीवन के सूत्र तथा ज्योतिषशास्त्र का हमारे जीवन में महत्व आदि जैसे विशिष्ट विषयों पर श्रीमती मालू अपने व्याख्यान भी दे चुकी है।

समाज व परिवार भी साथ-साथ

श्रीमती मालू अपनी इस ज्योतिष यात्रा में समाज व परिवार की जिम्मेदारी से भी बिल्कुल दूर नहीं हुई है। आप महिला संगठन से लम्बे समय से जुड़ी रही हैं। महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन में सचिव रहीं हैं एवं वर्तमान में अध्यक्ष के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रही हैं। उनका एक पुत्र तथा एक विवाहित पुत्री का पौत्र-पौत्री तथा नाति-नातिन आदि से भरापूरा परिवार है, जिसकी जिम्मेदारी भी वे सफलतापूर्वक सम्भाल रही हैं। उनके इन्हीं योगदानों को देखते हुए उन्हें महिला संगठन द्वारा अभी तक ज्ञान, टेलेंट, आदर्श नारी तथा आदर्श माता आदि कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है।

British Youth International College

WORLDS 1ST GAME BASED
ABACUS MATHS LEARNING

British Youth International College

In Association with Maheshwari Patrika

Brings you an Opportunity to Believe in yourself and be your Own Boss (Social Corporate Responsibility)

- **Education Franchise**
- **Based In United Kingdom**
- **Training And Support Provided**
- **World's First Abacus Maths Learning App**
- **Run By 99% Women Workforce**
- **0% Franchise Fee**
  (Only for International Women's Month)
- **Complete Guidance Provided**
- **Earning Potential 1-50 Lc & more**
- **Could Start From Home**

Promo code - BYITC-MP2023
Valid only untill 1st - 31st March

British Youth International College Offers

- Abacus Maths
- English language
- Science Classes For 4 To 14 Years
- Coding
- Cyber Security

Age Group 4 To 14 Years

Based in
- London
- Birmingham
- Manchester
- Glasgow.

byitc.org | supermaths.co.uk

Terms & Conditions Applied

अबेकस गणित की वह विधा है, जिससे चुटकियों में बड़ी-बड़ी गणनायें आसानी से हो जाती है लेकिन चुनौती है तो यह कि यह बच्चों को नीरस लगता है। डॉ. रश्मि मंत्री ने इसी समस्या को आसान बनाने के लिये एक एप विकसित किया जो खेल-खेल में बच्चों को अबेकस सीखा देता है।

जिन्होंने बनाया गणित सिखाने का एप
डॉ. रश्मि मंत्री

"एक मां और उद्यमी डॉ. रश्मि मंत्री ने ग्लासगो यूएसफ में एक दुनिया का पहला गेम ऐप विकसित किया है जो बच्चों को गणित सीखने में मदद करता है। डॉ. रश्मि मंत्री उम्मीद करती हैं कि उनका यह ऑनलाइन टूल स्कूली बच्चों के लिए चुने जाने वाला गणित सीखने का श्रेष्ठ एप्लिकेशन बन जाएगा। वे कहती हैं, "मैं बच्चों को गणित में आत्मविश्वास प्रदान करना चाहती हूँ। डॉ.मंत्री ने अबेकस सिखाने के लिए एक अबाकस का उपयोग करने के बाद एक वैश्विक गणित सीखने के व्यवसाय 'ब्रिटिश यूथ इंटरनेशनल कॉलेज' की स्थापना की।"

प्राचीन गणना पद्धति है अबेकस

वे बताती हैं ऊंगलियाँ, पेबल केलकुलेटर और कंप्यूटर इतिहास में बड़े नंबरों को गणना करने के लिए प्रयुक्त हुए हैं- लेकिन अबेकस एक ऐसी उपकरण है जो हजारों वर्षों के टेस्ट से गुजर गया है। ईसा से लगभग 2500 वर्ष पूर्व बाबिलोनियन्स द्वारा पहली बार इसका इस्तेमाल किया गया था, जो एक प्राचीन मध्य पूर्वी सभ्यता थी। अबेकस का इस्तेमाल विशाल संख्याओं से जुड़े गणितीय हिसाब-किताब करने के लिए मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने में बहुत ही प्रभावी माना जाता है। अबेकस एक प्राचीन गणना उपकरण है, जिसका आजकल अधिक इस्तेमाल नहीं होता है। कारण है कि आज जैसा कम्प्यूटर एक वैज्ञानिक एकेडमिक और सॉफ्टवेयर ट्रेनर है। "लेकिन अबेकस छात्रों को बड़े गणितीय हिसाब को मानसिक रूप से कैलकुलेट करना सिखाता है, बिना कोई कैलकुलेटर या कागज का इस्तेमाल किए। जब मेरा बेटा ध्रुव एक अबेकस का उपयोग करके गणित सीखता था, तब वह कैलकुलेटर से भी तेजी से गणितीय हिसाबों को कर सकता था।

ऐप ऐसे काम करता है

उनका नया ऐप दुनिया का पहला गेम आधारित अबेकस एप्लिकेशन है। इसकी चमकदार रंगीन ग्राफिक्स और कैरेक्टर डिजिटल गेम से प्रेरित है और बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में आकर्षित करने के लिए डिजाइन किया गया है। रश्मि कहती हैं कि बच्चे हमारे गेम आधारित इंटरफेस को पसंद करते हैं। गेम आधारित सीखने को लेकर तैयार हमारी ऐप का तत्काल प्रभाव बच्चों पर होता है और हम हमेशा उनकी आँखों में वाउ फैक्टर देख सकते हैं। वे त्वरित रूप से खुशी से जुड़ जाते हैं और क्लास का आनंद लेते हैं। नए गेमों के प्रस्ताव के साथ हमने उनके समय पर होमवर्क जमा करने में विशेष सुधार देखा है, जिसे शिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है।

कोविड के दौर में हुआ साकार

कोविड-19 द्वारा उत्पन्न अस्थायी स्थिति के साथ-साथ उनके कम्प्यूटिंग बैकग्राउंड ने ऑनलाइन एप्लिकेशन के पूर्ण होने को गति दी। हालांकि उन्होंने 2017 में प्रोटोटाइप विकसित करना शुरू किया था। ग्लासगो मुख्यालय स्थित ब्रिटिश यूथ इंटरनेशनल कॉलेज द्वारा रश्मि का सुपरमैथ्स कोर्स 2015 में लॉन्च किया गया था ताकि बच्चे गणित सीख सकें। इसके द्वारा नेशनल मैथ्स चैलेंज का आयोजन न केवल नियमित रूप से किया जाता है, बल्कि हाल ही में ऑनलाइन सुपरमैथ्स ओलंपियाड ने दुनिया भर के 4 से 14 साल के आयु वर्ग के बच्चों को भारी संख्या में आकर्षित भी किया। इसने Fuehepeye ने अंग्रेजी, प्रोग्रामिंग और साइबर सुरक्षा सिखाने में भी विस्तार किया है और हजारों छात्रों को वैश्विक रूप से ऑनलाइन कोर्स प्रदान किया।

फ्रैंचाइजी बनने का अवसर

कॉलेज दुबई और श्रीलंका सहित 10 वैश्विक फ्रैंचाइज चलाता है और हाल ही में हैंपशायर के बेसिंगस्टोक में अपनी पहली यूके फ्रैंचाइज की शुरुआत की है। आने वाले महीनों में इसके अतिरिक्त यूके में भी फ्रैंचाइजी की उम्मीद है। यह फैंचाइजी के रूप में 99 प्रतिशत महिलाओं द्वारा ही संचालित है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला माह के अंतर्गत शून्य प्रतिशत फ्रैंचाइजी शुल्क में इससे जुड़ने का अवसर समाज की महिलाऐ ले सकती हैं। यूके में स्थित इस संस्थान द्वारा फ्रैंचाइजी को ट्रेनिंग, टीचिंग मटेरियल, लर्निंग एप व मार्गदर्शन प्रदान किया जाऐगा। इसे अपने घर से प्रारम्भ कर 1 से 50 लाख तक रुपये आय अर्जित की जा सकती है।

मन में इच्छा हो और दृढ़ संकल्प हो तो क्या नहीं हो सकता? बस इसी को सिद्ध कर रहीं है, मुम्बई की नेहा बिन्नानी, जो पेशे से बैंकिंग से जुड़ी रहीं लेकिन उनकी लेखनी अनवरत चलती ही रही।

डिजिटल दुनिया की रचनाकार
नेहा बिन्नाणी

मुंबई प्रवासी बीकानेर की बहू नेहा बिन्नाणी की कहानियां व कविताएं इन दिनों नामचीन एप ''मॉम्सप्रेस्सो'' पर धूम मचा रही है। नेहा की एक नवीन रचना 'वे दिन जब सारा पड़ोस अपना घर होता था' को इस एप पर एक लाख से अधिक लोग पढ़ चुके हैं जबकि इनकी पहली वाली रचना 'ॐ इग्नोराय नमः' को बारह लाख पच्चीस हजार से ज्यादा लोग अब तक पढ़ चुके हैं। उन्हें अब बधाइयां देने वालों का तांता लग गया है।इनकी रचनायें माहेश्वरी पत्रिकाओं के साथ दैनिकों में भी लगातार छप रही हैं।

ऐसे बड़े लेखन की ओर कदम

नेहा के पति सुरजकुमार बिन्नाणी मुम्बई में कल्पतरू नामक कंपनी में डीजीएम हैं जबकि नेहा खुद बैंकिंग व्यवसाय से जुड़ी रही हैं। नेहा बिन्नाणी का जन्म कोटा में हुआ था। कोटा से कॉमर्स में कॉलेज शिक्षा पूरी करने के दौरान ही उनका साहित्य से जुड़ाव हुआ। वे एम.कॉम तथा एम.बी.ए. करने के पश्चात् बैंकिग व्यवसाय से जुड़ गई। फिर इस व्यवसाय से हटने के बाद गिफ्ट आयटम के क्रिएटिव व्यवसाय से जुड़ गई। उन्होंने कई रचनाएं लिखी मगर उनको नाम / ख्याति हिन्दी डॉट मॉम्सप्रेस्सो नामक एक एप से मिली। इस एप पर नेहा ने दर्जनों रचनाएं पोस्ट की हैं। अब उनको पढ़ने वालों की संख्या का आंकड़ा एक करोड़ बत्तीस लाख को पार कर गया है। नेहा ने बताया कि वे कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कहानियों से बहुत प्रभावित हुई। मुंशी जी की कहानी लिखने की शैली ने ही उन्हें कहानियां लिखने के लिए प्रेरित किया। वे मुंशी प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों व उपन्यासों को पढ़ चुकी हैं। खाली समय होने पर उन्हें कहानियां लिखने व पढ़ने का भी शौक है। श्रीमती बिन्नाणी ने बताया कि वे जल्द ही अपना एक कहानी संग्रह प्रकाशित करवाना चाह रही हैं।

परिवार से भी मिला प्रोत्साहन

नेहा बिन्नाणी पहले कोटा व बाद में मुंबई में बैंकों में सेवाएं दे चुकी हैं। मगर इन दिनों वे पूर्णतया कहानियां लिखने में व्यस्त है और उनकी कहानियां हमारे समाज के ईद गिर्द माहौल पर ही लिखी हुई है। यही वजह है कि उनकी कहानियों को लोग ज्यादा से ज्यादा पसन्द कर रहे हैं। उनके ससुर गोवर्धनदास बिन्नाणी उर्फ राजा बाबू स्वयं एक लेखक हैं। वे बरसों तक कोलकाता में रहे व नामचीन आर्थिक सलाहकार व वित्तीय सलाहकार हैं तथा कोलकाता स्थित एक बिरला कम्पनी से लेखापाल पद से सेवा निवृत हुये हैं। वे स्वयं समय-समय पर आर्थिक सुधार हेतु, सामाजिक, धार्मिक, समसामयिक विषयों पर आलेख लिखते रहते हैं।

नारी की गरिमा का वर्णन हमारी संस्कृति में तो हमेशा किया जाता रहा है, लेकिन फिर भी आम नारी अपने अधिकारों व अपनी क्षमताओं से अनजान ही हैं। ऐसी ही नारी के मन में अपनी समाजसेवी गतिविधियों द्वारा स्वाभिमान व आत्मनिर्भरता के भाव उत्पन्न कर रही हैं, उषा सोडानी। श्रीमती सोडानी को पश्चिमी म.प्र. प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष की जिम्मेदारी भी प्राप्त हुई है।

नारी के सशक्तिकरण की 'उषा'

उषा सोडानी

उज्जैन निवासी उषा सोडानी वर्तमान में वर्ष 2020 से पश्चिमी म.प्र. माहेश्वरी महिला संगठन में प्रदेश मंत्री की जिम्मेदारियाँ निभा रही थीं उन्हे गत दिनों अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी प्राप्त हुई हैं। इसके अन्तर्गत प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों का वे सफलतापूर्वक संचालन कर रही हैं। श्रीमती सोडानी का जन्म संयुक्त परिवार में हरदा जिले के छोटे क़स्बे खिड़कियाँ में मूँदडा परिवार में हुआ। ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी लेकिन बी ए तक शिक्षा प्राप्त कर 1984 में शादी हो उज्जैन के सोडानी परिवार में बहू बन कर आ गई। गृहविज्ञान, समाज शास्त्र जैसे विषयों को पढ़कर, अपने आसपास के परिवारों को देखते मन में एक लक्ष्य था कि घर की ज़िम्मेदारियों का निर्वाह करते अपने समाज की एवं अन्य ज़रूरतमंद महिलाओं के बौद्धिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक विकास में सहायक बन सकें। अपने कार्यों से एक अलग पहचान स्वयं की बने। बच्चों की परवरिश, शिक्षा की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी के कारण थोड़े वर्ष बाद अपना कर्मक्षेत्र सामाजिक संगठन को चुन स्थानीय महिला संगठन में 1999 में सदस्यता ली। पदाधिकारियों के मार्गदर्शन में सक्रियता से संगठन के कार्यों की ज़िम्मेदारी निभानी प्रारम्भ कर दी।

सेवा का चहुंमुखी दायरा

2002 में प्रचार मंत्री के पद से शुरू हो स्थानीय संगठन में सचिव पद तक धार्मिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक आयोजन की संयोजिका बन महिलाओ को उनकी कला से रूबरू कराया, आत्मविश्वास बढ़ाया। सामाजिक संगठन के कार्यों के साथ ही टूटते परिवारों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु उज्जैन महिला थाना के परिवार परामर्श केंद्र में काउंसलर चयनित हो निरंतर कार्य करते पिछले 5 वर्षों से महिला बाल विकास के सखी (OSC) केंद्र में भी कार्यरत है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में वालंटियर बन आंगनवाड़ियों, श्रमिक बस्तियों, विद्यालय, कालेज के विद्यार्थियों को शासन द्वारा मिलने वाली न्यायिक सुविधाओं की जानकारी, न्याय दिलाने में सहायता भी प्राथमिकता से दिलाई जा रही है। नेशनल लोक अदालत में न्यायाधीश के साथ बैठ केस काउंसलिंग का अवसर भी उन्हे मिला।

ऐसे प्रारम्भ हुई सेवा यात्रा

वर्ष 2008 में उज्जैन जिला महिला संगठन में सदस्यता ली और 2009 में प्रथम सामूहिक विवाह में स्थानीय सचिव रहते महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 2010 में प्रदेश अध्यक्ष अनु बाहेती के कार्यकाल में प्रदेश संगठन की सदस्यता प्राप्त की। ओंकारेश्वर में चुनरी महोत्सव कार्यकारिणी बैठक के अवसर पर उज्जैन जिले से शोभायात्रा का नेतृत्व करते बैनर प्रेजेंटेशन में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिला संयुक्त मंत्री के पद पर रहते प्रदेश के 2 दिवसीय अधिवेशन-आगाज़-2014 में संयोजक बन कोष एकत्र एवं आवास व्यवस्था की ज़िम्मेदारी अपनी टीम के साथ सम्भाली। वर्ष 2016 में सृजन सेतु इंदौर में शोभा यात्रा में किरण बेदी बन आकर्षण का केंद्र रहीं। वर्ष 2010 में प्रदेश संगठन की सदस्यता ली। गोहाटी रा. काव्य पाठ प्रतियोगिता के लिये जिले की रश्मि लोया को लगातार प्रोत्साहन प्रदान किया जिससे प्रथम स्थान प्राप्त कर जिले का नाम रोशन किया। वर्ष 2017 में प्रदेश आंचलिक उपाध्यक्ष चयनित हुई और प्रदेश अध्यक्ष अरुणा बाहेती के नेतृत्व में संगठन के कार्यों को टीम के साथ पूर्ण किया। एकादश सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगरानी के शपथ विधि- समारोह दो दिवसीय संकल्प बैठक उज्जैन में स्वागत मंत्री व यातायात समिति की संयोजक की भूमिका निभाई। "सिद्धि एक प्रसिद्ध प्रकल्प" महेश नवमी पर गुलाब शरबत द्वारा विश्व रिकार्ड बनाने में संगठन की प्रतिभागिता निभाई। दूसरे विश्व रिकार्ड समाधान में 11 पैड वेण्डिंग मशीन जिले में लगवाने में अहम भूमिका निभाई।

सभी के सहयोग का परिणाम

गत दिनों पश्चिमी म.प्र. माहेश्वरी महिला संगठन की बैठक में श्रीमती सोडानी सर्वसम्मति से प्रदेशाध्यक्ष चुनी गई। इस उपलब्धि पर श्री सोडानी ने चर्चा में कहा कि इतना सब करते जो संतोष मिलता है, उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। मेरी इस सेवा यात्रा में मेरा सबसे बड़ा सहयोगी मेरा परिवार तथा मेरी देवरानी कविता रही है। जिनके कारण जिम्मेदारियों का निर्वहन होता है। अब जब प्रदेश में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है, तो सभी के सहयोग से संगठन का नाम ऊँचाइयों पर पहुचाना है।

शिक्षा का उद्देश्य विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता प्राप्त करना है, अपनी सोच का दायरा विकसित करना है, आत्मविश्वास को बढ़ाना है। सबसे महत्वपूर्ण यदि एक महिला शिक्षित होगी तो परिवार, समाज व राष्ट्र स्वयं ही शिक्षित व जागरूक होगा। अपने इन्हीं आदर्शों के साथ नारी सशक्तिकरण में शिक्षा के द्वारा अपना योगदान दे रही हैं, ब्यावर (राज.) निवासी डॉ. सुलक्ष्मी तोषणीवाल।

नारी सशक्तिकरण की ज्योति जलाती

डॉ. सुलक्ष्मी तोषनीवाल

महिला सशक्तिकरण की कल्पना को साकार करती डॉ. सुलक्ष्मी तोषनीवाल वर्तमान में सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर (राज.) में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। उन्होंने अपने प्रोफेशनल जीवन का प्रारम्भ विपरीत पारिवारिक परिस्थितियों के बीच लगभग 35 वर्ष की उस उम्र में किया जहाँ व्यक्ति के जीवन में स्थिरता आ जा जाती है। परन्तु इन्होंने उस समय एम. कॉम., नेट, पीएच.डी. आदि पढ़ाई प्रारम्भ कर राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित कॉलेज व्याख्याता परीक्षा उत्तीण की। इनका मानना है कि यदि अपना लक्ष्य महान है तो उम्र व विपरीत परिस्थितियों की बाधाओं को भी आसानी से दूर किया जा सकता है। आज ये स्वयं ही महिला सशक्तिकरण का सशक्त व जीवन्त उदाहरण हैं। और स्वयं सभी को विद्या अर्जन हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित कर रही हैं।

कई संस्थाओं से सम्बद्ध

डॉ. तोषणीवाल विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर महिलाओं को शिक्षा के लिए प्रेरित कर रही हैं। इस हेतु ये विभिन्न मंचों से जैसे माहेश्वरी समाज, भारत विकास परिषद, मातृ शक्ति दुर्गा वाहिनी, लायन्स क्लब, श्री वर्धमान शिक्षण समिति व श्री गोदावरी शिक्षण समिति द्वारा संचालित विभिन्न संस्थाओं, आर्य समाज आदि विभिन्न मंचों द्वारा महिलाओं को शिक्षा व उद्यमिता हेतु निरन्तर प्रेरित व जागृत कर रही हैं। उनके लेख विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल व पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं जो महिला सशक्तिकरण व उद्यमिता तथा ग्रीन मार्केटिंग (पर्यावरण रक्षा) से सम्बन्धित हैं। कई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भी अपने विचारों को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है।

पर्यावरण व संस्कृति की रक्षा

महिला सशक्तिकरण के साथ-साथ ये पर्यावरण रक्षा हेतु वृक्षारोपण के लिए भी सभी को प्रेरित करती हैं। ये विद्यार्थियों को साथ लेकर वृक्षारोपण करती है ताकि उनमें पर्यावरण चेतना विकसित हो। आजादी के अमृत महोत्सव के जश्न में भी परमार फाउण्डेशन लामाना में 75 नीम के वृक्ष लगाकर वृक्षारोपण का पुनीत कार्य किया। आपकी पुस्तक 'भारतीय सांस्कृतिक प्रतिमानों का व्यावसायिक महत्व' में आपने स्वास्तिक, माँ दुर्गा, शिवजी, नीम, पीपल व वृट वृक्षों आदि द्वारा विभिन्न भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों का महत्व समझाया। उनका मानना है कि ये केवल धार्मिक महत्व ही नही है वरन् व्यावसायिक महत्व के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण व पर्यावरण रक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। डॉ. तोषणीवाल लोगों को पर्यावरण रक्षा हेतु वृक्षारोपण व व्यवसाय तथा दैनिक जीवन में पर्यावरण के अनुकूल उपायों को अपनाने पर जोर दे रही हैं। हरित विपणन को अपनाने हेतु भी प्रेरित करती है।

नारी-कर्तव्य और भावना का संगम

वंदना भंडारी, सूरत

''आग नही चिंगारी,मै भारत की नारी कर्तव्य और भावना का संगम''

विश्व महिला दिवस पर मुझे यह मौका मिला है कि मैं भारतीय नारी होने के गौरव, सम्मान और अस्तित्व का आंकलन कर सकूं। विश्व भर की महिलाएँ प्रगति पथ पर पहुँच चुकी हैं। वह हर कदम पर पुरुषों पर अपनी छाप बनाने के लिए संघर्ष भी कर रही है। नारी अग्नि का विध्वंसकारी रूप न होकर एक चिंगारी है जो सकारात्मक सृजन करती है। भारत मे सामाजिक कुरीतियों के चलते नारी स्वयं ही अपनी बहन बेटी पर जुल्म करती है। वह भी कही न कही इस बात को मानने लगी है कि अब हवा का रुख बदल गया है। जो शोषित हैं वो भी सहनशीलता, त्याग और समर्पण की भावनाओ से अपने परिवार को पालती हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में हमारे गाँव की बहादुर नारियां मीलो दूर से पानी लाती हैं। खेतों में काम करती हैं, अपने बच्चो को ममत्व और परिवार को प्रेम और आदर देती हैं। क्या कहीं भी उन कर्मठ, सरल और मृदुभाषी नारियों को शिकायत करते देखा है? नही क्योंकि जहाँ कर्त्तव्य और भावनाएं दोनों का संगम है, वही है भारतीय नारी।

आज की भारतीय नारी हर क्षेत्र में उत्कृष्ट है। समाज परिवार से लेकर अंतरिक्ष तक भारत की मिट्टी की खुशबू हमे भारतीय नारी होने का सम्मान अनुभव करवाती है। कल्पना चांवला, सुनीता विलियम्स जहाँ भारत को ब्रह्मांड में पहुँचा कर आई है। जहाँ एक और वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है, वहीं पुरुष प्रधान क्षेत्र में भी अपनी जीत का ऐलान कर सकती है। आज भारतीय नारी होने का गौरव मुझे यह हर्ष देता है कि इस सब्र में मैं भी एक हिस्सा हूँ। अपने इस अस्तित्व और प्रण के जरिये मै यह निरंतर कामना करती रहूंगी कि मेरी उन सभी बहनो ओर बेटियो को ईश्वर अपनी कृपा का पात्र बनाकर सत्कर्म, परिश्रम और प्रगति की राह दिखाये। आज के आधुनिक युग मे इस सुकोमल और सुंदर कृति को सबल व सशक्त बनाना और भी अनिवार्य है। जो संघर्ष हमारी महान महिलाओं ने किए हैं उनको धूमिल किये बिना आइये, विश्व महिला दिवस पर भारतीय नारी की छवि को और अधिक गौरवान्वित करें क्यो कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

'नारी तुम तकदीर हो, अपने घर परिवार की,भारत माता के अरमान की, बच्चो की पहचान की आग नही चिंगारी हूँ, मैं भारत की नारी हूँ,

नागपूर निवासी ज्योत्स्ना जाजू संगीत के क्षेत्र की एक ऐसी विशिष्ट पहचान है, जो न सिर्फ अपनी सूर-लहरी से बल्कि अपने संगीत प्रशिक्षण से देश-विदेश में संगीत का जादू फैला रही हैं। विश्व के कई देशों में इनके शिष्य है, जो ऑनलाईन प्रशिक्षण ले रहे हैं, और जब वे भारत भ्रमण पर आते हैं तो प्रत्यक्ष भेटकर उनसे प्रशिक्षण प्राप्त करने को अपना सौभाग्य समझते हैं।

'संगीत सुधा की स्वर लहरी में डूबी गहरी-गहरी'

ज्योत्सना जाजू

WOMAN OF THE YEAR 2023 विजेता

वर्तमान में ज्योत्सना जाजू संगीत की दुनिया में एक प्रतिष्ठित नाम बन गई है। उनकी मधुर आवाज व सुरताल के जितने भी मुरीद है उससे कम उनके संगीत प्रशिक्षण के भी नहीं। उनकी संगीत 'बरखा आर्ट अकॅडमी' को 32 साल पूरे हो चुके है और अपनी संगीत यात्रा में हजारो विद्यार्थियों को प्रशिक्षित कर चुकी हैं। कोरोना काल में जब संपूर्ण जीवन घर की चार दिवारी में थम गया था तब पति मनोज जाजू की प्रेरणा से ऑनलाईन संगीत प्रशिक्षण की शुरूआत की और कोरोना के बाद भी ये प्रणाली सबको सुविधाजनक होने के वजह से अविरल चल रही है।

अबोध अवस्था सें शुरू संगीत यात्रा

श्रीमती जाजु का जन्म आर्वी (जि. वर्धा) में श्री सुंदरलाल एवं स्व. श्रीमती सरोजदेवी केला के यहाँ हुआ। आर्वी जैसे छोटे से गाँव में रहते हुए संगीत की शुरुआत अनजाने ही मात्र 3 वर्ष की उम्र में हुई और आज तक चल रही है। संगीत की 7 परीक्षाये सिर्फ 14 वर्ष की उम्र तक याने 9वी कक्षा तक पूर्ण हो गयी। अब आगे क्या? तो संगीत चलता रहे इसलिये सितार, दिलरूबा जैसे वाद्य भी सीखे। बी.ए. में प्रायवेट संगीत विषय लेकर महारत हासिल की पर इतने में कहां मन संतुष्ट था आगे संगीत में एमए करने की चाह मे अमरावती अपने चाचाजी के यहाँ रह कर अपनी शिक्षा संपन्न की।

उच्च शिक्षा के प्रति दृढ संकल्प

श्रीमती जाजू अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता- पिता, बुआजी एवम् शत प्रतिशत अपने पति मनोज कुमार जाजु को देती हैं। जब आप एमए फायनल में थी उसी दौरान आपका विवाह नागपुर प्रतिष्ठित श्री लक्ष्मीनारायण जाजू के सबसे छोटे सुपुत्र मनोजकुमार के साथ हुआ। संयुक्त परिवार में समय व्यतित हो रहा था पर मन में संगीत रचा बसा चैन नही लेने दे रहा था। सो आगे की शिक्षा के लिये मुंबई प्रस्थान करने के लिये मनोजजी एवम् ससुरजी का विशेष प्रोत्साहन मिला और मुंबई प्रस्थान किया वहाँ चर्चगेट एसएनडीसी युनिवसिटी में 2 साल तक एमफिल (मास्टर ऑफ फिलॉसॉफी) इन म्यूजिक की डिग्री हासील की। मुंबई का सफर इतना आसान नही था पर मन में लगन हो तो नामुमकीन भी मुमकीन हो जाता है। वहाँ जयपुर अत्रोली घराने की सुप्रसिद्ध गायिका स्व. पद्मावती शालीग्राम जिन्हे दादासाहेब फाल्के अर्वाड मिला हुआ उनसे संगीत सिखने का अवसर प्राप्त हुआ और कॉलेज में प्रख्यात गायिका सुश्री प्रभाताई आत्रे से मार्गदर्शन मिला। ये जीवन में मिली संगीत की सुवर्णसंधी थी। एमफिल के बाद जीवन में इनकी बिटिया बरखा रानी आयी। बस यहीं से फिर नागपुर प्रस्थान हुआ। क्योंकि बच्चों को परिवार का प्यार मिले पर साथ में जॉब की खुशखबरी भी मिली, यवतमाल में अमोलकचंद सिनियर कॉलेज में। पर नौकरी में मन नही लगा क्योंकि संगीत को लेकर मन में कुछ अलग कल्पना थी तो जॉब में लिमिटेशन थे। इसलिये फिर से नागपुर आ गये। फैमेली बढ़ी बेटा आया। दो बच्चों को प्रोफेशन के साथ संभालना आसान न था।

फिर लिया जीवन ने नया मोड

दिल्ली की एमएमवी म्यूजिक कम्पनी के साथ कॉन्ट्रैक्ट साइन किया पर उस समय नागपुर में बच्चों को अकेले छोड़कर दिल्ली बार-बार जाना थोड़ा मुश्किल हो रहा था। अपने कॅरियर के लिये बच्चों की जिंदगी से समझौता उन्हें मंजूर नही था। तब तय किया कि जीवन में संगीत रहना जरूरी है फिर तरीका कोई भी अपनाया जा सकता है वो दिन आपके जिंदगी का टर्निंग पाईंट था। बस यहीं से टीचिंग में आ गई। मनोजजी चाहते थे कि आप अकॅडमी शुरू करो बस नयी राह नयी चाह शुरू हो गयी। मात्र एक स्टूडेंट से धरमपेठ नागपुर में क्लास स्टार्ट की माँ सरस्वती की कृपा से आज 100 स्टूडेंट हैं। 25-25 साल से स्टूडेंट अभी तक जुड़े हुए हैं। आज भी वे हिंदू त्योहार के अनुसार भजन, गीत खुद कंपोज करके सिखाती हैं। उनका एक अनुठा स्टाइल है जिसमें भजन के साथ, शास्त्रीय संगीत की पकड़ मजबूत है। संगीत सिखने की कोई उम्र नही होती आप जब सोचो संगीत सिखना स्टार्ट कर सकते है। अकॅडमी में 3 साल से लेकर 80 साल तक के विद्यार्थी सिखते है। ज्योत्सनाजी का पंच वाक्य है 'जो बोल सकता वो गा सकता' तराशने वाला चाहिये। वे वॉईस डेवलपमेंट पर भी काम कर रही है। भविष्य में अपने संगीत कों थेरेपी के रूप में स्थापित करना चाहती है।

संगीत की दुनिया में बिखेरी सुर-लहरी

श्रीमती जाजू ने अपना पूरा जीवन संगीत को समर्पित कर दिया। 20 साल तक आकाशवाणी केंद्र नागपुर में अपनी प्रस्तुति दी। नेशनल टीवी, संस्कार टीवी पर भी भजन, गीत, गजल की प्रस्तुति दी। नाम संकीर्तन, कोशिश-ए-ग़जल, ब्याह रो चाँव पार्ट1, पार्ट 2, आज राधा गोविंद बनी, भजन श्रृंखला भी तैयार की, जो संगीत रसीको में अत्याधिक लोकप्रिय हुई। सफर यही नही रुकता 'श्री माहेश्वरी टाईमस' ने समाज में प्रथम बार श्री महेश वंदना को संगीतमय सीडी के रूप में वर्ष 2013 में कम्पोज करवाया, जिसमें श्रीमती जाजू ने अपनी सुमधुर आवाज दी है। यह ऑडियो सीडी पूरे भारत वर्ष में अत्यंत लोकप्रीय हुई। इसके साथ ही इनके द्वारा कंपोज किया, स्वागत-गीत इनकी मधुर आवाज में समाज में आकर्षण का केंद्र है।

मन में मानवता की सेवा की प्रबल भावना हो, तो जो भी कर्म करें वही समाजसेवा बन जाता है। इसी ध्येय वाक्य को चरितार्थ कर रही हैं, नागपुर (महाराष्ट्र) निवासी ख्यात दंत चिकित्सक डॉ. बरखा राठी।

चिकित्सा को भी बनाया समाजसेवा
डॉ. बरखा राठी

स्व. श्री विजय व श्रीमती शैली माहेश्वरी की सुपुत्री तथा ख्यात डर्मेटालॉजिस्ट डॉ. सुशील राठी की धर्मपत्नी डॉ. बरखा राठी की पहचान नागपुर में जितनी एक प्रतिष्ठित दंत रोग विशेषज्ञ के रूप में है, उतनी ही एक समाजसेवी के रूप में भी है। इसके साथ उनकी रचनात्मकता भी उनकी विशेष पहचान है। डॉ. बरखा अपने पूरे स्कूल के दिनों में एक स्कॉलर रही हैं और उन्हें बोर्ड परीक्षाओं में अकादमिक सफलता के लिए शिक्षा मंत्री द्वारा सम्मानित भी किया गया था। वह पिछले 15 वर्षों से नागपुर के एडवांस डेंटल क्लिनिक में दंत चिकित्सक हैं। उन्हें न केवल विदर्भ क्षेत्र में बेहतरीन इम्प्लांटोलॉजिस्ट में से एक माना जाता है बल्कि उन्हें उनके पेशेवर कौशल के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त है। जब उनसे उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, मेरे मरीज मुझे 'द स्माइल डिज़ाइनर' कहते हैं। यही शायद मेरे लिए सबसे अच्छी तारीफ है।

सेवा ने दिलाया सम्मान

इम्प्लांट प्लेसमेंट के लिए संशोधित फ्लैपलेस तकनीक में उनके नवाचार को स्वीकार किया गया। डॉ. राठी विभिन्न कॉरपोरेट्स और संस्थानों के साथ-साथ रेडियो चैनलों के माध्यम से दंत जागरूकता पैदा करने के लिए व्याख्यान देती रही हैं। उन्होंने कई दंत चिकित्सा शिविर आयोजित किए हैं और जूनियर दंत चिकित्सकों और कर्मचारियों के प्रशिक्षण और विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्हें जनवरी 2023 में इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरल इंप्लैन्टोलॉजिस्ट के 28 वें राष्ट्रीय सम्मेलन में इम्प्लांट प्लेसमेंट के लिए उनकी नवीन तकनीक के लिए सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रस्तुति का पुरस्कार दिया गया। इंडियन डेंटल एसोसिएशन के दूसरे सबसे सक्रिय और उत्कृष्ट डेंटिस्ट का 2023 का पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुआ। माहेश्वरी समाज नागपुर द्वारा असाधारण उपलब्धि वाले व्यक्तित्व (2023) के रूप में भी सम्मानित किया गया। फेमडेंट इंडिया ने उन्हें साल 2022 के लिए मोस्ट कॉमेंडेड डेंटिस्ट का अवॉर्ड प्रदान किया। इम्प्लाकॉन 6.0 द नेशनल इम्प्लांटोलॉजी कॉन्फ्रेंस 2022 में उनका ई-पोस्टर प्रथम पुरस्कार से सम्मानित हुआ।

रचनात्मकता में भी विशेष योगदान

डॉ. राठी 1. सौंदर्य प्रतियोगिता की प्रतिभागी तथा विदर्भ स्तर पर सर्वश्रेष्ठ मुस्कान पुरस्कार की विजेता रही है। उन्होने विभिन्न गायन प्रतियोगिताओं में कई पुरस्कार जीते हैं। उनकी कविता राष्ट्रीय पत्रिका अमर उजाला में प्रकाशित हो चुकी है। वह 'प्यारो प्यारो लागे माको अपना देश रे' नामक गीत की गीतकार, संगीतकार और गायिका रही हैं। इन्हें एक बेहतरीन पेंटर, ड्रेस डिज़ाइनर और एक बेहतरीन होम इंटीरियर डिज़ाइनर भी माना जाता है। ऐसी निपुण शख्सियत और फिर भी इतनी विनम्र, वह एक वास्तविक ICON हैं जिस पर हमारे माहेश्वरी समाज को गर्व है।

मैं

इनकी कलम से

नारी के सम्मान तथा विश्वास का प्रतीक हूं मैं,
ईश्वर के आशीष एवं वरदान की मूरत हूं मैं,
गायिका के रूप में संगीत सागर की लहर हूं मैं,
नृत्य कला की सरिता में चंचल सी धारा हूं मैं,
सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रसर रहती हूं मैं,
मेरे चंचल बेटे के लिए ममतामई छाया हूं मैं,
प्रोत्साहन देने वाले त्वचा रोग विशेषज्ञ की सहचारिणी हूं मैं,
शिक्षा मंत्री द्वारा सम्मान पाकर धन्य हो गई हूं मैं,
मुस्कुराती हूं एवं मुस्कुराने का ही संदेश देती हूं मैं,

जज्बा हो तो उम्र भी किस तरह बाधक बनने की जगह नतमस्तक हो जाती है, इसी का प्रमाण हैं जूनागढ़ निवासी 64 वर्षीय महिला एथलिट संतोष मूंदड़ा। श्रीमती मूंदड़ा अभी तक राष्ट्रीय के साथ ही कई राज्य स्तरीय पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं।

64 वर्ष की उम्र की एथलिट

संतोष मूंदड़ा

जूनागढ़ (गुजरात) निवासी संतोष मूंदड़ा की पहचान शहर में एक समाजसेवी के रूप में जितनी है, खिलाड़ी के रूप में भी इससे कम नहीं है। खिलाड़ी के रूप में उनकी ख्याति का कारण है 55 वर्ष की उम्र से जारी उनकी खेल यात्रा जो आज भी जारी है। यह वह उम्र है जिस पर आमतौर पर लोक अस्वस्थता का कारण बताते हुए घर की चार दीवारी में थम जाते हैं। लेकिन श्रीमती मूंदड़ा ने मास्टर्स एथलेटिक्स फेडरेशन से सम्बद्ध होकर इस उम्र में एथलेटिक्स में भाग लेना प्रारम्भ किया जो आज 64 वर्ष की इस अवस्था में भी जारी ही है।

ऐसे बढ़े खेल की ओर कदम

वर्ष 2002 में श्रीमती मूंदड़ा के पति श्री सूर्यप्रकाश जी मूंदड़ा का हृदयघात से असामयिक देहावसान हो गया था। ऐसे में उनके ऊपर 3 बच्चों की जिम्मेदारी भी आई गई। बड़े पुत्र ने ऐसी स्थिति में मात्र 17 वर्ष की उम्र में ही अपनी पैतृक फैक्ट्री श्रीमती मूंदड़ा के सहयोग से सम्भाल ली। इसमें वे अपने बेटे को हर कदम मार्गदर्शन प्रदान करती रहती थी। इसी तरह वक्त गुजरता गया और बच्चे भी बढ़े होते गये। बच्चों ने अपनी माँ की फिटनेस व उनका आत्मविश्वास देखा तो उनके मन में भी इच्छा उत्पन्न हुई कि माँ की भी कुछ अलग ऐसी पहचान बने जिस पर सभी गर्व करें। बस इसी सोच से यह एथलेटिक्स की कहानी प्रारम्भ हुई।

कई स्पर्धाओं में भागीदारी

आखिरकार उनका होंसला और परिवार का सम्बल काम आया और 55 वर्ष की उम्र में वे मास्टर्स एथलेटिक्स फेडरेशन से सम्बद्ध होकर विभिन्न स्पर्धाओं में प्रतिवर्ष भाग लेने लगी, जिनमें गोलाफेंक, दौड़ तथा फास्ट वॉक आदि शामिल हैं। इसमें चंडीगढ़, बैंगलोर, चैन्नई, नडियाड आदि कई स्पर्धाओं में वे शामिल हुई। चैन्नई में आयोजित 5 किमी फास्ट वॉक में उन्होंने नेशनल स्तर पर गोल्ड मेडल भी प्राप्त किया। अभी गत दिसम्बर 2022 में ही राज्य स्तर पर 5 किमी फास्ट वॉक में सिल्वर, 200 मी. दौड़ में गोल्ड तथा 100 मी. दौड़ में भी गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। वे अभी सितम्बर माह में चारधाम की पैदल यात्रा करके भी आई हैं।

सेवा ने दिलाया सम्मान

श्रीमती मूंदड़ा समाजसेवा में भी विभिन्न संस्थाओं से सम्बद्ध होकर अपना योगदान देती रही हैं। कोरोना काल में भी टिफिन सेवा प्रदान कर उन्होंने कोरोना योद्धा के रूप में विशेष योगदान दिया। श्रीमती मूंदड़ा अपने चहुंमुखी योगदानों को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों सम्मानित भी हो चुकी हैं। वे श्री मोदी से 5 बार मिल चुकी हैं और उनके साथ डिनर भी कर चुकी हैं। श्रीमती मूंदड़ा विभिन्न संस्थाओं द्वारा अभी तक सेवाभूषण अवार्ड, साहसिक नारी, नारी रत्न, नारी शक्ति, तेजस्विनी नारी तथा राजस्थान बुक ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज जैसे कई सम्मानों से सम्मानित हो चुकी हैं।

कविता

मदर्स डे-फादर्स डे-वेलेंटाइन डे

किसी को तनिक भी आहत करने का इरादा नहीं है मेरा,
माफ़ करना अगर मेरी कलम से दिल दुख गया जो तेरा।
देख रही हूँ सोशल मीडिया पर अभिव्यक्तियां प्यारी-प्यारी,
पढ़कर भावुक हो रही है मेरे दिल की हर क्यारी-क्यारी।

मदर्स-डे पर प्यारी माँ के संग तस्वीरों को अपलोड किया है।
क्या सच में माँ का मदर्स-डे पर चरण-स्पर्श भी किया है?
फादर्स-डे पर अपने पापा का दिल खोल गुणगान करते हो,
क्या सच में उनके आदर्शों का कभी अनुसरण भी करते हो?

जानते हो कि हमारे बूढ़े माँ-बाप सोशल मीडिया पर नहीं हैं,
फिर उनके लिए प्यार-सम्मान का प्रदर्शन सिर्फ क्यूँ यहीं है?
दिन में बस पल दो पल ही तुम उनके साथ में जरा बिताओ,
दिल से चाहते हो उन्हें तुम इसका अहसास भी तो दिलाओ।

पति-पत्नी ने एक-दूजे को हीर-राँझा से कम नहीं है जतलाया,
सच कहो वैलेंटाइन-डे छोड़कर कितना वक्त प्रेम से है बिताया?
किसी की मन-भावनाओं को आहत करने का मेरा इरादा नहीं,
दिल से करो हर रिश्ते का सम्मान सोशल-मीडिया में प्रदर्शन नहीं।

सुमिता मूंधड़ा
मालेगांव, नाशिक

वास्तव में साहित्यसृजन भी किसी समाजसेवा से कम नहीं होता, बशर्त वह समाज को सकारात्मक दिशा दिखाता हो। उज्जैन निवासी मनीषा राठी एक ऐसी ही साहित्यकार हैं, जो समाजसेवा के क्षेत्र में तो तन-मन से समर्पित होकर योगदान दे रही हैं, साथ ही उनकी कलम भी साहित्य सृजन से समाज ही नहीं बल्कि व्यापक पाठक वर्ग को भी नयी राह दिखा रही है।

समाजसेवा की कलमकार

मनीषा राठी

उज्जैन माहेश्वरी समाज में प्रतिष्ठित व्यवसायी हरिवल्लभ राठी की पुत्रवधु व शैलेन्द्र राठी की धर्मपत्नी मनीषा राठी की पहचान जितनी समाजसेवी के रूप में है, लेखिका के रूप में भी उससे कम नहीं है। सामाजिक पत्रिका ही नहीं बल्कि अन्य कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में भी उनके आलेख व कविताऐं प्रकाशित होते ही रहे हैं। लेखन के प्रति रुचि के साथ मंच संचालन और पेंटिंग में भी महारत सिद्ध करते हुए अनेक पुरुस्कार जीते। श्री माहेश्वरी टाइम्स के साथ नूतन कहानियाँ एवं ''अथाई के स्वर'' नामक पत्रिकाओं में भी लेख और कविताएँ छपती रही हैं। मंच संचालन एवं अनेक काव्य गोष्ठियों में भाग लेकर भी उन्होंने पुरस्कार प्राप्त किए। हिन्दी साहित्य में रुचि के कारण माहेश्वरी साहित्यकार मंच, समन्वय वाणी फ़ाउंडेशन जयपुर आदि कई मंचों से जुड़ कर माँ सरस्वती की आराधना कर अपना योगदान दे रही है।

समाजसेवा में ऐसे बढ़े कदम

उदयपुरा ज़िला रायसेन मप्र.में सन् 1974 में देशभक्त स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परम भगवदीय श्रीगंगा भक्त जी मालानी, श्री घनश्याम दास जी मालानी के बड़े पुत्र डॉ. विजय मालानी एवं स्वर्णलतामालानी के घर प्रथम कन्या के रूप में जन्मी मनीषा बचपन से मेधावी रही हैं। उदयपुरा और फिर बरेली में से एम ए तक शिक्षा प्राप्त की। सन् 1997 में उज्जैन के प्रतिष्ठित व्यवसायी हरिवल्भ राठी के सुपुत्र शैलेंद्र राठी से विवाह हुआ और फिर कर्मभूमि उज्जैन (म.प्र.) बन गयी। परिवार के सहयोग से सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाते हुए सत्र (2013-2017) में स्थानीय महिला संगठन एवं उज्जैन ज़िला महिला संगठन की सदस्यता ग्रहण की। अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की 2008 में सदस्यता ग्रहण की और वर्तमान सत्र 2022-2024 की अध्यक्ष हैं। इसके पहले भी सक्रियता से समाज की सभी प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों में भागीदारी के साथ पुरस्कृत भी हुई। अरुणा बाहेती प्रदेश अध्यक्षा की शपथ विधि (सत्र 2017-2020) उज्जैन में संपन्न हुई तब विशेष अतिथि के रूप में भूमिका निभाई इसके बाद तत्काल अध्यक्षीय कोटे से उन्हें प्रदेश सदस्यता प्राप्त हुई।

समाजसेवा में विशिष्ट योगदान

श्रीमती राठी ने प्रदेश अधिवेशन 2014 'आग़ाज़' टैलेंट शो में प्रदेश में पाँचवा स्थान पाया। इस 'आग़ाज़' में ही मीरा बाई नृत्य नाटिका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नाटिका को प्रदेश में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्षा कल्पना गगरानी की शपथ विधि (सत्र 2017-2020) उज्जैन में संपन्न हुई। तब यातायात समिति में सक्रिय भूमिका निभाते हुए स्टेशन पर अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया। सतत् क्रियाशीलता एवं कर्मठता संगठन के कार्यों के प्रति लगन एवं तन मन व धन से सक्रियता को देखते हुए सत्र 2020-2022 में उज्जैन ज़िला महिला संगठन में 'संगठन मन्त्री 'का दायित्व एवं पश्चिमी मप्र. माहेश्वरी महिला स.में प्रदेश अध्यक्ष वीणा सोमानी के कार्यकाल (2020-2022) सत्र में बाल संस्कार एवं किशोरी विकास समिति की प्रदेश संयोजिका का दायित्व सम्भाला।

तन-मन-धन से सहयोग

प्रदेश अधिवेशन 'अरुणिमा' में 7000/- की सहयोग राशि के साथ ही मीडिया प्रभारी समिति में न्यूज़ पीडीएफ़, वीडियो आदि बनाने का दायित्व निभाया। वर्ष 2020 जून में पर्यावरण विषय पर प्रदेश द्वारा आयोजित बच्चों की काव्य पाठ प्रतियोगिता के पुरुस्कार समिति संयोजक के रूप में स्वसौजन्य से दिये गये। बाल संस्कार एवं किशोरी विकास समिति द्वारा आयोजित 'तेजोहम् (मास्टर शेफ़)' प्रतियोगिता का सफल संचालन जिसकी प्रशंसा राष्ट्रीय अध्यक्षा आशा माहेश्वरी ने भी की। वर्चुअल मंच पर आयोजित बच्चों के टैलेंट शो के वीडियो के सभी व्यय में भागीदारी की। साहित्य समिति द्वारा आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता हर सीट हॉट सीट में प्रथम एवं एकलप्रश्न प्रतियोगिता में मध्यांचल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कोटा अधिवेशन 'शंखनाद' में सक्रिय भागीदारी निभाई। उनकी लघु नाटिका 'लव जिहाद' एवं 'महारास' नृत्य नाटिका में राष्ट्रीय स्तर पर पुस्कृत हुई। मनासा कार्यसमिति मीटिंग में सक्रिय भूमिका एवं वहाँ आयोजित चिंतन मनन सत्र में आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रदेश द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह 'सप्तपदी' में भी सहयोग प्रदान किया।

शिक्षक किसी भी देश की भावी पीढ़ी के भाग्यविधाता हैं। अतः यदि किसी भी देश के शिक्षक उच्च प्रशिक्षित हैं, तो वह देश उन्नति करने में पीछे नहीं रहता। इसी सोच के साथ लायंस क्लब अपना "लायंस क्वेस्ट" के नाम से एजुकेशन प्रोग्राम चला रहा है, जिसकी इन्टरनेशनल ट्रेनर के रूप में कमान संभाल रही हैं, इंदौर की शिक्षाविद् डॉ. नम्रता बियाणी।

इंटरनेशनल टीचर्स ट्रेनर

डॉ. नम्रता बियाणी

अ.भा. माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट की सचिव ललिता मालपानी की सुपुत्री तथा स्व. डॉ.आर.डी. बियाणी की पुत्रवधु डॉ. नम्रता बियाणी की पहचान इंदौर में एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् के रूप में रही है। इसके साथ ही अब वे अन्तर्राष्ट्रीय टीचर्स ट्रेनर के रूप में देशभर में शिक्षकों को आधुनिक तकनीकों से प्रशिक्षित कर उन्हें नये दौर की शिक्षा के लिये तैयार कर रही हैं। लायंस क्लब इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट 3233G 1 में वर्तमान में डिस्ट्रिक्ट कैबिनेट ट्रेजरर पद को सुशोभित कर रहीं डॉ. नम्रता बियाणी को लायंस क्लब से अब उनकी योग्यता देखते हुए विशेष जिम्मेदारी मिली है। अब वे लायंस क्लब के एजुकेशनल प्रोग्राम लायंस क्वेस्ट की इंटरनेशनल ट्रेनर भी हैं, जिसके माध्यम से वह पूरे भारत वर्ष में टीचर्स को ट्रेनिंग देकर आने वाली पीढ़ी को बेहतर बनाने के लिए कार्य कर रहे टीचर्स को ट्रेंड कर रही हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

गत 21 वर्षो से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्था इंदौर की संस्कार एकेडमी की सीईओ डॉ. नम्रता बियाणी ने आनंद बियाणी के साथ मिलकर 'लार्जेस्ट ऑनलाइन क्लास फॉर अबेकस' का वर्ल्ड रिकॉर्ड बना कर इंटरनेशनल बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज किया था। इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक के बच्चों ने भाग लिया। इसी तरह से आपने 'लार्जेस्ट ऑनलाइन क्लास फॉर स्किल डेवलपमेंट' का भी वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। एक पुस्तक भी लिखी है 'लाइफ मैनेजमेंट फॉर टीन ऐजेर्स'। ज्यादा से ज्यादा बच्चों को अबेकस सीखा कर उनके जीवन को सफल बनाना ही उनकी संस्था का उद्देश्य है। पढ़ना उनका शौक है और इसी के चलते उन्होंने ढेरों राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कोर्स कर अपने आपको अपडेट किया है। आपका कहना है कि बच्चों के लिए जरूरी लाइफ़ स्किल्स को फोकस करके ही हम उन्हें आने वाले जीवन के लिए तैयार कर सकते हैं और यही आपके जीवन का उद्देश्य है। बच्चों को पर्सनालिटी ग्रूमिंग, अबेकस, स्टडी टेक्निक एंड इंग्लिश कोर्स करवा कर आप आने वाले जीवन के लिए तैयार करती हैं।

भावी पीढ़ी को संवारने में चहुंमुखी योगदान

आप अखिल भारत वर्षिय माहेश्वरी महिला संगठन की व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति की राष्ट्रीय प्रभारी हैं। शिक्षा के साथ ही सामाजिक जीवन में भी आप अपना पूर्ण योगदान दे रही हैं। आप सर्टीफाईड पेरेंटींग कोच हैं। NLP की Techniques से आप सभी की हैल्प करती हैं। Mind Maps तकनीक की भी डॉ. बियाणी विशेषज्ञ है, जो कि बच्चों को याद रखने में मदद करती है। ग्लोबल विमेन अचीवमेंट अवार्ड द्वारा बेस्ट इन अबेकस एंड स्किल डेवलपमेंट के साथ ही जर्नी मैगजीन द्वारा टॉप 100 एजुकेटर में उन्हे सम्मिलित किया गया। हाल ही में ग्लोबल एजुकेशन अवॉर्ड्स द्वारा बेस्ट ट्रेनर ऑफ द ईयर 2022 के लिए आपका चयन किया गया है। परिवार की जिम्मेदारी भी वे बखूबी निभा रही है। आपके 2 पुत्र हैं, आशय बियाणी ने आईआईटी मुम्बई से ग्रेजुएशन कंप्लीट करने के बाद, आरबीआई की परीक्षा क्लियर की एवं अभी मुंबई में उनका प्लेसमेंट हुआ है। छोटे बेटे आदित्य बियाणी NMIMS से BBA-LLB के फोर्थ ईयर में हैं।

महिला दिवस के अवसर पर समाज के सभी नारी शक्ति का अभिनंदन

श्रीमती उषा जी सोडाणी

के मध्यप्रदेश पश्चिमांचल माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा

निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई

आपके नेतृत्व में प्रदेश का नाम उच्च शिखर पर हो ऐसी कामना करते हैं।

आपके सफल कार्यकाल के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

ओमप्रकाश लक्ष्मी जय माहेश्वरी,

द्वारकापुरी इंदौर

14 वर्ष की अवस्था वास्तव में तो स्कूल में स्वयं सीखने की उम्र होती है लेकिन यदि ऐसी अवस्था में अपने से अधिक उम्र के लोगों को प्रशिक्षित करने की बात की जाऐ तो यह किसी आश्चर्य से कम नहीं है। वास्तव में ऐसा ही आश्चर्यजनक कार्य कर रही हैं, अजमेर की कैलीग्राफी प्रशिक्षक गौरी माहेश्वरी।

सबसे कम उम्र कैलीग्राफी प्रशिक्षक गौरी माहेश्वरी

राजस्थान की गौरी माहेश्वरी सम्भवतः दुनिया भर में सबसे कम उम्र की कैलीग्राफी टीचर हैं। वह 14 साल की है और मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल अजमेर में नवी कक्षा में पढ़ रही हैं। इसके बावजूद वह कैलिग्राफी की 200 से अधिक शैलियों को जानती हैं और दुनिया भर में 4000 से अधिक लोगों को कैलीग्राफ़ी सीखा चुकी हैं। गौरी ने सम्पूर्ण राजस्थान के 100 सरकारी स्कूलों में बच्चों को कैलीग्राफ़ी सिखाकर आत्म निर्भर बनाने का संकल्प लिया है और अब तक अजमेर, जयपुर, कोटा, बीकानेर, भीलवाड़ा, नागौर, सीकर, बाँसवाड़ा, बाड़मेर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर आदि ज़िलों और ज़िले के गाँवों में 60 से ज़्यादा सरकारी विद्यालय के बच्चों को कैलीग्राफ़ी सीखा चुकी हैं। गौरी ने साबित कर दिया है कि प्रतिभा उम्र की मोहताज नहीं होती और सीखने व सिखाने की कोई उम्र नहीं होती। उनकी क्लासों में 6 वर्ष के बच्चों से लेकर 65 वर्ष के वयस्क भी होते हैं।

प्रतिभा की अद्भूत उड़ान

गौरी सिर्फ कैलीग्राफी पर ही थमीं नही हैं, वह मोटिवेशनल वेबीनार्स भी लेती हैं और उनका Pauranik Stories के नाम से उनका अपना YouTube चैनल भी है। गौरी को आर्ट, क्रॉफ्ट और कैलिग्राफी करना पसंद है। उसे कुकिंग, बेकिंग, स्विमिंग और कीबोर्ड बजाना भी पसंद है। गौरी कैलीग्राफ़ी को अगले स्तर पर ले जाना चाहती है और दुनिया की सर्वश्रेष्ठ कैलीग्राफ़र बनना चाहती हैं। वह भारत और विश्व की कम्पनियों के लिए ब्रैंडिंग डिज़ाइनिंग ओर लोगो डिज़ाइनिंग करना चाहती हैं। वह प्रतिभाशाली बच्चों के लिए अपना एक स्टार्ट अप शुरू करना चाहती हैं जिससे प्रतिभावान बच्चे अपनी प्रतिभा को लोगों तक पहुँचा पाऐं और भारत के बच्चे देश विदेश में भी अपना वर्चस्व फैला सकें।

सेवा ने दिलाया सम्मान

गौरी का दृढ़ विश्वास है कि आज हम जो कुछ भी हैं, वह हमारे समाज के कारण है और हम समाज के ऋणी हैं इसलिए गौरी ने अपनी कमाई राम मंदिर निर्माण सहित विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं और एचआईवी पॉजिटिव बच्चों के लिए दान की है। वह सरकारी स्कूल के बच्चों को कैलीग्राफ़ी पेन व कैलीग्राफ़ी सीखने के सामान भी खुद ही वितरित करती हैं। गौरी को उनकी सेवाओं के लिये कई अवसरों पर सम्मानित किया गया। इसके अंतर्गत प्रधानमंत्री द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2022 से सम्मानित किया गया। गौरी ने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में सबसे कम उम्र की कैलिग्राफी एक्सपर्ट के रूप में अपना नाम दर्ज कराया है। वह 100 चाइल्ड प्रोडिजीज (चाइल्ड प्रोडिजी) में से एक है। उन्हें 1000 वुमन फेसिस ऑफ एशिया (वुमेनवेटर), बिजनेस रैंकर्स और नारित्व अवार्ड, राजस्थान पत्रिका से टैलेंट अवार्ड एवं अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की ओर से वैश्य गौरव सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका है। गौरी नगर निगम ग्रेटर जयपुर की स्वच्छ भारत अभियान की ब्रांड एम्बेसडर भी हैं।

महिला दिवस के अवसर पर समाज के सभी नारी शक्ति का अभिनंदन

श्रीमती उषा जी सोडाणी

के मध्यप्रदेश पश्चिमांचल माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा
निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई
आपके नेतृत्व में प्रदेश का नाम उच्च शिखर पर हो ऐसी कामना करते हैं।
आपके सफल कार्यकाल के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सीमा जमना मालपानी

नवनिर्वाचित अध्यक्ष- उज्जैन जिला माहेश्वरी महिला संगठन

समाज जब जागता है, तो प्रगति की राह अपने आप खुल जाती है। नागपुर निवासी मधु सारडा एक ऐसी ही समाजसेवी हैं, जिन्होंने घर की चारदीवारी में रहने वाली आम महिलाओं में भी समाजसेवा का जज्बा उत्पन्न कर उन्हें समाजसेवी बना दिया। यह काम कठिन तो था लेकिन हौंसले बुलंद हों तो असंभव भी सम्भव हो जाता है।

समाजसेवा में 'प्रगति' की राह दिखाती मधु सारडा

नागपुर निवासी मधु सारडा वर्तमान में उम्र के उत्तरार्द्ध में होकर अपने परिवार, पौत्र-पौत्री आदि की जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए भी समाजसेवा में वह योगदान दे रही हैं, जो अपने आप में मिसाल है। वे समाजसेवा में चहुंमुखी योगदान दे रही संस्था प्रगति राजस्थानी महिला मंडल की संस्थापक सदस्य में से एक हैं। श्रीमती सारडा न सिर्फ स्वयं ही समाजसेवा में सक्रिय हैं, बल्कि अन्य ऐसी महिलाओं को भी संगठन से जोड़कर सतत रूप से समाज की सेवा में सक्रिय करती हैं, जो किन्हीं कारण से सामाजिक सक्रियता से दूर हैं। कुचामन सिटी जिला नागौर (राज.) में सीतादेवी तथा भेरूलाल लड्ढा के यहाँ जन्मी श्रीमती सारडा को बचपन से ही संस्कारों के रूप में समाजसेवा विरासत में मिली। फिर जब दामोदर सारडा के साथ विवाह के पश्चात नागपुर आयीं, तो ये संस्कार ही समाजसेवा के रूप में सतत प्रस्फुटित होते चले गये। श्रीमती सारडा के पति दामोदर सारडा तथा गौरव व कुंजन भी सपरिवार उनके इस सेवापथ पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बने हुए हैं।

लगभग 37 वर्षों से समाजसेवा से जुड़ाव

पिछले 37 वर्षों से श्रीमती सारडा समाजसेवा से जुड़ी हुई हैं। सन् 1988 में उन्होंने और कविता तापड़िया ने मिलकर प्रगति राजस्थानी महिला मंडल बनाया था, जिसका उद्देश्य महिलाओं को घर की चार दीवारी से बाहर लाकर समाज में सक्रिय करना था। इसके लिये घर-घर जाकर सासुओं से मिलकर समझाया कि यह संस्था बनाकर सब बहने मिलकर हमारे तीज त्यौंहार मनायेंगे। पंद्रह महिलाओं को सदस्य बनाकर संस्था शुरु की। आज इस संस्था के 37 वर्ष पूर्ण हो गये हैं। अब इसकी सदस्य संख्या भी काफी बढ़ चुकी है। संस्था द्वारा सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक, जरूरत मंदों की सहायता, ब्राह्मण व गरीब कन्याओं के विवाह, अन्नदान जैसे अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। प्रगति संस्था ने दो वर्ष पूर्व अपना स्वयं का चार मंजिला, सारी सुविधाओं से परिपूर्ण भवन बनाया। संस्था ने यह भवन शादी विवाह कार्यक्रम हेतु नहीं बल्कि समाजसेवा हेतु बनाया। इस भवन में वे प्रगति अन्नपूर्णा रसोई चलाती हैं जिससे प्रतिदिन 125 टिफिन एम्स हॉस्पिटल नागपुर में मरीजों के साथ परिवार के जो सदस्य होते हैं उनके लिये भेजते हैं। मार्च 2022 से यह रसोई शुरू की थी जिसे एक वर्ष पूर्ण हो गया है।

सेवा के वृहद आयाम

संस्था द्वारा संचालित फिजियोथेरेपी सेंटर में अति न्यून शुल्क में सेवायें मरीजों को दी जाती है, मात्र 70 रुपये में। इसी में एक्युप्रेशर की सेवा भी न्यून दरों में दी जा रही है। महिलाओं के स्वरोजगार हेतु प्रगति संस्था द्वारा प्रगति मसाले नाम से मिर्च, हल्दी, धनिया व गरम मसाला तथा चाय का मसाला बनाये जाते हैं। संस्था ने सुपर-60 क्लब भी महिलाओं के लिये खोला है, जिसमें 70 महिलायें सदस्य हैं। बुजुर्गों के लिये हमारी नई पीढ़ी के पास वक्त नहीं है। अतः उन्हें खुशियाँ देना ही इसका उद्देश्य है। इस संस्था के प्रति श्रीमती सारडा का 37 वर्षों का तन-मन-धन से समर्पण रहा है। अतः सभी सदस्याऐं उन्हें सम्मान देती हैं। इसके साथ ही श्रीमती सारडा अन्य कई समाजसेवी संस्थाओं से भी जुड़ी हुई है। महावीर इंटरनेशनल नागपुर की अध्यक्षा रह चुकी हैं। अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला मंच की सचिव रही हैं। माहेश्वरी वानप्रस्थ नागपुर द्वारा वृद्धाश्रम चलाया जा रहा है, जिसमें भी वे सेवा कार्य करती हैं।

फैब्रिक व्यवसाय मधुबनी की संकल्पना

'बसंत की हवाएं, उपवन मे लाती हैं बहार,
मधुर कल्पनाएँ, व्यक्तित्व मे लाती हैं निखार,
विशेष है संगम, कर्मठता और् अच्छे विचारों का,
अनूठा है सफलता के साथ मधु व्यवहार'

कार्य बड़ा हो या छोटा, उसे समर्पित भाव से, कर्मठता के साथ संपन्न करने का अति विशेष गुण श्रीमती सारडा में है। समय के अनुसार निर्णय लेना और फिर उसे सफल करने ले लिए जुट जाना ये उनकी की खासियत है। इसी का विशेष उदाहरण हाल ही में इन्होंने फैब्रिक के प्रतिष्ठान की संकल्पना की है। इस केंद्र में पूरे भारत के प्रसिद्ध कपड़े फैब्रिक उपलब्ध होंगे। इसका उद्घाटन रामनवमी पर होगा। इसका नाम मधुबनी रखा है।

लोग छोटे शहर या कस्बे में अपनी बेटियों का विवाह करने में कतराते हैं। उन्हें लगता है कि उनकी बेटी को यहाँ उन्नति का आकाश नहीं मिलेगा। वास्तव में उड़ने के लिये पंख चाहिये, आकाश तो अपने आप मिल जाता है। आईये जानें किशनगढ़ रेनवाल जिला जयपुर (राज.) की मोनिषा-देवेन्द्र शारदा से छोटे से गाँव से वर्ल्ड ब्यूटी कान्टेस्ट तक पहुँचने की कहानी उन्हीं की जुबानी।

हौंसले ने पहुँचाया वर्ल्ड ब्यूटी कान्टेस्ट में

मोनिषा शारदा

कुछ लोग कहते हैं 'औरत का कोई घर नहीं होता, लेकिन मेरा मानना है कि औरत के बिना कोई घर, घर नहीं होता।' मैं मोनिषा शारदा बीए, एमए, एलएलबी। मेरी शादी 20 साल की उम्र में बीए होने के साथ ही जयपुर के पास एक छोटे से कस्बे रेनवाल में हुई, जहां मेरी शादी के वक्त सड़कें तक नहीं थीं। बचपन से ही बड़े शहरों में रहकर हॉस्टल में पली-बढ़ी थी इसलिए ऐसे कस्बे में खुद को ढालना आसान नहीं था, मगर पिता के घर से मैं दो चीजें अपने साथ लाई थी - एक Tolerance (सहनशीलता) व दूसरी Adjustment (सामंजस्य)। इन दोनों चीजों ने मुझे इस छोटे से कस्बे के परंपरागत संयुक्त परिवार में प्यार व सम्मान दिलाया। शादी के बाद पढ़ाई जारी रखने में मेरा पूरा साथ दिया मेरे पति ने, उन्होंने सही मायने में एक जीवन साथी की तरह मेरी मदद की, हमेशा मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया और मेरे पूरे संघर्ष में एक स्तंभ की तरह मेरे साथ रहे।

परिस्थितियां जितनी ज्यादा आपको तोड़ती है उससे भी ज्यादा वो आपको मजबूत बनाती हैं इसलिए शादी के बाद मुझे जीवन से जो भी मिला मैंने उसे पूरी सकारात्मकता से स्वीकारा और विपरीत परिस्थितियों में भी खुद को संवारा। शादी के बाद पढ़ाई और बच्चों की परवरिश के साथ मेरी लॉ की डिग्री पूरी की। इतनी छोटी जगह और सामाजिक दायरों में रहने के बावजूद अपने सपने और इरादों को पूरा करने का मुझ में हौसला और जुनून था। इसलिए मैंने विश्व स्तरीय सौंदर्य प्रतियोगिता Haut Monde Mrs. India Worldwide में भाग लिया और इसके फाइनल तक पहुंचने का मुझे मौका मिला। मुझे यकीन है कि हमारे सभी सपने सच हो सकते हैं अगर हम उन्हें पूरा करने का साहस और माद्दा रखते हैं। बस शर्त ये है कि बहानों की जगह हमारे इरादे मजबूत होने चाहिए।

'मुश्किलों से कह दो उलझा न करें हमसे
हमें हर हाल में जीने का हुनर आता है।'

आमतौर पर वर्तमान में भी अनाज के ब्रोकरेज क्षेत्र को पुरूषों का क्षेत्र ही माना जाता है। लेकिन उज्जैन निवासी संजय लड्ढा की 31 वर्षीय सुपुत्री प्रिया लड्ढा ने इस सोच को अपने हौंसले से चुनौती दी है। आइये जानें उनकी कहानी।

अनाज के ब्रोकरेज क्षेत्र में सफल महिला

प्रिया लड्ढा

आमतौर पर अनाज व्यवसाय अत्यंत कठिन कार्य होने से पुरूष वर्चस्व का ही माना जाता रहा है। अनाज की खरीद करना और फिर हम्मालों से उसे तुलवाकर कार्पोरेट क्षेत्र को सप्लाय करना वास्तव में यह कोई खेल नहीं है। यही कारण है कि आमतौर पर इस क्षेत्र में कदम रखने में महिलाऐं कतराती ही हैं। सम्भवतः उज्जैन निवासी प्रिया लड्ढा एकमात्र ऐसी नारी है, जिन्होंने पूरे देश में इस क्षेत्र में कदम रखा है। इतना ही नहीं उनके हौंसले भी इतने बुलंद हैं कि मात्र 7 माह में 60 लाख रुपये से अधिक की आय भी अर्जित कर एक कीर्तिमान बनाया है।

उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी

प्रिया बताती है, मैंने अपने दादा उज्जैन माहेश्वरी सभा के वरिष्ठ समाजसेवी श्री रामरतन लड्ढा एवं पिताश्री संजय लड्ढा की प्रेरणा से 1 जुलाई से अनाज की कॉरपोरेट फील्ड में प्रिया इंटरनेशनल उज्जैन के नाम से स्वयं की फर्म खोलकर कारपोरेट ब्रोकरेज का काम चालू किया। विगत 7 माह में मेरे द्वारा दस लाख क्विंटल गेहूं व मक्का कीमत लगभग ढाई सौ करोड़ का विक्रय किया गया। इसमें मुख्य रूप से देश के प्रतिष्ठित संस्थान मीरा इंटरनेशनल, रिलायंस रिटेल लिमिटेड, विटारा, ओलम, गुजरात अंबुजा, सिरेंज ग्लोबल, फ्रिस्क इंडिया आदि का गेहूं व मक्का देश की विभिन्न फ्लोर मिलों व बल्क ट्रेडर्स, निर्यातकों को रेलवे रेक लोडिंग व ट्रक द्वारा विक्रय किया गया। भगवान महाकाल की कृपा से विगत 7 माह में इस क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया। अब शीघ्र ही भविष्य में मेरा अगला लक्ष्य विभिन्न देशों से आयात व निर्यात होने वाले अनाज की ब्रोकरेज फील्ड में प्रवेश का रहेगा।

जीवन में बहुत से लोग बाधाओं से हार कर निराश हो जाते हैं लेकिन वहीं कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बाधाओं से लड़ते हुए अपना अलग ही मुकाम बनाते हैं। जीवन में ऊंच-नीच, निराशा, हताशा इन सब को पीछे छोड़ते हुए रायपुर निवासी तृप्ति माहेश्वरी ने अपने बलबूते योग के क्षेत्र में एक अलग ही मुकाम बनाया है।

'योग से भगाती रोग'

तृप्ति माहेश्वरी

तृप्ति माहेश्वरी ने योग को और योग ने उनको एक अलग ही पहचान दी है। उनकी आज रायपुर में ऐसी योग गुरु के रुप में पहचान है, जो योग से रोग भगाकर लोगों को स्वस्थ कर रही हैं। लेकिन यह सफलता उन्हें ऐसे ही नहीं मिली इसके पीछे उनके जीवन का कठोर संघर्ष है, वह भी इतना कठोर कि कोई और हो तो टूट जाएं लेकिन तृप्ति डटी ही रही।

बचपन से चला चुनौतियों से सामना

18 सितंबर 1985 को राजस्थान के श्री डूंगरगढ़ (बीकानेर) कस्बे में जन्मी तृप्ति की प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा पश्चिम बंगाल के दिनहटा कस्बे में हुई जो कि बांग्लादेश के निकट स्थित है। जब वह 12 वर्ष की थी तब उनके पिताजी चल बसे और वह अपनी माता जी के साथ राजस्थान आ गई। वहीं से उन्होंने ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई पूरी की। 2010 में विवाह के पश्चात वह सूरत जाकर बस गई। लेकिन ससुराल में ससुराल परिवार वालों के प्रताड़ना के कारण अपनी दो पुत्रियों को लेकर वह पुनः वर्ष 2017 में अपने मायके रायपुर आ गई। यहां से उनके जीवन का एक नया अध्याय शुरू होता है जहां उन्होंने मन की शांति के लिए योग को अपनाया। एक बार वह भारतीय योग संस्थान के एक शिविर को अटेंड कर रही थीं जहां पर उनके प्रमुख आए हुए थे। उनकी बातों व विचारों का तृप्ति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने योग को ही अपना कार्यक्षेत्र चुन इसी में अपना भविष्य बनाने का निर्णय लिया।

योग से दिला रही रोग से मुक्ति

कोविड-19 समय तीन स्टूडेंट से शुरुआत करते हुए आज उनकी ऑनलाइन क्लासों में सैकड़ों स्टूडेंट्स उपस्थित रहते हैं। साइटिका, हाइपरटेंशन, थायराइड, शुगर, पीसीओडी आदि कई प्रकार के रोगी नियमित रूप से योग करते हुए स्वास्थ्य लाभ पा रहे हैं। गंभीर रोगी -121 क्लास द्वारा ना केवल अपनी बीमारी से निजात पाते हैं बल्कि मानसिक रूप से भी पहले से अधिक मजबूत व स्वस्थ हो रहे है। सिर्फ भारत ही नहीं विदेश में भी इनके काफी ऑनलाइन स्टूडेंट्स हैं। इनका सपना है योग को हर कोई अपनाएं और योग के माध्यम से वह लोगों के चेहरे पर मुस्कान ला सकें और वे अपने क्लासों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को स्वास्थ्य लाभ दे सकें।

महिला व्यक्तित्व

शारीरिक दिव्यांगता भी दृढ़ संकल्प होतो कर्त्तव्य निर्वहन में बाधा नहीं बन सकती। इसी की मिसाल है जावरा निवासी राखी माहेश्वरी।

दिव्यांगता के बावजूद उत्कृष्ट सेवा

राखी माहेश्वरी

ग्राम पंचायत भूतेड़ा जनपद पंचायत जावरा की सचिव राखी माहेश्वरी एक दिव्यांग महिला कर्मचारी हैं और दिव्यांग होने के बाद भी जो अपने सभी दायित्वों को निभाने के लिये इस तरह तत्पर हैं कि सभी के लिये प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई है। वर्ष 2017 के बाद से पंचायत विभाग में नौकरी लगी व 2018 में रतलाम कलेक्टर तन्वी सुन्द्रियाल द्वारा पंचायत विभाग में उत्कृष्ट कार्य के लिये सम्मान किया गया। साथ ही कोरोना काल में ग्रामीण क्षेत्र में एक दिन में 600 से अधिक ग्रामवासियों को समझाईश देकर टीके लगवाये गये जिसके लिये अनुविभागीय अधिकारी हिमांशु प्रजापति आईएएस द्वारा सम्मान किया गया। आपने बड़ावदा जिला रतलाम माहेश्वरी समाज में भी अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिवार की धुरी गृहिणी, जिसके बिना परिवार के हर सदस्य की दिनचर्या अधूरी पर फिर भी वह कामकाजी महिला की अपेक्षाकृत कमतर ही आंकी जाती है। गृहिणी एक दिन किसी कारणवश गृहकार्यों की तरफ ध्यान न दे तो घर के सभी छोटे-बड़े सदस्य मिलकर कितनी भी कोशिश कर लें गृहिणी की तरह किसी भी कार्य को दक्षता के साथ नहीं कर पाते हैं। फिर भी एक कामकाजी महिला की तुलना में उसके वजूद को कभी महत्व नहीं दिया जाता। इस सच्चाई को जानते सभी हैं पर मानते नहीं कि घर को गृहिणी के सिवाय कोई भी नहीं संभाल सकता है। हकीकत में जो महिला घर पर रहकर अपने जीवन का हर पल अपने परिवार के नाम कर देती है, उस महिला का सम्मान कामकाजी महिला की तुलना में अधिक होना चाहिए। पर हमारे समाज में घर के काम करने वाली और घर से बाहर निकलकर काम करने वाली महिलाओं के प्रति हमारा नजरिया अलग-अलग है। यही कारण है कि महिलाऐं अब अपने आपको गृहिणी कहलाने में कतराने लगी है। ऐसे में इस विषय पर चर्चा अनिवार्य हो गई है कि यह भेदभाव उचित है अथवा अनुचित? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

गृहिणी को कामकाजी महिला से कमतर आंकना
उचित अथवा अनुचित?

गृहलक्ष्मी और कामकाजी नारी दोनों सम्मानित

गृहिणी और कामकाजी महिला को एक-दूसरे की प्रतियोगी मान लेना, हमारी बहुत बड़ी भूल होगी। दोनों का अपना अलग-अलग और विशेष अस्तित्व है। गृहिणी के बिना घर का अस्तित्व नहीं है, पर उसकी तुलना कामकाजी महिला से करना भी तर्कसंगत नहीं। परिवार के लिए पूर्णतः समर्पित गृहिणी का स्थान कोई नहीं ले सकता ना ही कोई उसकी बराबरी कर सकता है। वो जितनी कुशलता से घर को संभाल और संवार सकती है उतना समय घर और परिवार को देना एक कामकाजी महिला के लिए संभव नहीं है। घर ही नहीं परिवार के हर सदस्य की हर छोटी से बड़ी बात गृहिणी से होकर गुजरती है पर कामकाजी महिला को घर और दफ्तर में सामंजस्य बिठाना पड़ता है। यह आवश्यक नहीं है कि घर से बाहर निकलकर काम करने वाली हर महिला पढ़-लिखकर अपना कैरियर बनाने की चाह ही रखती हो, कहीं-कहीं महिलाओं को घर से बाहर निकलकर काम करना उनकी आवश्यकता / मजबूरी भी होती है। वैसे भी एकल परिवार की कामकाजी महिलाओं को घर और दफ्तर दोनों को संभालना पड़ता है जो किसी चुनौती से कम नहीं है। इस प्रकार देखा जाये तो गृहणी और कामकाजी महिला का तुलनात्मक आंकलन करना गलत होगा। गृहिणी को घर की मुर्गी दाल बराबर समझने की भूल करने वाले यह क्यूँ भूल जाते हैं कि अगर उनकी गृहलक्ष्मी एक दिन का भी अवकाश ले तो उनकी दिनचर्या चरमरा जाती है। गृहिणी का अपने परिवार के प्रति निःस्वार्थ समर्पण अमूल्य है। माना कि कामकाजी महिला घर की आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होती है पर इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि वो गृहिणी से अधिक सम्मान की अधिकारी है बल्कि गृहिणी और कामकाजी महिला दोनों ही समान रुप से सम्मान पाने का अधिकार रखती है।

❒ **सुमिता मूंधड़ा**, मालेगांव, नाशिक

गृहिणी स्वयं को कमतर न आंके

'फोटो के लिए सभी गृहणियां भी मंच पर आ जाए'। संचालक महोदय द्वारा एक कार्यक्रम में इतना कहते ही, वहां पर खड़ी अनेक महिलाओं ने अपनी आपत्ति दर्ज करवा दी- 'हम गृहिणी नहीं एन्टरप्रिनियोर हैं महोदय, जरा विचार कर बोलिएगा'। फटकार मौखिक तक ही नहीं बल्कि लिखित में भी संचालक को भविष्य में इस बात पर ध्यान रखने के लिए चेतावनी दे दी गई। यह है, हमारे समाज में गृहिणी की वास्तविक स्थिति। स्वयं गृहिणी ही, स्वयं को गृहिणी कहने से घबराती है। क्योंकि घर संभालना, बच्चे संभालना इत्यादि सारे कार्य एक उद्योग अथवा व्यापार संभालने से बहुत ही छोटे हैं। क्योंकि गृहिणी के सभी कार्य बहुत ही सामान्य हैं, प्राचीन काल से होते आ रहे हैं, इसमें नया क्या है? यही सोच कर हर कोई गृहिणी की अवहेलना करता रहता है। सबसे बड़ी बात इस श्रम के बदले में कोई निश्चित मानदेय प्राप्त नहीं होता और बिना मानदेय के सम्मान प्राप्त नहीं होता। इसी सम्मान को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक गृहिणी आज के युग में स्वयं को वर्किंग वुमन कहना पसंद करती हैं। किन्तु मेरी दृष्टि में यह भेदभाव करना बिल्कुल अनुचित है। यह सच है कि कामकाजी महिलाएं अपने लिए धन और सम्मान दोनों प्राप्त कर लेगी। परंतु परिवार को जो पोषण और प्रेम एक गृहिणी अपना समय देकर करती है, वह अतुलनीय है। जो संस्कारों का सिंचन भावी पीढ़ी में एक गृहिणी कर सकती है, वह कामकाजी महिला चाह कर भी नहीं कर पाती है। लेकिन कामकाजी महिला अपने धन, मान से अपने परिवार को एक नई ऊंचाई पर ले जा सकती है, अपने बच्चों में नया आत्मविश्वास भर सकती हैं तो मुझे लगता है कि गृहिणी और कामकाजी महिला दोनों ही अपने-अपने स्थान पर मन और मस्तिष्क की ही तरह हैं। इसीलिए किसी भी गृहिणी को स्वयं को कमतर नहीं आंकना चाहिए और इसके लिए स्वयं गृहिणी को ही स्वयं पर गर्व करना चाहिए। ताकि कोई अन्य उसकी ओर उंगली ना उठा सकें।

❒ **मनीषा प्रतीक पलोड़ 'मनु'**, बेंगलूरु

आर्थिक कारण से होता है भेदभाव

हम कितना भी ना मानने का प्रयत्न करें परंतु सत्य ही है कि मान तथा प्रतिष्ठा पैसों से ही आती है। एक पति जो दिन में 8 से 10 घंटा काम करता है, उसे ज्यादा मान मिलता है अपनी पत्नी की अपेक्षा जो दिन में घर में 16 घंटे काम करती है। सिर्फ इसीलिए क्योंकि वह पति पैसा कमाता है और वह पत्नी घर का काम करती हैं। घर में बने भोजन पर पहले अधिकार से लेकर मंदिर में पूजे जाने तक सारे सम्मान पति को प्राप्त हैं। वह गृहिणी पैसों के लिए पूरी तरह से अपने पति पर निर्भर होती हैं। एक पति बेबाकी से अपना पैसा खर्च करता है और वही पत्नी हर छोटी चीज भी अपने पति से पूछ कर खर्च करना पड़ती है। एक कामकाजी महिला को अपने पैसे खर्च करने की स्वतंत्रता मिलती है। शायद घर में नहीं मगर बाहर उसे वह मान और प्रतिष्ठा मिलती है। अपने अस्तित्व को पहचानने का मौका मिलता है। तो क्यों एक महिला गृहिणी बनना चाहेगी? अगर आप सही मायनों में एक गृहिणी और एक कामकाजी महिला को एक समान आंकना चाहते हैं तो उस गृहिणी को वही सम्मान, अधिकार तथा स्वतंत्रता दीजिए जो एक कामकाजी पुरुष को प्राप्त है।

❒ **भूषण धीरेन, वर्धा,** महाराष्ट्र

गृहिणी समाज व राष्ट्र की धुरी

गृहिणी तो देश राष्ट्र समाज की वह धुरी है जिस के सहयोग से ही हम सभी पायदानों पर सफल होते हैं। गृहिणी के इस मौन सहयोग से ही यह समाज और यह संसार रहने लायक बनता है। कामकाजी महिला तो सिर्फ देश के विकास में आर्थिक योगदान दे पाती है लेकिन एक गृहिणी देश के सामाजिक आर्थिक और बौद्धिक चहुँमुखी विकास में सहयोग देती है। वह अपनी संतानों को अपनी सभ्यता और संस्कृति से जोड़े रखती है। औरत का कामकाजी होना गलत नहीं है लेकिन उसका दूसरा पहलू यह भी है कि जब से औरत ने कमाना शुरू किया है और तभी से हम अपनी सभ्यता व संस्कृति से दूर हो रहे हैं। क्योंकि ईश्वर प्रदत्त यह गुण गृहिणी को मिला है कि संतानों की परवरिश एक औरत ही अच्छी तरह से कर सकती है। गृहिणी को कमतर आंकना समाज की छोटी मानसिकता को दर्शाता है। आर्थिक उन्नति को देखकर ही किसी को कमतर आंकना विकास नहीं है। यह तो हमारे पिछड़ेपन की निशानी है क्योंकि जड़ों से दूर होकर कभी भी कोई उन्नति नहीं कर सका है। हम पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण से अपनी ही सभ्यता और अपने ही विकास को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वहां की संस्कृति अपने से अलग है तो वहां के संस्कार और सभ्यता भी अलग है। आज अगर कामकाजी महिला बाहर काम कर रही है तो सिर्फ और सिर्फ गृहिणी के सहयोग की वजह से ही। क्योंकि उसके दिए संस्कार ही काम के माहौल को सकारात्मक बनाए हुए हैं। एक गृहिणी घर परिवार में कितने ही काम स्वयं करके आर्थिक योगदान भी देती है क्योंकि बचाना भी एक तरह से कमाना ही है। गृहिणी के इस अमूल्य सहयोग को नकार कर समूचा समाज अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। गृहिणी तो सदा से ही आदरणीय, वंदनीय है और रहेगी।

❒ **विनीता काबरा,** जयपुर

कतई कम नहीं गृहिणी

गृहिणी को कामकाजी महिला से कमतर आंकना कतई भी उचित नहीं है। एक स्त्री सारे रिश्तों को कितने अच्छे से संभालती है। आज महिलाओं का योगदान सभी क्षेत्र में अहम है। महिलाएं किसी भी देश के विकास का मुख्य आधार होती हैं। वे परिवार, समाज और देश की तरक्की में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वहीं आज महिलाएं हर क्षेत्र में खुद को योग्य साबित कर रही हैं एवं पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। लेकिन आज भी कई क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार नहीं मिल रहा है। उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ रहा है। वहीं हमारे देश मे लगातार घट रही महिलाओं की संख्या और बढ़ रहे भ्रूण हत्या, महिलाओं पर अत्याचार के मामले काफी चिंताजनक हैं। इसलिए महिलाओं के सम्मान के प्रति सभी को जागरूक होने की जरुरत है। दुनियाभर में महिलाओं को उनके अधिकार और सम्मान देने के लिये बहुत से संगठन आगे आ रहे हैं। हर साल 8 मार्च को दुनियाभर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया जाता है। ताकि विश्व भर में महिलाओं की उपलब्धियों का जश्न मना सकें। कोई भी देश यश के शिखर पर तब तक नहीं पहुंच सकता जब तक उसकी महिलाएं कंधे से कन्धा मिला कर ना चलें। 'हम हमेशा देखते हैं जब आदमी स्त्री से प्यार करता है, वो अपनी ज़िन्दगी का बहुत छोटा हिस्सा देता है। पर जब स्त्री प्यार करती है वो सबकुछ दे देती है।' महिला एक मां, पत्नी, बहन, बहू कई रुपों में अपना कर्तव्य निभाती है एवं सशक्त समाज के निर्माण में मदद करती है। सुयोग्य स्त्री परिवार की शोभा तथा गृह की लक्ष्मी है। 'स्त्रियों की मान-हानि साक्षात् लक्ष्मी और सरस्वती की मान हानि है। 'जीवन की कला को अपने हाथों से साकार कर नारी ने सभ्यता और संस्कृति का रूप निखारा है, नारी का अस्तित्व ही सुन्दर जीवन का आधार है।'

❒ **पूजा काकाणी,** इंदौर (मध्यप्रदेश)

गरिमामय है गृहिणी का ओहदा

कामकाजी महिला की तुलना में एक गृहिणी घर के सदस्यों की जिंदगी को अधिक सरल व सहज बनाती है। उन्हीं की बदौलत घर का कर्ता पुरुष इत्मिनान से कार्य कर पाता है, घर और बाहर के बीच संतुलन साध सकता है। गृहिणी के घर में रहने से घर में ठहराव आता है। स्वयं के द्वारा घर के सभी सदस्यों की पालना करती है। उनकी देखरेख में भावी पीढ़ी की रचना होती है। गृहिणी की प्राथमिकता घर ही होती है, इसीलिए वह बेहतर ढंग से घर के साथ-साथ घर के सदस्यों का वर्तमान व भविष्य चमकाने में लगी रहती है। आपके घर लौटने से पहले वह घर को समेटने के साथ-साथ घर में प्यार और सुकून की सकारात्मक तरंगें फैला कर आपका इंतजार करती है। गृहिणी की कार्यकुशलता घर की अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करती है। एक महिला सीईओ अपनी कंपनी को आगे बढ़ाती है, तो ये बेनाम महिलाएं भी आपको और बच्चों को सफलता की सीढ़ियां चढ़ा रही हैं। गृहिणी किसी के सम्मान की मोहताज नहीं है। कोई उनके बहुआयामी, मूक योगदान को समझे या ना समझे वे इस्तीफा नही देती है। उनका स्थान शीर्ष पर है। उन्हें यथोचित सम्मान देने से देने वाले के कद का भी पता चल जाता है।

❒ **अनुश्री मोहता,** खामगांव

कदापि उचित नहीं उसे कम आंकना

गृहिणी को कामकाजी महिला से कमतर आंकना कदापि उचित नहीं है। गृहिणी बिना घर सूना, विरान है घर का हर कोना। सर्वप्रथम तो समझना है गृहिणी का अर्थ। घर का हर सदस्य हो जाता है जिसका ऋणी, वही है गृहिणी। एक कामकाजी महिला अपनी योग्यता के बल पर धन का अर्जन तो कर सकती है परन्तु परिवार को वह मूलभूत खुशिया नही दे सकती है जो एक गृहिणी देती है। सिर्फ डिग्री और वेतन ही पैमाना नही होता है, आंकलन का। कामकाजी महिला अर्थोपार्जन कर भौतिक सुविधाए खरीद सकती है लेकिन परिवार की आन्तरिक खुशियाँ नही। घर परिवार संभालना आज के समय मे नौकरी करने से अधिक दुरुह कार्य है, यह स्वयं कामकाजी महिला जानती है। फिर गृहिणी कमतर कैसे? गृहिणी अपने मधुर व्यवहार, संस्कार मय आचरण से सभी का दिल जीत लेती है जो दौलत से नही मिल सकता। काम को अधिक महत्व देने से कामकाजी महिला के स्वयं के रिश्ते बिखर जाते हैं। रिश्तों को सहेज कर, भावी पीढी को संस्कार मय बनाने वाली, परिवार की धूरी गृहिणी को कमतर समझने वालों की तो समझ में ही कमी है।

❒ **अयोध्या चौधरी,** अलीराजपुर

गृहिणी बनना सबसे कठिन काम

गृहलक्ष्मी और कामकाजी महिलाओं की अपनी-अपनी जिम्मेदारी है, अपना-अपना काम है। हम यहां किसी से किसी की तुलना नहीं कर रहे हैं लेकिन अक्सर लोग घरेलू महिलाओं को कम आंकते हैं। क्या आपने कभी हाउसवाइफ का इसलिए सम्मान होता देखा है, क्योंकि उसने घर को बड़े ही करीने से संभाला है। लोगों को यह क्यों समझ नहीं आता कि पढ़ी-लिखी महिला भी हाउसवाइफ बनना चुन सकती है। जरूरी नहीं है कि हर महिला को बाहर काम करना ही पसंद हो। कई महिलाओं को घर संभालना अच्छा लगता है। घर को मैनेज करना किसी कंपनी को मैनेज करने से आसान काम थोड़ी है। महिला दिवस पर भी लोग उन महिलाओं को खोजते हैं जिन्होंने बाहर के कामों में बड़ा मुकाम हांसिल किया हो। जो सफल बिजनेस वुमन हो, जो अफसर हो...कोई ऐसी महिला के बारे में नहीं छापता तो एक साधारण हाउस वाइफ है और वह अपने परिवार, पति, सास-ससुर और बच्चों को अच्छी तरह संभाल रही है। वह कोई बेचारी नहीं है, उसकी कोई मजबूरी नहीं है यह करना उसकी अपनी मर्जी है। अगर पति या बच्चे कुछ अच्छा करते हैं तो उसमें उसका बहुत बड़ा रोल है और वह इसमें खुश है।

❒ **कुसुम कुईया,** ग्वालियर

परिवार का केंद्र बिंदु है नारी

यह निर्विवाद सत्य है कि सभी सदस्यों के सहयोग से ही परिवार सुचारू रूप से चलता है, लेकिन उसका केंद्र बिंदु महिला ही होती है। वह अपनी जिम्मेदारियां बखूबी निभाती है, अपने सपनों को परे रखकर दिन-रात परिवार के लिए कार्य करती है। एक गृहिणी के कार्य की तुलना बाहर कार्य करने वाली महिला से कभी होना ही नहीं चाहिए। प्रश्न तब उठता है जब इतने समर्पण के बाद भी उसी के घर वाले टिप्पणियां करने या कमियां निकालने में नहीं झिझकते। यह एक असहनीय पीड़ा है। गृहकार्य की महत्ता को कभी कमतर नहीं आंकना चाहिए। घर में रहकर वह सभी का ध्यान रखती है तो कामकाजी महिलाएं घर की आमदनी में सहयोग देती हैं। यह विवाद का विषय ही नहीं है कि कौन श्रेष्ठ है? परिवार का हर सदस्य दोनों तरह की महिलाओं को समान सम्मान दें, आज की यही आवश्यकता है।

❒ **अनुभि राठी,** रतलाम (मध्य प्रदेश)

शतप्रतिशत अनुचित गृहिणी को कमतर आंकना

गृहिणी या घर का काम करने वाली महिला यानी 24 घंटे काम करने की मशीन, जिसकी बैटरी कभी डाउन नही होती। उसे कोई सरकारी छुट्टियाँ नहीं होती। सिक लीव नहीं होती, ऊपर से तंज कसते हैं कि आप क्या करते हो, दिन भर घर में ही रहती हो। बाहर जाकर काम करो तो पता चले कि पैसे कमाना कितना मुश्किल है? मतलब बाहर जाकर 8 घंटे की नोकरी करने से भी 24 घंटे काम में खटने वाली को कम आंका जाता है। अगर हिसाब लगाया जाए तो घर में काम करके बुजुर्गों की सेवा, स्टिंग, क्लीनिंग, बच्चों की पढ़ाई, मेहमानों की मेहमान नवाजी और शुद्धता व बचत के उद्देश्य से होटलिंग ना करके होटल जैसा खाना घर में बनाकर देने वाली गृहिणी को कम आंकना गलत है। जितना एक सामान्य व्यक्ति बाहर जाकर अर्थाजन करता है, उसी के बराबरी में या ज्यादा काम गृहिणी करती है। इतना ही नही व्यवहार से बचाकर बचत भी करती है, जो आड़े वक्त में काम आती है। परिवार में सामंजस्य व संतुलन बनाने की दौड़ में खुद के स्वास्थ्य की भी वह अनदेखी करती है जो बीमारियों के रूप में समक्ष आते हैं। अतः गृहिणी के काम को कामकाजी महिला के काम से कमतर आंकना शत प्रतिशत अनुचित ही है।

❒ **मीना कलंत्री वसई,** जिला भायंदर

दोनों का ही अमूल्य है योगदान

गृहिणी सफलता की कुंजी होती है, जिसका मोल अनमोल है, जो सारे घर में खुशियों का इत्र बिखेरती है, जिसकी महक से सारा परिवार प्रफुल्लित रहता है। जिनको इत्र की महक को समझ ना आए, वो नासमझ होते हैं। गृहिणी अपने सपनो को नजरअंदाज कर अपना बहुमूल्य समय परिवार में खर्च करती है। जिसका ऋण परिवार कभी नहीं चुका सकता है। फिर भी उनके वजूद पे लोग प्रश्न चिन्ह लगाते हैं, जो कि लोगो की गलत धारणाऐ हैं। कामकाजी महिलाऐ जिनको सम्मान की नजर से देखता है। वो खुद गृहिणी के वजूद को सलाम करती हैं। क्योंकि वो कामकाजी होने के कारण अनमोल लम्हे अपने परिवार के साथ बिता नहीं पाती है। कामकाजी महिलाऐं परिश्रम करके धन एकत्रित करती है, तो वहीं गृहिणी सूझबूझ से धन खर्च करके पैसे बचाती है। अतः गृहिणी गृहकार्य में अपना हुनर दिखाकर परचम फैलाती है। गृहिणी भी सम्माननीय होती है। कभी-कभी नजरिए में भेदभाव और छोटी सोच के कारण अपने वजूद में कम आंकी जाती है। महिला चाहे गृहिणी हो या कामकाजी दोनों का अपना महत्व है। जो महिलाऐ गृहिणी कहलाने से कतराती हैं, उन्हें समझना होगा गृहिणी भी सम्माननीय है, जो सारे घरवालों को स्नेह की डोर से बांधकर रखती हैं।

❒ **किरण कलंत्री,** रेनुकूट (उ.प्र.)

भारतीय नववर्ष की शुरुआत गुड़ी पड़वा से होती है। यह गणना पूर्ण वैज्ञानिक है। इस बार नव विक्रम संवत 2080 प्रारंभ होने जा रहा है। जिसकी शुरुआत गुड़ी पड़वा 22 मार्च 2023 को होगी।

स्वागतम् नवविक्रम संवत् 2080

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को ही गुड़ी पड़वा कहते हैं। इस दिन से हिंदू नववर्ष का आरंभ होता है। इस बार यह पर्व 22 मार्च 2023 को है। गुड़ी का अर्थ है विजय पताका। कहा जाता है कि इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसी दिन से नया संवत्सर भी शुरू होता है। अतः इस तिथि को 'नवसंवत्सर' भी कहते हैं। इसी दिन से चैत्र नवरात्रि का आरंभ भी होता है। चैत्र ही एक ऐसा महीना है, जिसमें वृक्ष तथा लताएं फलते-फूलते हैं। शुक्ल प्रतिपदा का दिन चंद्रमा की कला का प्रथम दिवस माना जाता है। जीवन की मुख्य आधार वनस्पतियों को सोमरस चंद्रमा ही प्रदान करता है। अतः इसे औषधियों व वनस्पतियों का राजा भी कहा गया है और इसीलिए इस दिन को वर्षारंभ माना जाता है।

ऐसे हुई थी इसकी शुरुआत

विक्रम संवत की शुरुआत 57 ईसवी पूर्व में हुई थी। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा शकों पर विजय प्राप्त करने की स्मृति में इस दिन आनंदोत्सव मनाया जाता था। सम्राट विक्रमादित्य ने इस संवत्सर की शुरुवात की थी, इसीलिए उनके नाम से ही इस संवत का नामकरण हुआ है। इस नववर्ष के स्वागत उत्सव को भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है-जैसे कि महाराष्ट्र में 'गुड़ी पाड़वा', जम्मू-कश्मीर में 'नवरेह', सिंधियों में 'चेटीचंद', केरल में 'विशु', असम में 'रोंगली बिहू', आंध्र, तेलंगाना तथा कर्नाटक में 'उगादी' और मणिपुर में 'साजिबू नोंग्मा पन्बा चैराओबा'। वर्तमान में उत्तर भारत में भी गुड़ी पड़वा पर्व मनाया जा रहा है।

करें उत्साह के साथ स्वागत

गुड़ी पड़वा को हिंदू नववर्ष की शुरुआत माना जाता है, यही कारण है कि हिंदू धर्म के सभी लोग इसे अलग-अलग तरह से पर्व के रूप में मनाते हैं। सामान्य तौर पर इस दिन हिंदू परिवारों में गुड़ी का पूजन कर इसे घर के द्वार पर लगाया जाता है और घर के दरवाजों पर आम के पत्तों से बना बंदनवार सजाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह बंदनवार घर में सुख-समृद्धि और खुशियां लाता है। गुड़ी पड़वा के दिन खास तौर से हिंदू परिवारों में पूरनपोली नामक मीठा व्यंजन बनाने की परंपरा है, जिसे घी और शक्कर के साथ खाया जाता है। मराठी परिवारों में इस दिन खास तौर से श्रीखंड बनाया जाता है और अन्य व्यंजनों व पूरी के साथ परोसा जाता है। आंध्र में इस दिन प्रत्येक घर में पच्चड़ी प्रसाद बनाकर बांटा जाता है। गुड़ी पड़वा के दिन नीम की पत्तियां खाने का भी विधान है। इस दिन सुबह जल्दी उठकर नीम की कोपलें खाकर गुड़ खाया जाता है। इसे कड़वाहट को मिठास में बदलने का प्रतीक माना जाता है।

यह भी है इसका महत्व

हिंदू पंचांङ्ग का आरंभ भी गुड़ी पड़वा से ही होता है। कहा जाता है कि महान गणितज्ञ-भास्कराचार्य द्वारा इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, मास और वर्ष की गणना कर पंचांङ्ग की रचना की गई थी। गुड़ी पड़वा शब्द में गुड़ी का अर्थ होता है विजय पताका और पड़वा प्रतिपदा को कहा जाता है। गुड़ी पड़वा को लेकर यह मान्यता है, कि इस दिन भगवान श्रीराम ने दक्षिण के लोगों को बाली के अत्याचार और शासन से मुक्त किया था, जिसकी खुशी के रूप में हर घर में गुड़ी अर्थात विजय पताका फहराई गई। आज भी यह परंपरा महाराष्ट्र और कुछ अन्य स्थानों पर प्रचलित है, जहां हर घर में गुड़ी पड़वा के दिन गुड़ी फहराई जाती है।

राह जिंदगी की...

प्रो. कल्पना गगडानी मुंबई

टर्निंग पाइंट

जिंदगी की गाड़ी उम्र और अनुभव के साथ कभी तेज तो कभी धीमी रफ्तार से दौड़ती रहती है। इस राह की विशेषता होती है कि ये सीधा सपाट नहीं होता। इसमें अनेको मोड टर्निंग पाइंट आते हैं, कहीं रास्ता कंकडीला होता है, तो कहीं पथरीला। हम सब जो प्रायः घूमते-फिरते हैं, वे भली-भांति जानते हैं कि सीधे रास्ते पर तो नो सीखिया ड्राइवर भी तेज और आसानी से गाड़ी चला लेता है, किंतु घुमावदार रास्तों पर गाड़ी चलाने के लिये अनुभवी, जानकार समझदार गाड़ी चालक की जरूरत होती है।

जीवन की राह भी सरल सपाट नहीं बहुत ही घुमावदार होती है। इस राह के हर मोड की यदि पहले से जानकारी हो, रास्ता कितना पथरीला है। यह अहसास हो, मोड कब, कहां, कैसा होगा इसका आभास हो। दृष्टि पैनी और दिमाग दुरुस्त हो तो न केवल यात्रा का आनंद बढ़ जाता है, अपितु किसी भी प्रकार की घटना दुर्घटना का भय नहीं होता।

आज के युग में आपके जीवन में पहला बड़ा मोड आता है, तब जब आप उच्च शिक्षा के लिये बाहर जाते हैं। घर परिवार से दूर उस उन्मुक्त वातावरण में आवश्यक है कि आप जवानी के जोश का आनंद तो ले परंतु जोश में होश न खो बैठें।

दूसरा टर्निंग पाइंट आज प्रायः वह है, जब आप पढ़ लिख कर कर्म क्षेत्र में उतरते हैं। बड़ी उम्मीदों के साथ, बड़ी चाहतों के साथ। गाड़ी का स्टेयरिंग आपके हाथ में होता है, परंतु रास्ता नया उबड़-खाबड़ अनजान भी हो सकता है। उम्मीदें टूट सकती हैं, चाहतें बिखर सकती हैं। रास्ता शायद बदलना भी पड़े, तो बदल दीजिये पर आप ना उम्मीद मत होइये, निरंतर कोशिश करते रहिये, कोई ना कोई रास्ता अवश्य मंजिल पर पहुंचायेगा, बस हिम्मत मत हारिये।

जिंदगी का अगला टर्निंग पाइंट बड़ा गंभीर है। यहां रास्ता ही नया नहीं, हमसफर भी नया है, हवा बदली हुई है, राह का कुछ पता नहीं, कदम-कदम पर मोड हैं, संभलते-संभालते रहे तो जोड़ हैं, नहीं तो बस तोड़ हैं। जी हां ये रास्ता 'विवाह का है, देश से परदेश का है, जानते हुए भी अनजाना है। चालक की जवाबदारी बहुत अधिक बढ़ जाती है, ये सीधी सपाट सड़क नहीं कदम-कदम पर नित नये स्पीड ब्रेकर हैं, बुद्धिमता से उन पर जिंदगी की गाड़ी चलानी होगी, धैर्य के साथ हर सिग्नल पर नजर रखनी होगी। कब रुकना है, कब आगे बढ़ना है, कोई ओवर टेक गलत तो नहीं हो रहा? गाड़ी की रफ्तार नियम के अनुकूल है या नहीं? इसका सदैव ध्यान रखना होगा, वरना चालान कटने में देर नहीं लगेगी और चालान का भुगतान दिल को बहुत भारी लगता है। इस राह पर चालक की जबाबदारी बहुत बढ़ आती है। गृहस्थी की गाड़ी को जिस पेट्रोल, हवा, पानी, एयरप्यूरिफिकेशन, चारों पहियों में बराबर हवा, टायरट्यूब की सलामती का ध्यान ड्राइवर को यानि कि आपको रखना ही होगा वर्ना कब टायर पंचर हो जाये, कब ट्यूब फट जाये कोई नहीं जानता। ब्रेक पर पैर रखें और हर आहट को महसूस करें तब ही ये लंबा सफर आसान और मजेदार लगेगा, नहीं तो नजर हटी और दुर्घटना घटी।

अगला टर्निंग पाइंट है, वैवाहिक जीवन में बच्चे का आगमन। खुशियां बहुत सी जबावदारियां लेकर आती हैं। प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। हर रिश्ते की माँग अलग-अलग होती है। राह की थकान उम्र के रूप में दिखाई देती पड़ती है। कभी रफ्तार धीमी करनी पड़ती है, तो कभी राह बदलनी भी पड़ती है। तब हर बदलाव, हर नये रास्ते पर चलने के लिये दिलो दिमाग को तैयार रखिये।

बस जिंदगी के टर्निंग पाइंट पर सूझबूझ से गाडी चलायें, मंजिल अपने आप हांसिल होगी।

व्यंग्य

"हो ली"

होली के दिन
हम अपने मित्र के घर बैठे थे
उनकी गोद में
उनके छोटे बेटे लेटे थे
हमारी चर्चायें चल रही थीं
और
अंदर किचन में
मित्र की पत्नी पकोड़े तल रही थीं
कि
सड़क से निकली
हुरियारों की टोली
किसी ने पी रख्खी थी हाला
किसी ने खा रख्खी थी गोली
सब अपनी मस्ती में चक थे
नीले-पीले-हरे-सुरख थे,

हमें देखकर....
एक नौजवान चिल्लाया
होली है, भाई होली
मित्र ने उसके स्वर में स्वर मिलाया-
हाँ-हाँ भई होली है, होली!
अब,
मित्र की यह आवाज़
किचन में काम कर रहीं
उनकी श्रीमती जी तक पहुँची
तो बेचारी
मन में कुछ और ही सोची
जरूर, मुन्ना ने कोई गड़बड़ की है
तभी
श्रीमानजी ने आवाज़ दी है
सो,
दनदनाती आईं
और बड़बड़ाती बोली-
अजीब मुसीबत है-मुन्ने के कारण
अभी हाथ धोये हैं
इसने फिर हो ली-

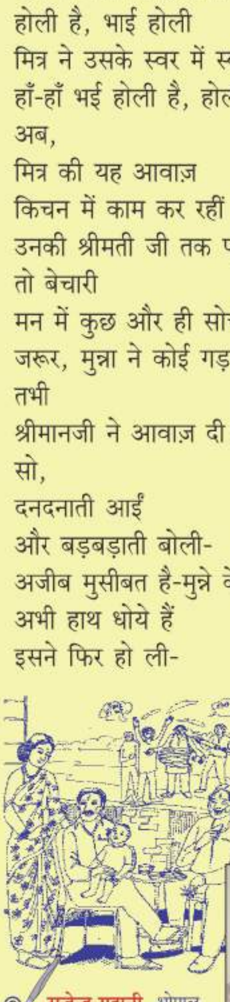

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

मधुमेह अर्थात् डायबिटीज वह बीमारी है, जो जीवन का सुख चैन छीन लेती है। कारण यह है कि यह एक ऐसी बीमारी है, जो अपने साथ हार्ट अटैक, किडनी, फेफड़े और लीवर के रोग जैसी गंभीर बीमारियाँ तक लेकर आती है। यही कारण है कि इसे स्वस्थ जीवन का सबसे बड़ा शत्रु माना जाता है। आईये देखें कैसे करें मधुमेह से अपना बचाव?

स्वास्थ जीवन का सबसे बड़ा शत्रु

मधुमेह

कैलाशचंद्र लड्ढा
जोधपुर

इंसुलिन, एक हार्मोन है जो अग्न्याशय द्वारा बनाया जाता है, भोजन से ग्लूकोज को हमारी कोशिकाओं में ऊर्जा के लिए उपयोग करने में मदद करता है। कभी-कभी हमारा शरीर पर्याप्त इंसुलिन नहीं बनाता है या अच्छी तरह से इंसुलिन का उपयोग नहीं करता। तब ग्लूकोज हमारे रक्त में रहता है और हमारी कोशिकाओं तक नहीं पहुंचता है। समय के साथ, हमारे रक्त में बहुत अधिक ग्लूकोज इकत्रित होने लगता है, इसे ही मधुमेह कहा जाता है। डायबिटीज या शुगर एक गंभीर समस्या है। पिछले कुछ दशकों में डायबिटीज के मरीजों की संख्या काफी बढ़ गई है। डायबिटीज की स्थिति में मरीज के खून में शुगर घुलने लगता है, जिसके कारण कई तरह की परेशानियां शुरू हो जाती है। ब्लड में शुगर की मात्रा बढ़ जाने पर हार्ट अटैक, किडनी फेल्योर, फेफड़ों और लीवर की कई बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। डायबिटीज शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है इसलिए इससे बचाव बहुत जरूरी है। हालाँकि मधुमेह का कोई इलाज नहीं है, फिर भी मधुमेह के प्रबंधन और स्वस्थ रहने के लिए तो कदम उठा सकते हैं।

ये हैं इसके प्रारंभिक लक्षण

■ **ज़ख़्मों का जल्दी न भरना -** डायबिटिज़ के चलते एक समय के बाद रक्त का संचार (ब्लड सर्कुलेशन) भी प्रभावित होता है, जिसकी वजह से शरीर का घाव जल्दी नहीं भर पाता. इसलिए छोटी से छोटी चोट, घाव, छालों को भरने में समय लगता है। यह इस बात की चेतावनी है कि अब आपको अपने डायबिटीज़ को कंट्रोल करना चाहिए।

■ **नज़रें धुंधली होना -** मधुमेह से ग्रसित लोगों में आजकल डायबिटिक रेटिनोपैथी की शिकायत ज़्यादा देखी जा रही है, जिसमें नज़रें धुंधली होने लगती है और हम इसे अनदेखा करते हैं। रक्त संचार (ब्लड सर्कुलेशन) की समस्या डायबिटिक लोगों में काफ़ी गंभीर हो सकती है।

■ **पैरों में झुनझुनी महसूस करना -** उँगलियों और टखनों में झुनझुनी होना, इस बीमारी के शुरूआती लक्षणों में से एक है। अगर आपको मधुमेह है और आप झुनझुनी के बाद सुन्नपन और जलन महसूस करते हैं, तो फ़ौरन स्क्रीनिंग टेस्ट करवाएं।

■ **बार- बार और तेज़ भूख लगना -** इंसुलिन की कमी की वजह से शरीर की कोशिकाएं ग्लूकोज को सोख नहीं पाती और शरीर में ऊर्जा की कमी होने लगती है जिस कारण मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति को सामान्य लोगों की अपेक्षा अधिक भूख लगती है।

■ **अत्यधिक थकान तथा कमजोरी का होना -** इंसुलिन मानव शरीर की शर्करा को ऊर्जा में बदलने का कार्य करता है, लेकिन जैसे ही इन्सुलिन का निर्माण होना कम हो जाता है या बंद हो जाता है तो मानव शरीर में थकान या कमजोरी होने लगती है। अतः अत्यधिक थकान या कमजोरी होना भी शुगर की समस्या के शुरूआती लक्षणों में से हैं।

बचाव के लिये ये बरतें सावधानी

हमेशा अपने वज़न का ध्यान रखें। मोटापा अपने साथ कई बीमारियों को लेकर आता है और डायबिटीज़ भी उन्हीं में से एक है। मधुमेह होने के पीछे तनाव भी ज़िम्मेदार होता है। इसलिए, यह ज़रूरी है कि अपने मन को शांत रखें और उसके लिए आप योगासन व ध्यान यानी मेडिटेशन का सहारा लें। पर्याप्त मात्रा में नींद नहीं लेने से या नींद पूरी नहीं होने से भी कई बीमारियां होती हैं। डायबिटीज़ भी उन्हीं में से एक है। इसलिए समय पर सोएं और समय पर उठें। धूम्रपान से न सिर्फ लंग्स पर असर होता है, बल्कि अगर कोई मधुमेह रोगी धूम्रपान करता है, तो उसे हृदय संबंधी रोग होने का खतरा भी बढ़ जाता है। शारीरिक क्रिया स्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी है, इसलिए, जितना हो सके व्यायाम करें। अगर व्यायाम करने का मन न भी करें तो सुबह-शाम टहलने जरूर जाएं, योगासन करें या सीढ़ियां चढ़ें। शुगर के मरीज़ों को अपने खान-पान का ख़ास ध्यान रखना चाहिए। शुगर में परहेज करने के लिए जितना हो सके बाहरी और तैलीय खाद्य पदार्थों से दूर रहें, क्योंकि इससे वज़न बढ़ने का ख़तरा रहता है और फिर मधुमेह। सही आहार अपनाएं, प्रोटीन व विटामिन युक्त खाद्य पदार्थों को अपने डाइट में शामिल करें। आपने एक कहावत तो सुनीं ही होगी कि 'जल ही जीवन है'। पानी से कई बीमारियां ठीक होती हैं। मधुमेह के रोगियों के लिए भी पानी बहुत आवश्यक है। इसलिए, जितना हो सके पानी पीएं। धूम्रपान और शराब का सेवन कम कर दें या संभव हो तो बिलकुल छोड़ दें।

क्या खाऐं क्या न खाऐं

मधुमेह रोगियों को अपने भोजन में करेला, मेथी, सहजन, पालक, तुरई, शलगम, बैंगन, परवल, लौकी, मूली, फूलगोभी, ब्रौकोली, टमाटर, बंद गोभी और पत्तेदार सब्जियों को शामिल करना चाहिए। फलों में जामुन, नींबू, आंवला, टमाटर, पपीता, खरबूजा, कच्चा अमरूद, संतरा, मौसमी, जायफल, नाशपाती को शामिल करें। आम, केला, सेब, खजूर तथा अंगूर नहीं खाना चाहिए क्योंकि इनमें शुगर ज्यादा होता है। मेथी दाना रात को भिगो दें और सुबह प्रतिदिन खाली पेट उसे खाना चाहिए। खाने में बादाम, लहसुन, प्याज, अंकुरित दालें, अंकुरित छिलके वाला चना, सत्तू और बाजरा आदि शामिल करें तथा आलू, चावल और मक्खन का बहुत कम उपयोग करें।

आयुर्वेद के अनुसार सारी जीवन शक्ति पंचतत्वों में निहित है। इनके असंतुलन से ही रोग उत्पन्न होते हैं। इन्हीं पंचतत्वों का प्राकृतिक रूप से संतुलन बनाती है, योग की मुकुल मुद्रा।

शिवनारायण मूंधड़ा
'वास्तु मित्र'
94252-02721

पंच तत्वों का संतुलन बनाती
मुकुल मुद्रा

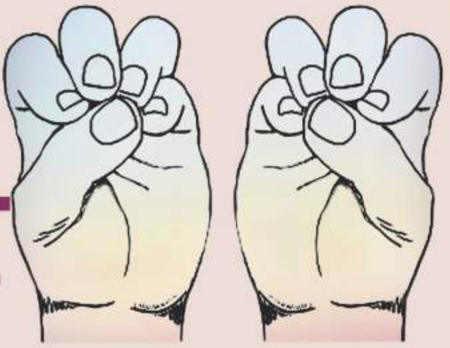

कैसे करें

अपने हाथों की चारों उंगलियों एवं अंगूठे के अग्रभाग को आपस में मिला लें। जैसे पक्षी की चोंच। शरीर में जहां कहीं भी आप कमजोरी महसूस करें, उस स्थान पर इस चोंच को रख दें। दिन में पांच बार 5 मिनट के लिये करें। इस मुद्रा से शरीर के उस भाग को उर्जा मिलती है, जहां हाथ की चोंच रखी हो। पांचों तत्वों (अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी) को मिलाने से यह चोंच लेजर किरणों की तरह काम करती है तथा उस अंग को स्वस्थ बनाती है। इस प्रकार यह मुद्रा लेजर थैरेपी का काम करती है, शरीर के प्रत्येक अंग पर इसी एक मुद्रा से शरीर के सभी रोगों का निदान किया जा सकता है। इससे मस्तिष्क में 'पिट्यूटरी' बिन्दु दबते हैं। उससे जो रस निकलता है, वह शक्ति का विकास करता है। सभी अंगों का आपस में समन्वय बढ़ता है।

इस तरह करें रोग दूर

यदि फेफड़ों की समस्या हो तो अपने कन्धे से दो से तीन इंच नीचे दोनों हाथों की यह मुद्रा बनाकर फेफड़ों पर रखें। दायां हाथ फेफड़े पर बायां हाथ बायं फेफड़े पर पेट में समस्या हो तो छाती के नीचे अमाशय पर दोनों हाथ रखें। यकृत अथवा पित्त थैली की समस्या हो तो बायां हाथ यकृत पर छाती के नीचे रखें और दाएं हाथ की चोंच से दायीं ओर पसली के नीचे जहां पित्त थैली होती है, वहां धीरे धीरे सहलाते जाए। इसी तरह आमाशय की और तिल्ली में कोई समस्या है, तो दायें हाथ की चोंच को छाती के नीचे, पसली के नीचे दायीं ओर रखें और बायें हाथ से पसली के नीचे बायीं ओर धीरे-धीरे बाएं हाथ की चोंच से 21 बार सहलाएं। यदि गुर्दे की समस्या है, तो दोनों हाथों को कमर के पीछे ले जाकर कमर से दो इंच नीचे दोनों हाथों की चोंच को रखें। यदि मूत्राशय या मूत्र रोग हो तो पेट के सबसे निचले भाग पर दाएं हाथ की चोंच दायीं ओर तथा बाएं हाथ की चोंच बायीं ओर रखें। यदि आंतो की समस्या हो तो दाएं हाथ की चोंच को नाभि पर रखें। फिर इसे गोलाकार में, दायीं ओर से बायीं ओर ले जाते हुए घुमाते जाएं। हर बार घेरे को थोड़ा बड़ा करते जायें। इन सभी क्रियाओं को करते समय श्वासों को गहरा लम्बा करें। इसी प्रकार से शरीर के दूसरे अंगों पर इस क्रिया को कर सकते हैं।

ये मिलते हैं लाभ

यह मुद्रा प्रसन्नता और स्वास्थ्यवर्द्धक है तन, मन और बुद्धि में समन्वय बनता है- तीनों मिलकर काम करते हैं। मन व तन की शक्ति बढ़ती है- संकल्प शक्ति बढ़ती है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इस मुद्रा से बहुत लाभ होता है। दुर्घटनाओं से बचाव होता है। दुर्घटनाएं प्रायः तभी होती हैं जब मन, तन और बुद्धि अलग-अलग दिशाओं में चलते हैं। पांचों तत्वों के समन्वय से ऐसी सम्भावना कम होती है। इस मुद्रा का संबंध समान प्राण से है, जो मणिपुर चक्र के साथ जुड़े सभी अंग स्वस्थ होते हैं और पाचन शक्ति बढ़ती है। यह आज्ञा चक्र को जागृत करती है। इस मुद्रा से मस्तिष्क में पिट्युटरी (PITUTUARY) ग्रन्थि के केन्द्र दबने से हारमोन नियंत्रित होते हैं। इस मुद्रा से शुक्र ग्रह (VENUS) प्रभावित होता है- ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। राजनीतिज्ञों के लिए बहुत लाभकारी मुद्रा है यह चाणक्य नीति सिखाती है। डिप्लोमैटों को इस मुद्रा का रोज अभ्यास करना चाहिए। इस मुद्रा से साधक में अतुल पराक्रम और शक्ति का उदय होता है।

सावधानी - इसे अधिक देर तक न करें।

खरी-खरी

हुई कालिमा यूँ
घनेरी यहाँ पर

बनी विद्वता धन की'
चेरी यहाँ पर

नहीं अश्वशाला में
दाने चने के

गधे खा रहे हैं
पँजीरी यहाँ पर

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

डॉ. मनोहरदास सोमानी
इंदौर

महिलाओं के उत्थान पर केन्द्रित है नया केन्द्रीय बजट

मोदी सरकार के द्वितीय कार्यकाल का अंतिम बजट वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में 01फरवरी 2023 को प्रस्तुत किया। वित्त मंत्री ने बजट भाषण के दौरान कहा कि आज भारत की उपलब्धियों एवं कामयाबियों की पूरी दुनिया में सराहना हो रही है। एक ओर दुनिया के अनेकों देशों में मंदी का असर है वहीं भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सफलता का संकेत है। वित्त मंत्री ने बजट पेश करते हुए बताया कि विगत वर्षों में अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की जो आधारशिला रखी गई थी उस पर एक मजबूत इमारत खड़ी करने का समय आ गया है। देश में समावेशी विकास एवं आधारभूत अधोसंरचना के साथ ही बजट में कृषि विकास, महिलाओं के सुदृढ़ीकरण, युवाओं को रोजगार के अवसर देने के साथ ही अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति-जनजाति के विकास के लिए अनेकों प्रावधान किए गए हैं। बजट प्रस्तुत करते हुए वित्त मंत्री ने बताया कि विगत वर्षों में भारत की प्रति व्यक्ति आय दोगुना से अधिक बढ़ी है, जो वर्तमान में 1.97 लाख हो गई है व भारत की अर्थव्यवस्था का आकार विश्व की 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रुप मे ऊभर रहा है, जो निश्चित ही भारत की अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता के संकेत हैं।

गत दिनों देश का नया बजट वित्त मंत्री ने संसद में प्रस्तुत किया। वास्तव में देखा जाऐ तो यह देश के विकास का बजट ही है, क्योंकि इसमें विशेष रुप से महिलाओं सहित पिछड़ों के आर्थिक उत्थान को लक्ष्य बनाया गया है।

सामाजिक उत्थान के लिए विशेष योजना

महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के लिए आजादी का अमृत महोत्सव के स्मरण स्वरुप महिला सम्मान बचत पत्र नाम से एक नवीन लघु बचत योजना को प्रारंभ किया जाएगा, जिसमें महिलाएं व बालिकाओं के नाम पर 2 लाख तक जमा किया जा सकेगा। इस पर 7.5 प्रतिशत की दर से ब्याज मिलेगा व जमा अवधि के मध्य में जरुरत होने पर आंशिक रुप से राशि निकालने का प्रावधान भी इसमें किया जाएगा। निश्चित ही यह योजना महिलाओं के आर्थिक सुदृढीकरण को बढावा देकर देश में पूंजी निर्माण को भी गति देगी। वित्त मंत्री ने बताया कि विगत वर्षों में ग्रामीण महिलाओं को 81 लाख स्वसहायता समूह से जोड़ा जाकर इन महिलाओं की आय अर्जन की क्षमता में इजाफा हुआ है, जिसे आगे भी निरन्तर रखा जाएगा। इसी प्रकार दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से ग्रामीण अंचल में निवासरत महिलाओं की गरीबी को कम करने में असाधारण कामयाबी मिली है, जिसे भविष्य में भी जारी रखा जाकर महिलाओं को स्वावलंबी बनाने का लक्ष्य है। महिला सुदृढीकरण की इन योजनाओं से महिलाओं के लिए व्यावसायिक अवसरों में वृद्धि होगी एवं महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों का सृजन होगा, जिससे महिला स्वावलंबन को भी गति मिलेगी।

IS:1786

CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

।। प्रथम पुण्य स्मरण ।।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि॥

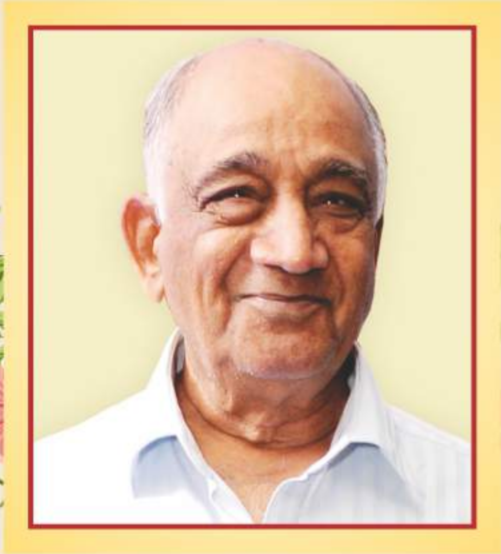

स्व. श्री पी.डी. माहेश्वरी

एक ऐसी प्रेरणादायक जीवन यात्रा, जो अनन्य
जीवन यात्राओं को प्रेरित करती रहेगी।
सामाजिक, आध्यात्मिक, पारिवारिक एवं बौद्धिक मूल्यों तथा
उत्तम मर्यादाओं से परिपूर्ण उनकी जीवन यात्रा को नमन करते हुए ...

रमा देवी माहेश्वरी (धर्मपत्नी)
सुधीर-प्रीति, राजू-विनीता, विजय-राजश्री (पुत्र-पुत्रवधु)
प्रवेश-वसुधा, श्रीधर-अंजलि (पौत्र-पौत्रवधू)
रिषिका एवं समस्त माहेश्वरी परिवार

Orient Electricals & Engineers (I) Pvt. Ltd.
Anna Nagar I Parrys
Mob.: 9444067989, 9790730900

खुश रहें - खुश रखें

जब लोग तारीफ करें तो उसमें झूठ खोजिए, अगर आलोचना करें तो उसमें सच की तलाश कीजिए

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

कहानी - रामायण में युद्ध चल रहा था। रावण और लक्ष्मण आमने-सामने थे। रावण ने एक ऐसी शक्ति चलाई कि लक्ष्मण कुछ देर के लिए बेहोश हो गए। उस समय हनुमानजी ने देखा कि रावण लक्ष्मण को उठाने का प्रयास कर रहा है तो वे तुरंत वहां पहुंच गए। अब हनुमानजी और रावण आमने-सामने आ गए थे। हनुमानजी ने रावण को एक मुक्का मारा तो वह बेहोश होकर गिर गया।

कुछ देर बाद जब रावण को होश आया तो उसने खड़े होकर हनुमानजी की खूब तारीफ की। रावण जैसा विश्व विजेता, जिसने कभी किसी की तारीफ नहीं की, वह आज हनुमानजी की तारीफ कर रहा था। तब हनुमान ने कहा, 'रावण चुप रहो, मैं तुम्हारे मुख से अपनी प्रशंसा सुनना नहीं चाहता। मुझे तो धिक्कार है कि मेरे मुक्का मारने के बाद भी तुम जीवित बच गए हो। ये मेरी ही कमजोरी है।'

ये बात सुनकर रावण समझ गया कि ये व्यक्ति अपनी प्रशंसा के झांसे में नहीं आएगा। हनुमानजी भी जानते थे कि रावण जैसे लोग तारीफ करके पहले बरगलाते हैं, फिर पराजित कर देते हैं।

सीख - जब भी कोई आपकी तारीफ करे तो देखना कि ये चापलूसी तो नहीं है, हमें लालच तो नहीं दिया जा रहा है, इसमें झूठ तो नहीं है। तारीफ में से केवल इतना हिस्सा रख लो, जो हमें प्रेरणा देता हो। जब भी कोई निंदा करे तो उसमें सच खोजना चाहिए, क्योंकि निंदा में हमारे लिए कोई बहुत बड़ा संकेत हो सकता है, जो खुद को सुधारने में काम आ सकता है।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -
- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon
जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - **"ऐसा क्यों?"** लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

KHANA KHAZANA

रेनबो खमण

सामग्री:- चावल एक कटोरी, उड़द की दाल एक कटोरी, चना दाल एक कटोरी, धुली मूंग की दाल एक कटोरी, हरी चटनी एक कटोरी, सॉस एक कटोरी, राई एक चम्मच, हल्दी आधा चम्मच, तेल 100 ग्राम, हरा धनिया, हरी मिर्च कटी हुई दो पिस, कसा हुआ नारियल थोड़ा सा, नमक स्वाद अनुसार, खाने का सोडा एक छोटा चम्मच।

विधिः- दाल चावल रात को भींगो दे। प्रातः अलग-अलग पिस ले, चावल तथा उड़द दाल का एक अलग मिश्रण बनाएं। चना दाल और मूंग दाल का अलग मिश्रण बनाए। पिसने के बाद दोनों को घंटाघर भिगोए। फिर दोनों मिश्रण में आधा-आधा चम्मच सोडा, दो चम्मच तेल और नमक डाल दे, दाल वाले मिश्रण में थोड़ी सी हल्दी भी डाल दे।

एक बर्तन में तेल लगा कर पहले दाल के मिश्रण की परत बिछाए फिर उसे 7-8 मिनिट स्टीम होने दे। फिर बाहर निकाल कर उस पर सॉस लगाए, फिर उसके ऊपर चावल की पर बिछाएं और उसे भी 7-8 मिनट स्टीम होने दें। फिर बाहर निकल कर उस पर हरी चटनी की परत लगाए और ऊपर से दाल वाले मिश्रण की परत लगाकर और 7-8 मिनट स्टीम होने दे। बाहर निकाल कर थोड़ा ठंडा होने पर उस पर मनपसंद तड़का लगाएं और तिकोन या चौकोन आकार में काटकर खिलाएं।

गुजिया

सामग्री :- मेदा 1 किलो, मोयन के लिए घी एक पाव, हल्का भुना हुआ मावा आधा किलो, बूरा आधा किलो, कटे हुए मेवे, इलायची, नारियल का चूरा, तलने के लिए रिफाइंड तेल या घी और थोड़े से फूड कलर।

विधिः- मेदे में मोयन डालकर रोटी के जैसा आटा गूंथे। अब इस आटे के 3 भाग कर के एक में लाल कलर, एक में हरा कलर मिलाएं और अच्छे से आटा गूंथ लें। एक बर्तन में मावा, बूरा, कटे मेवे, इलायची पाउडर, नारियल का बूरा अच्छी तरह मिलाकर रख ले। मेदे की तीनों रंग की छोटी-छोटी लोई लेकर उसकी एक लोई बनाकर पूड़ी की तरह बेल लें। गुजिया के सांचे पर इसे रखकर, एक तरफ, एक चम्मच मिश्रण भरकर बंद करके अच्छी तरह से पानी से चिपका कर दबा दें। फिर गर्म तेल या घी में धीमी आंच पर तले। यह गुजिया होली पर खुद भी खाएं और मेहमानों को भी खिलाएं।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

घर जेडों सुख कठैई नहीं

खम्मा घणी सा हुकुम आज आपा बात कर रियां हाँ... घर जेडों सुख कठैई नहीं... हुकुम मनुष्य चाहे संसार रे किन्ही भी कोने में घूम ले, मौज-मस्ती कर ले, स्वर्ग जेड़ो आनन्द भोग ले पर सुख उने अपणे घर में आने ही मिळे। घर सूं दूर यदि चलो भी जावे तो थोड़े दिनों रे बाद ही अपणे घर री याद सतावण लाग जावें। उण समय मन करें कि उड़ने अपणे आशियाने (घर) में वापिस पहुँच जाऊं।

हुकुम सृष्टि रो रचयिता परमात्मा भी घर ने एक धुरी बणा दियों है। इने इर्द-गिर्द आपा गोल-गोल घूमता रेहवा। घर सूं निकळें तो दफ्तर, स्कूल वगैरह जावें पर लौटने पाछो आ जावें। शापिंग वास्तें बाजार जावें, शादी-ब्याह में सम्मिलित हुवें, पार्टी करें घूमने-फिरने देश-विदेश कठे भी जावें फिर लौटने घर ही आवें। कोई मारवाड़ी ठीक कयों है कि कठे भी जाओ पर ठौर घर ही है।

घर रें सदस्यों में कितों ही मनमुटाव क्यों न हो, खूब लड़ाई-झगड़े हुवता हों, जूतम पैजार भी हुवती हो, चाहे वे एक-दूसरे रा चेहरा तक देखना पसंद नहीं करें फिर भी घर रो मोह ऐड़ो है जो उन्हें बाँध ने राखे... ज्यों ही शाम ढलें और रात हुवें, मन घरे भागण वास्तें बेचैन हुवण लाग जावें।

अपणों घर चाहे आलीशान महल हो, फ्लैट हो, झोंपड़ी हो या टूटो-फूटो हो यानि कि केड़ो भी हो घर तो घर ही हुवैं। घर हर मनुष्य रे वास्तें एक विश्राम ठिकानों ही हुवें हुकुम जठे सारे दिन री थकान गायब हूँ जावें।

यदि घर बनाणे रो चलन नहीं हुवतों तो शायद सगळा खानाबदोश लोगों री तरह एक जगह सूं दूसरी जगह भटकता रेवता। जठे रात हुवती वठे ही जमीन पर सो जावता और दिन हुवतें ही घुमक्कडों रे ज्यों चाल पड़ता। जणे आपाणे कने सगळी सुख-सुविधाओं रा साधन भी नहीं था जेड़ा आज आपाणे अपणे घरों में आपा जोड़ ने राखा। इण युग में आपा उण जीवन री कल्पना भी नहीं कर सकां जठे न सख-सुविधा रा साधन था, न घर जेडी सुरक्षा थी और न ही इता अच्छा यातायात रा भी साधन था।

ईश्वर ने आपाणे ऊपर बहुत ही उपकार कियों है। श्री हरी ज्यों दिन रे बाद रात आराम करण री बणाई है। घर बणाने री सोच डालने मनुष्य ने आराम करण रो एक ठिकाणों बणायो है जठे मनुष्य बिना रोकटोक खुद री मनमर्जी सूं रह सके और आपरी मेहनत री कमाई सूं सुविधाओं रो भोग कर सकें।

अपणे घर आणे रे बाद जो सुख मनुष्य पावें वे बल्ख और बुखारे समृद्ध स्थानों में भी नहीं मिळे। हुकुम इन्ही बात ने छज्जू भक्त इण शब्दों में कहियों है-

जो सुख छज्जू दे चौबारे, न ओ बल्ख न बुखारे'

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ *ज्योत्सना कोठारी*
मेरठ

- ये ख्वाहिशों के काफीले भी कमाल होते है.
  कम्बख्त गुजरते वही से है जहा रास्ते कठिन होते..
- सच्चे किस्से मयखाने में सुने वो भी हाथ में जाम लेकर,
  झूठे किस्से अदालत में सुने वो भी हाथ में गीता-कुरान लेकर।
- समझौतो की भीड़-भाड़ में सबसे रिश्ता छुट गया,
  इतने घुटने टेके हमने आखरि घुटना टूट गया।
- ज़रा मुस्कुराना भी सिखा दे ऐ ज़िंदगी,
  रोना तो पैदा होते ही सीख लिया था।
- इन होंठो की भी न जाने क्या मजबूरी होती है
  वही बात छुपाते हैं, जो कहना जरुरी होती है ।
- ये मुश्किलें, ये कशमकश, ये जद्दोजहद, ये दुश्वारियां;
  ऐ जिंदगी तू लाख नखरे दिखा, तुझसे इश्क है तो है...!
- मुझे नहीं आती है उड़ती पतंगों सी चालाकियाँ,
  गले मिलकर जो गला काट दे वो माँझा नहीं हूँ मैं !!

कार्टून कौतुक

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए मार्च महीना मिला जुला असर वाला रहेगा। सकारात्मकता बढ़ेगी, सफलता प्रयास मांगेगी। व्यय बढ़ा हुआ रहेगा। कार्य क्षेत्र की दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा। व्यापारिक वर्ग के लिए यह महीना आर्थिक दृष्टि से अधिक सफल नहीं रहेगा। जोड़ों का दर्द एवं पाचन संस्थान संबंधी समस्याएं हो सकती है। मित्रों से सहयोग मिलेगा। नवीन समाचार की प्राप्ति होगी। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलने के योग रहेंगे।

वृषभ

वृषभ राशि के जातकों के लिए यह महीना मिले-जुले परिणाम वाला रहेगा। कार्य क्षेत्र में किए गए प्रयासों के उत्तम परिणाम मिलेंगे। व्यापारी वर्ग को महीने के अंत में अच्छा आर्थिक लाभ संभावित है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा किंतु माताजी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। प्रॉपर्टी संबंधी कोई विवाद या कोर्ट कचहरी संबंधी कार्य उत्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन

आपकी राशि वालों के लिए यह माह व्यापार व्यवसाय करने वाले जातकों के लिए उत्तम रहेगा। महीने के अंत में साझेदार लाभ पूर्ण प्रस्ताव करेंगे। खर्च बढ़ा हुआ रहेगा। स्वास्थ्य के ऊपर भी धन खर्च हो सकता है। निवेश करने वाले जातकों के लिए यह महीना अनुकूल नहीं है। पाचन से संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। परिवार में चले आ रहे पुराने विवाद के हल निकलने की संभावना है।

कर्क

कर्क राशि के जातकों को इस महीने स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा हो सकती है। विशेषकर कंधों और पैरों में दर्द जैसी समस्या उत्पन्न हो सकती है। आपको चाहिए कि डॉक्टर की सलाह लें यह आपको बड़ी समस्या में ले जा सकती है। दांपत्य जीवन में मनमुटाव हो सकता है, इसके प्रति सजग रहें। आर्थिक दृष्टि से कर्क राशि वालों के लिए यह महीना औसत रहेगा है।

सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए जो नौकरी के क्षेत्र में है, उनके लिए यह महीना सामान्य रहेगा है किंतु जो व्यापार के क्षेत्र में है उन्हें महीने के अंत में विशेष लाभ होगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना आपके पैरों में खासकर जांघ पर दर्द संभावित है। आंखों की विशेष देखभाल करने की आवश्यकता है। पारिवारिक दृष्टि से परिवार में किसी मुद्दे को लेकर खींचतान चलती रहेगी।

कन्या

नौकरी के क्षेत्र में कार्यरत जातकों के लिए यह महीना शुभ फलदायी है किंतु व्यापार-व्यवसाय वाले जातकों के लिए अनुकूल संकेत नहीं हैं। पाचन से संबंधित बीमारियां डिहाइड्रेशन इत्यादि की संभावना प्रबल बनी रहेगी। परिवार में प्रॉपर्टी संबंधी वाद-विवाद संभावित हो सकते। अज्ञात भय बना रहेगा किंतु संपत्ति मिलने की प्रबल योग बनेंगे। विरोधी परास्त होंगे। स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाएंगे।

तुला

तुला राशि के जातकों को कार्यक्षेत्र में मिले-जुले परिणाम मिलेंगे। कार्य को पूरा करने में अधिक प्रयत्न की आवश्यकता पड़ेगी। व्यापार-व्यवसाय में जो जातक है, उनका भाग्य उन्नति में सहयोग करेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से सिर दर्द, आंखों में जलन, आंखों का लाल होना, अनावश्यक तनाव जैसी समस्याएं हो सकती हैं। पारिवारिक दृष्टि से कोई अनचाहा विवाद उत्पन्न हो सकता है, इसके प्रति सजग रहें।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों को कॅरियर के मामले में मिश्रित परिणाम मिलेंगे। किसी भी कार्य को पूरा करने में अधिक समय एवं प्रयत्न लगेगा। अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। काम के दौरान आपसे गलतियां हो सकती है। खासकर नौकरी, पैसा जातकों को सचेत रहने की आवश्यकता है, व्यापार-व्यवसाय के जातकों को इस महीने में विशेष धन लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पारिवारिक दृष्टि से महीने के अंतिम 15 दिन परिवार में गलत फहमी के कारण विवाद उत्पन्न कर सकते हैं, इनके प्रति सजग रहें।

धनु

धनु राशि के जातकों के कार्य क्षेत्र की दृष्टि से यह महीना चुनौतीपूर्ण रहेगा। नौकरी पेशा जातको के लिए सहयोगी सिद्ध होगा। व्यापारी वर्ग के जातकों के प्रतियोगी भी उन्हें कड़ी टक्कर देंगे। इसके बावजूद भी अच्छा धन लाभ होगा। शेयर मार्केट में जिन्होंने धन लगाया है, उन्हें अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना अत्यंत उत्तम रहेगा। आत्मविश्वास एवं पराक्रम बढ़ा हुआ रहेगा। पारिवारिक दृष्टि से महीना अत्यंत सकारात्मक एवं अनुकूल रहेगा।

मकर

मकर राशि के जातक जो व्यापार व्यवसाय में हैं, उन्हें शुरुआत के 15 दिन कोई विशेष सफलता नहीं है। अंतिम 15 दिनों में अनुकूलता मिलेगी। लाभ एवं व्यय लगभग बराबर चलेंगे। अनावश्यक कार्यों में खर्च करना पड़ेगा। माताजी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। प्रॉपर्टी संबंधी कार्यों में ध्यान देना होगा। पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। हर्षोल्लास का वातावरण निर्मित होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

कुम्भ

कुंभ राशि के जातक जो नौकरी के क्षेत्र में उनके कार्यों की सराहना की जाएगी। आर्थिक दृष्टि से यह महीना मध्यम श्रेणी का रहेगा। खर्च की आपूर्ति हो जाया करेगी। श्वास की दृष्टि से पीठ में दर्द संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। मन में बेचैनी का भाव बना रहेगा एवं तनाव बना रहेगा। पारिवारिक रूप से यह महीना सामान्य है। नया इन्वेस्टमेंट करने से पहलें एक बार सोचें।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए यह महीना चुनौतीपूर्ण रहेगा। नौकरी में अचानक परिवर्तन या नौकरी छूटने जैसी स्थितियों का सामना भी करना पड़ सकता है। खर्च बढ़ा हुआ रहेगा। लाभ के अवसर सीमित रहेंगे। मानसिक तनाव एवं प्रतिदिन नई-नई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आत्मविश्वास की कमी दिखेगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से एलर्जी से होने वाले रोग एवं पैरों एवं जोड़ों में दर्द की समस्या रहेगी।

THE GOLDEN ADDRESS FOR INVESTMENTS

Salient Features

- State-of-the-art Infrastructure (Underground - Water, Power, ICT, etc.)
- Reliable power and water supply
- Online single window clearance (e-LMS)
- Effluent treatment plants
- Well connected by Road-Rail-Air
- Walk to work concept

- All Utilities at the doorstep.
- Fire system throughout the City
- Dedicated CETP and STP.
- Optical fibre network.

Key Highlights

- AURIC has obtained Power distribution license which will ensure reliable power at economical rates to the Industry
- AURIC facilitates business operation of more 174+ companies at present
- Investment in AURIC ₹ 7000 cr. and employment generated more than 10,000
- Industrial, Commercial, Residential land parcels & offices spaces are available

- City Wi-Fi system.
- MITL is a special planning authority.
- 42% of the water demand is met through recycling.
- EIA clearance.

Contact Us

Maharashtra Industrial Township Limited, (MITL)
(Formerly Known as Aurangabad Industrial Township Limited (AITL)
'Udyog Sarathi', Mahakali Caves Road, Andheri (East), Mumbai 400 093.
Email : md.marketing@auric.city, jtmd.marketing@auric.city
Visit us on : www.auric.city

Visit us on

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7,000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 22 Hospitals: 1 million patients treated

Over 75 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant.

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccine in Maharashtra. Over 4,000 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4,500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2023-2025
Despatch Date - 02 March, 2023

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/smtmagazine/
https://srimaheshwaritimes.com